卐 ॐ ह्रीं नमः 卐

श्री विनायक यंत्र पूजा

रचयिता :

प्रवीण चन्द जैन शास्त्री

एम० ए०

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ)

प्रकाशक :

श्रीमती सुनीता जैन

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ०प्र० 250 404

फोन : (01233) 80303

पंचम आवृत्ति	*वी० नि० सं० 2528*	*मूल्य :*
1100 प्रतियाँ	जनवरी 2002	20.00

प्राप्ति स्थान :

प्रवीण चन्द जैन शास्त्री
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
(मेरठ) उ०प्र० 250 404
फोन : कार्या० (01233) 80184, नि० 80303

सर्वाधिकार प्रकाशाधीन

प्रथम संस्करण....................................	मई 1990	1100 प्रतियाँ
द्वितीय संस्करण............................	अगस्त 1993	2200 प्रतियाँ
तृतीय संस्करण............................	जनवरी 1997	2200 प्रतियाँ
चतुर्थ संस्करण............................	जनवरी 2000	2200 प्रतियाँ
प्रस्तुत पंचम संस्करण....................	जनवरी 2002	1100 प्रतियाँ

नोट–पंचकल्याणक प्रतिष्ठा वेदी प्रतिष्ठा विधि विधानों,
महूर्तों के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें :

सम्पर्क सूत्र :

वाणी भूषण पं० प्रवीण चन्द जैन
एम० ए० शास्त्री
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ०प्र०
फोन : (01233) 80303

लेजर टाइप सैटिंग :

अल्फा कम्प्यूटर
शारदा रोड, मेरठ। फोन : 611952

मुद्रक :

सुमन प्रिन्टर्स,
शारदा रोड, मेरठ
फोन : आ० 523996, नि० 530925

विषय सूची

क्र०सं०	विवरण	पृष्ठ सं०
1.	श्री बज्रपंजर रक्षा कवच स्तोत्र	1
2.	मंगलाष्टक	2
3.	दर्शन स्तोत्र	5
4.	अभिषेक भजन-1	6
5.	अभिषेक भजन-2	8
6.	अभिषेक भजन-3	9
7.	आरती समुच्चय	10
8.	चौबिसजिन मंगल स्तोत्र	11
9.	विनयपाठ	16
10.	भजन	19
11.	पूजा प्रारम्भ	19
12.	श्री विनायक यंत्र पूजा	25
13.	श्री समुच्चय चौबीसी जिनपूजा.	35
14.	श्री आदिनाथ जिनपूजा	38
15.	श्री संभवनाथ जिनपूजा	44
16.	श्री दीपावली पूजन	50
17.	श्री नवग्रह अरिष्ट निवारक जिनपूजा	57
18.	श्री सलूना पर्व पूजा	66
19.	श्री दशलक्षण पर्व पूजा	74
20.	अर्घावली	84
21.	श्री शांतिपाठ	95
22.	स्तुति पाठ	97
23.	श्री शांतिनाथजिन चालिसा	100
24.	श्री विनायक यंत्र की आरती	104

क्र०सं०	विवरण	पृष्ठ सं०
25.	श्री णमोकार मंत्र की आरती	105
26.	श्री तीस चौबीसी जिन आरती	105
27.	श्री आदिनाथ की आरती	106
28.	श्री आदिनाथ भरत बाहुबली भगवान की आरती	108
29.	श्री बाहुबली भगवान की आरती	109
30.	श्री अजितनाथ भगवान की आरती	110
31.	श्री पद्मप्रभु भगवान की आरती	111
32.	श्री चंदाप्रभु भगवान की आरती-1	113
33.	श्री चंदाप्रभु भगवान की आरती-2	114
34.	श्री पुष्पदंत जिन आरती-1	116
35.	श्री पुष्पदंत भगवान की आरती-2	117
36.	श्री शांतिनाथ भगवान की आरती-1	118
37.	श्री शांतिनाथ भगवान की आरती-2	119
38.	श्री शांतिकुंथु अरनाथ भगवान की आरती	121
39.	श्री नेमिनाथ भगवान की आरती	122
40.	श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की आरती-1	123
41.	श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की आरती-2	124
42.	श्री महावीर भगवान की आरती-1	126
43.	श्री महावीर भगवान की आरती-2	127
44.	श्री गणधर देवों की आरती	128
45.	श्री जिनवाणी माता की आरती-1	129
46.	जिनवाणी माता की आरती-2	130
47.	श्री चक्रेश्वरी माता की आरती	131
48.	श्री पद्मावती माता की आरती	132
49.	श्री क्षेत्रपाल बाबा की आरती	133
50.	बड़े विधानें में पालने योग्य आवश्यक नियम	134
51.	बड़े विधानों में ध्यान योग्य आवश्यक बातें	135

श्री बज्रपंजर रक्षा कवच

मन्त्र स्तोत्र

परमेष्ठि नमस्कारं सारं नव पदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकरं वज्रपंजराख्यं स्मराम्यहम् ॥1॥

ॐ णमो अरहंताणं शिरस्कन्धर सँस्थितम् ।
ॐ णमो सिद्धाणं मुखे मुख पटांवरम् ॥2॥

ॐ णमो आयरियाणं अंग रक्षति साधिनाम् ।
ॐ णमो उवज्झायाणं आयुधेहस्तयोर्द्वयोः ॥3॥

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं मोचके पादयोः शुभे ।
एसो पंच णमोकारो शिला बज्रमय स्तले ॥4॥

सव्वपापपणासणो बज्रो बज्रमयोवहिः
मंगलाणं च सव्वेसिं खादिरांगार खातिकाम् ॥5॥

स्वाहान्तं च पद्मज्ञेयं पदमं हवइमंगलम्
वप्रोपरिवज्रमयं पिधानं देहरक्षणम् ॥6॥

महाप्रभाव रक्षेयं क्षुद्रोपद्रव नाशिनि
परमेष्ठि पदोद्भूता कथिता पूर्व सूरिभिः ॥7॥

यश्चैनां कुरूते रक्षां परमेष्ठि पदैः सदा
तस्य न स्याद्भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन् ॥8॥

फल–सुबह एक बार पढ़ने पर दिन भर केलिये रोग, शोक, आधि व्याधि, चिन्ता अकस्मात घटना से यह शरीर की रक्षा करता है।

मंगलाष्टकम्

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वाहूणं॥

मंगलाष्टकम्

श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्रमुकुट-प्रद्योतरत्नप्रभा,
भास्वत्पादनखेंदवः प्रवचानांभोधींदवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्॥1॥

सम्यग्दर्शन बोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्रीनगराधिनाथजिनपत्युक्तोपर्वगप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्॥2॥

नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विन्शतिः,
श्रीमंतो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तराः विंशति-
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्ठिपुरुषाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्॥3

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः,
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत्त्रिदशाधिपास्त्रिदिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्॥4॥

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पंच ये,
ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशला येऽष्टाविधाश्चारणाः।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपिबलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्॥5॥

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताँ।
शेषाणामपि चोर्जयंतशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्॥6॥

ज्योतिर्व्यंतरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जंबूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्यादिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुंडलनगे द्वीपे च नंदीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्॥7॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः, स्वर्गभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्॥8॥

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकाणामुषः।
ये शृण्वंति पठंति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीरायश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि॥9॥

नोट–मंगलाष्टक में अन्य स्थानों पर निम्न श्लोक भी मिलतेहैं चाहें तो इन्हें बोल सकते हैं।

अर्हंतो भगवंत इन्द्रमहिता सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या, जिन शासनोन्नतकरा, पूज्य उपाध्यायकाः ।
श्री सिद्धांत सुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पंचै ते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥10॥

जायन्ते जिन चक्रवर्तिबलभृद्र, भोगीन्द्र कृष्णादयो,
धर्मादेव दिगङ्गनाङ्ग विलसच्छश्यशश्चन्दनाः ।
तद्धीना नरकादियोनिषुनरा, दुक्खं सहन्ते ध्रुवम्,
सः स्वर्गात् सुख रामणीयक पदं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥11॥

सर्पो हार लता भवत्यसिलता, सत्पुष्प दामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः ।
देवा यान्ति वशं प्रसन्न मनसः किं वा बहू ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥12॥

॥इति श्रीमंगलाष्टकम्॥

दर्शन स्तोत्र

दर्शनं देवदेवस्य दर्शनं पाप नाशनम् ।
दर्शनं स्वर्ग सोपानं दर्शनं मोक्ष साधनम् ॥1॥

दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेन च ।
न चिरं विद्यते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम् ॥2॥

वीतराग मुखं दृष्ट्वा, पद्मराग समप्रभम् ।
जन्म जनम कृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥3॥

दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसार-ध्वान्त-नाशनं ।
बोधनं चिद्-पद्मस्य, समस्तार्थ-प्रकाशनम् ॥4॥

दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्मामृत-वर्षणम् ।
जन्म-दाह-विनाशाय, वर्धनं सुख-वारिधेः ॥5॥

जीवादि-तत्त्वं प्रतिपादकाथ, सम्यक्त्व-मुख्याष्ट-गुणार्णवार्य ।
प्रशांत-रूपाय दिगम्बराय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय ॥6॥

चिन्दानन्दैक-रूपाय, जिनाय परमात्मने ।
परमात्म-प्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः ॥7॥

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्य-भावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वरः ॥8॥

नाहि त्राता नहि त्राता नहि त्राता जगत्त्रये ।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्याति ॥9॥

जिनेभक्तिं जिने भक्तिं जिनेभक्तिं दिने दिने।
सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु, सदामेऽस्तु भवे भवे ॥10॥

जिनधर्म-विनिर्मुक्तो, मा भवेच्चक्रवर्त्यपि।
स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिनधर्मानुवासितः ॥11॥

जनम-जन्मकृतं पापं, जन्म कोटिमुपार्जितम्।
जन्म-मृत्यु-जरा-रोगं, हन्यते जिन-दर्शनात् ॥12॥

अद्याभवत्सफलता नय-द्वयस्य, देव त्वदीय-चरणां-बुज-वीक्षणेन।
अद्य त्रिलोका-तिलकंप्रतिभासते मे, संसार-वारिधिरयं चलुक-प्रमाणम् ॥13॥

॥इति॥

अभिषेक के समय का भजन-1

सुरपति ले अपने शीश, जगत के ईश,
गये गिरि राजा जहाँ पांडुक शिला विराजा॥ सुरपति.....

शिल्पी कुबेर वहाँ आ करके, क्षीरोदधि मेरू ला कर के।
सुर पैदल ले आये सागर का जल ताजा।
फिर न्हवन कियो जिनराजा॥ सुरपति.....

नीलम पन्ना वैडूर्य मणी, कलशा ले करके देवगणी।
इक सहस आठ कलशा लेकर दिवराजा।
फिर न्हवन कियो जिनराजा॥ सुरपति.....

वसु योजन गहराई वाले, चंहुयोजन चौड़ाई वाले,
एक योजन मुख के कलश ढुरे जिन माथा।
नहीं डिंगे जरा शिशु नाथा ॥ सुरपति.....

सौधर्म इन्द्र अरु ईशाना प्रभु कलश करें सुर युगपाना,
अरु सनत्कुमार महेन्द्र दोय सुरनाथा।
शिर चवंर दुरावें साजा ॥ सुरपति.....

शेषादिक जय जयकार किया इन्द्राणी प्रभु तन पोंछ दिया,
शुभ तिलक द्रगांजन शीश कियो शिशुराजा,
नाना भूषण से साजा ॥ सुरपति.....

सौधर्म अप्सरा आ करके, मंगल दीपक युग धर करके,
फिर नृत्य कियो अतिशय सुरपर्वत राजा।
गंधर्व बजावें बाजा ॥ सुरपति.....

ऐरावत पुनि प्रभु ला करके, माता की गोद बिठा करके,
अति अचरज तांडव नृत्य कियो दिव राजा।
स्तुति करके जिनराजा ॥ सुरपति.....

चाहत मन मुन्नालाल शरण, बसु कर्म जाल दुख दूर करण,
शुभ आशिष मय वरदान देओ जिनराजा।
मैं न्हवन कियो जिनराजा ॥ सुरपति.....

अभिषेक भजन-2

अमृत से गगरी भरो श्रीजी का न्हवन करेंगे।
हिल मिल के नृत्य करो, पापमल दूर करेंगे ॥

अमृत से गगरी.....

सोने व चाँदी के कलशे साजा के,
केशर से नीके ये सथिये बना के।
क्षीरोदधि से नीर भरेंगे, श्रीजी का न्हवन करेगें ॥

अमृत से गगरी.....

धन्य भई सब इन्द्रों की अखियां,
धन्य हुई सब देवों की सखियाँ।
मेरु गिर शीश चलेगें पाप मल दूर करेंगे ॥

अमृत से गगरी.....

बसु योजन गहराई वाले,
चऊ योजन चौड़ाई वाले।
चार कोश मुख कलश धरेगें श्रीजी का न्हवन करेंगे ॥

अमृत से गगरी.....

पांडु शिला पर श्री जी बिठा के,
बोलो जय जय ताली बजा के।
आरती श्री जिनवर की करेंगे, पाप मल दूर करेगें ॥

अमृत से गगरी.....

–इति–

अभिषेक भजन-3

रचयिता–प्रवीण चन्द्र जैन शास्त्री

भर लो पानी आज इस गगरी में,
जिन न्हवन करेगें इस नगरी में।

भर लो पानी.....

पाप मल प्रक्षालन काजे, श्री जिनवर जगनाथ विराजे।
द्रव्य भाव नो कर्म मल को, नष्ट करन को गगरी में ॥1॥

भर लो पानी.....

जन्म जरामृत नाशन, कारण, रत्नत्रय जन करके धारण।
रोग शोक दुःख नाशन करन को, अष्ट करम हर गगरी में ॥2॥

भर लो पानी.....

स्वर्ण रतन भृंगार नाल से, इन्द्रों के गिरता है भाल से।
आर्त रौद्र दुर्ध्यान प्रक्षालन, क्षीरोदधि जल गगरी में ॥3॥

भर लो पानी.....

चतुष्कोण जल कुंभ बनाये, चार गती का नाश कराये।
पूर्ण सुगंधित जल पंचम का, पंचमगति सुधरी में ॥4॥

भर लो पानी.....

शांतीधारा शांत करे अघ, देकर नरभव मोक्ष महामग,
अधि व्याधि सब नष्ट उपाधि, भक्ति भाव जीवन में ॥

भर लो पानी.....

आरती समुच्चय

सभी आरती करें, जिनवर की करें, गणधर की करें।
मुनिवर की, आरती है सभी पूज्य वर की॥टेक॥सभी....

थाल नव रत्नमय दीप लाऊं ज्योति कर्पूर घृत की जलाऊँ।
न्हवन पूजन समय, विधान संध्या समय अघ हर की॥
आरती है सभी पूज्य वर की॥सभी आरती करें.....॥1॥

जिनवर चौबीस अरु बीस अनंतानंत, पांच भरतऐरावत के हैं अनंतानंत।
सब विदेह क्षेत्र के, सर्व कर्म भूमि के, तीर्थकर की।
आरती है सभी पूज्यवर की॥सभी आरती करो.....॥2॥

घारघाती अरी हने अरिहंत ने, अष्ट कर्म हने सिद्ध भगवंत ने।
सर्व अरिहंत की सिद्ध भगवंत की, कर्म हर की॥
आरती है सभी पूज्य वर की॥सभी आरती करो.....॥3॥

दिव्य ध्वनि केवली की है जब जब खिरी, यही शारदा माता सरस्वति बनी।
रूप ऊँकार की, शारदा भारती, तम हर की॥
आरती है सभी पूज्य वर की॥सभी आरती करो.....॥4॥

एक जिनवर के गणधर अनेकों हुए, सर्वऋद्धी धरें विघ्न हर सब हुए।
उन गण ईश की, सब गणाधीश की, ज्ञानधर की॥
आरती है सभी पूज्य वर की॥सभी आरती करो.....॥5॥

ढाई द्वीपस्थ त्रैकाल साधू, सूरी पाठक मुनी शिव अराधू।
गुण छत्तीस की, पच्चिस अठबीस की गुण निधि की॥
आरती है सभी पूज्य वर की॥सभी आरती करो.....॥6॥

तीनों लोकों में चैत्य चैत्यालय, धर्म आगम सभी को सुखालय।
जो भी कृत्रिम कहे, अकृत्रिम कहे, इन सब की॥
आरती है सभी पूज्य वर की॥सभी आरती करो.....॥7॥

आर्यिकायें महाव्रत की धारी, छट्ठी ग्यारह प्रतिमा के धारी।
आरती हम करें, सर्व आरत हरें, भव भव की॥
आरती है सभी पूज्य वर की॥सभी आरती करो.....॥8॥

पंच कल्याणक क्षेत्र हों तिथियाँ, लग्न नक्षत्र आदिक वे घड़ियाँ।
जिनमें जन्म लिया, मोक्षादि किया, उन पल की॥
आरती है सभी पूज्य वर की॥सभी आरती करो.....॥9॥

क्षेत्र अतिश्य धरें जिन धरमके, पर्व आष्टन्हिका दश धरम के।
चतुर्दशी अष्टमी, पर्व हैं और भी, इन सबकी॥
आरती है सभी पूज्य वर की॥सभी आरती करो.....॥10॥

चौबीसजिन मंगल स्तोत्र

दोहे

पंच परम गुरु ईश हैं, चौबीसों भगवान।
उनके श्रीपद पद्म का करो सदा नित ध्यान ॥1॥

ध्यान करन तें होत है, नित नित मंगल काज।
कोटिभवों के अघनशें, मिलि है शिव पद राज ॥2॥

तीन योग मय ध्यान तें, स्थिर चित्त बनाय।
आकुल व्याकुलता घटे, रोग शोक मिट जाये ॥3॥

ह्रीं बीजाक्षर में दिपें, चौबीसों भगवान।
पंच वर्ण मय राजते, कोटि रवि आभावान ॥4॥

सुर नर गणधर धरत हैं, जिनका नित प्रतिध्यान।
वंदनीय उन देव का, कर पूजन नित गान ॥5॥

चन्द्र प्रभू पुष्पदंत जिन, चन्द्र प्रभा सम गौर।
अर्ध चन्द्र सम नांद में, राजें युग सिर मौर ॥6॥

चन्द्राकार के उपरि में, नील बिंदु युत मान।
नेमी मुनिसुव्रत रहें, नील प्रभा श्रीमान ॥7॥

हरित श्याम सम जानिये, पार्श्व सुपार्श्व जिनेश।
ह्रीं ईकार विराजते, परम पूज्य परमेश ॥8॥

ह्रीं मस्तकाकार पर, पद्मप्रभू बसुपूज्य।
लाल वर्ण सम शोभते, इन सम और न दूज ॥9॥

आदि अजित सम्भव प्रभो, अभिनंदन सुमतेश।
शीतल श्री श्रेयांस जिन, विमल अनंत धर्मेश ॥10॥

शांति कुंथु अरनाथ जी, मल्लि नमिवीर जिनेश।
हकार में राजें सभी, तप्त हेम गुण धीश ॥11॥

श्री आदिनाथ भगवान हैं, आदी मंगलकार।
मोक्ष धरम के हैं रथी, सार्वभौम अवतार ॥12॥

श्री अजितनाथ भगवान ने, जीता सब संसार।
जीव पदारथ को दिया, परमातम गुण सार ॥13॥

सम्भव जिन संभव किया, मोक्ष दुष्कृत साध्य।
तीन भुवन में बन गये, सकल जगत आराध्य ॥14॥

अभिनंदन जिनका करें, अभिनंदन से लोग।
भय भी भय से भागते, जजत हरें जग शोक ॥15॥

सुमित नाथ देते सदा, नित सुमती का दान।
भव्यों को मिलता तभी, मोक्ष पथ सुखदान ॥16॥

पद्म प्रभू पद पद्म में, पुष्पांजलि कर आज।
जजत प्रतिदिन पूज्य पद, पूजत इन्द्र समाज ॥17॥

श्री सुपार्श्व जिननाथ हैं, स्वास्तिक रूप महान।
स्वस्तिक से पूजें सुजन, जाने सकल जहान ॥18॥

चन्द्रनाथ जिन चन्द्रमा, भुवनत्रय के चन्द्र।
चरनन चमके चन्द्रमा, चरन शरन आनंद ॥19॥

पुष्पदंत पद पुष्प को, पूजत पूजित वृंद।
जिन पदपुष्प सुगंधको, चाहत हैं सुर वृंद ॥20॥

शीतल जिन शीतल किया, जन्म जरा मृत शांत।
शीतल अरि बसुजीत के, मुक्ति प्रिया बन कांत ॥21॥

श्रेयांसनाथ को श्रेय से, जजें श्रेयसी लोग।
मांगें बिन चिंता करें, मन वांछित शिव भोग ॥22॥

बाल ब्रह्म पूरन परम, परमात्म चिदेव।
वासुपूज्य बासव जजत, करत नाथ की सेव ॥23॥

विमल नाथ जिन विमल नित, अमल विमल सुखकार।
तिन पद गुण केहेत मैं, पूजूं जिन सुख कार ॥24॥

अनंतनाथ गुण अनंत का, पावे अंत न कोय।
जो जिनवर तिहुं विध जजे, अनंत सो भी होय ॥25॥

धर्मनाथ के धर्म को, पाते धर्मी लोग।
धर्म चक्र लहि कर्म हनि, नाशें रोग और शोक ॥26॥

तीर्थंकर चक्री अनंग, शांतिनाथ भगवान।
पंच परावृत शांत कर, करें शांति श्रीमान ॥27॥

रक्षक हैं षट्काय के, कुंथुनाथ भगवान।
त्रि पदवी धारण करें, सुर नर जजते आन ॥28॥

त्रय पद धारक अरह जिन, भव दुक्खों को जीत।
सबके दुख हरता बने, बने सभी के मीत ॥29॥

मोह मल्ल जीता सकल, मल्लिनाथ जिन नाथ।
इसी हेतु मैं भी जजूं, तीन योग धर माथ ॥30॥

मुनिसुव्रत सुव्रत धरें, करें पाप को दूर।
जो जन उनको पूजते, उनके सुख भरपूर ॥31॥

श्री नमिनाथ जिनेश ने, जीता यम अरु काल।
ज्ञान भवन में झलकता, तीन लोक तिंहु काल ॥32॥

बाल ब्रह्म युत नेमि जी, नेमि लिया वैराग्य।
राजुल तज शिव तिय वरी, पाया शिव सुख राज ॥33॥

पारस पद पूजत परम, पूजत पारस होय।
दया क्षमा करुणा निधी, भवदधि सेतू सोय ॥34॥

वर्धमान सन्मति मती, वीर महा अति वीर।
महावीर गुण धीर हैं, भव सागर के तीर ॥35॥

पंच वरण मय हीं में, पंच वर्णीय भगवान।
ध्यान धरें ते पावते, गति पंचम धीमान ॥36॥

चौबीसों जिन चरन का, करते नित प्रति ध्यान।
पूजन वंदन आरती, करत पाप की हान ॥37॥

रोग शोक भूतादि का, ग्रह अरिष्ट जंजाल।
आकस्मिक संकट नशे, मिले सुखों की माल ॥38॥

पावन परम प्रवीन हैं, चौबीसों भगवान।
ध्यान करत सब दुखों का, हो जाता अवसान ॥39॥

षट् द्रव्य रचित संसार है, पंच परावृत रूप।
तीन लोक त्रस नालि में, लख चौरासी कूप ॥40॥

दुखियासब संसार है, सुखिया है नहीं कोय।
जो जिनवर जिन गुण जजें, सुखिया शिवमय होय ॥41॥

–इति–

सम्यक रत्नत्रय

सम्यक सोचो, समझो, करो।

सम्यक सोचना–सम्यग्दर्शन।

सम्यक समझा–सम्यग्ज्ञान।

सम्यक करना–सम्यग्चारित्र।

वस्तुतः दुनियां एक जुगाड़ है।

प्रवीन जैन शास्त्री

विनय पाठ

दोहावली

इह विधि ठाड़ो होय के प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ ॥1॥

अनंत चतुष्टय के धनी तुमही हो सिरताज।
मुक्ति वधू के कन्त तुम, तीन भुवन के राज ॥2॥

तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिव सुख के करतार ॥3॥

हरता अघ अंधियार के, करता धरमप्रकाश।
थिरता पद दातार हो धरता निजगुणरास ॥4॥

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप ॥5॥

मैं वन्दो जिनदेव को करि अति निरमल भाव।
कर्म बंध के छेदने, और न कुछ उपाव ॥6॥

भविजन को भव कूपतैं, तुम ही काढनहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम, गुण भण्डार ॥7॥

चिदानंद निर्मल कियो, धोय, कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल ॥8॥

तुम पद पंकज पूजते विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रिता को धरे, विष निर्विषता थाय ॥9॥

चक्री खगधर इन्द्रपद, मिले आप तें आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ॥10॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥11॥

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव ॥12॥

थकी नाव भवदधि विषें, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु जय जय जिनदेव ॥13॥

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी, देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव ॥14॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अजान।
आज धन्य मानुष भयो पायो जिनवर थान ॥15॥

तुमको पूजें सुरपती, अहपति नरपति देव।
धन्य भाग मेरो भयो, करन लग्यो तुमसेव ॥16॥

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेय लगाओ पार ॥17॥

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिके, कीजे आप समान ॥18॥

तुमरी नैक सुदृष्टितें, जग उतरत है पार।
हाहा डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ॥19॥

जो मैं कह-हूं ओर सों, तो न मिटे उरभार।
मेरी तो तोसौं बनी, जातैं करों पुकार ॥20॥

वंदौं पांचों परमगुरु, सुर गुरु वंदत जास।
विघन हरण मंगलकरण, पूरन परम प्रकाश ॥21॥

चौबीसों जिनपद नमों, नमो शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय ॥22॥

(नोट–विनय पाठके अन्त में कहीं-कहीं निम्न दोहों को भी बोलने की प्रथा है।)

मंगल मूरति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान ॥1॥

मंगल जिनवर पद नमो, मंगल अरिहंत देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वंदो स्वयमेव ॥2॥

मंगल आचारज मुनी, मंगल गुरु उवज्झाय।
सर्व साधु मंगल करो, वंदो मन वच काय ॥3॥

मंगल सरस्वति मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो. हरो असाता कर्म ॥4॥

या विध मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल नाथूराम यह भव सागर दृण पोत ॥5॥

उपरोक्त विनय पाठ बोलकर, सामग्री चढ़ाने वाली थाली में शुद्ध केसर या चंदन से स्वस्तिक बनाकर निम्न श्लोक बोलकर अंक न्यास करें। ठौने (स्थापना) में श्रीः लिखे जल चंदन चढ़ाने वाले पात्र में स्वस्तिक बनाकर पूजा आरम्भ करें। पूजा में दीपक अवश्य जलावें दीपक पर लालटेन का छोटा कांच का अवश्य रखें धूपदान में शुद्ध दशांग धूप खेवें।

रयणत्तयं च वंदे चौबीस जिनं सव्वदा वंदे।
पंच गुरुणां वंदे, चारण चरणं सव्वदा वंदे॥

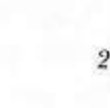

भजन

श्री जी मैं थाने पूजन आयो।
मेरी अरज सुनो दीनानाथ ॥श्री जी.....
जलचंदनअक्षतशुभलेके, तामें पुष्पमिलायो।
चरु अरु दीप धूप फल लेकर, सुंदर अर्घ बनाओ ॥श्री जी.....
आठ पहर की साठ जु घड़ियां शांति शरण तेरी आयो॥
अर्घ बनाय गाय गुणमाला घरनन शीश झुकायो।
मुझ सेवक की अरज यही है जामन मरण मिटायो ॥श्री जी.....

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥
ॐ ह्रीं अनादि मूल मन्त्रेभ्यो नमः पुष्पांजलिक्षिपामि॥

चत्तारि मंगलं–अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहूलोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरहंत सरणं पवज्जामि, सिद्धसरणं पवज्जामि साहू सरणं पवज्जामि केवलि पण्णत्तो धम्मो सरणंपवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा पुष्पांजलि क्षिपामि।

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुस्थितोऽपिवा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥1॥

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, सः बाह्याभ्यंतरे शुचिः ॥2॥

अपराजित-मन्त्रोऽयं सर्व-विघ्न-विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ॥3॥

एसो पंच - णमोयारो सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होई मंगलं ॥4॥

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥5॥

कर्माष्टक - विनिर्मुक्तं मोक्ष - लक्ष्मी - निकेतनं।
सम्यक्त्वादि - गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ॥6॥

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शकिनी-भूत-पनगाः ॥
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥7॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे ॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

पंचपरमेष्ठी का अर्घ

उदकचन्दनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

(यदि अवकाश हो, तो यहां पर सहस्रनाम पढ़कर दस अर्घ चढ़ना चाहिये। नहीं तो आगे लिखा श्लोक पढ़कर अर्घ चढ़ाना चाहिए।)

सहस्रनाम का अर्घ

उदकचन्दनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहं यजे ॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(स्वास्ति मंगल)

श्रीमज्जिनेंद्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं
स्याद्वाद-नायक-मनंत-चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघ-सुदृशां सुकृतैकहेतुः
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधि-रेष मयाऽभ्यधायि ॥1॥

स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति-प्रकाश-सहजोर्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न ललिताद्भुत-वैभवाय ॥2॥

स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।

स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति-त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय ॥3॥
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः।
आलंबनानि विवधान्यवलंब्य वल्गनु,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं ॥4॥
अर्हत्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥5॥
ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री जिनेन्द्र स्वस्ति पाठ

(यहाँ पर प्रत्येक भगवान् के नाम के पश्चात् पुष्पाञ्जली क्षेपण करें)

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनंदनः।
श्रीसुमति स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्व स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदंत स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति **श्रीअनंतः।**
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशांतिः।
श्रीकुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथ।

श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति, श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।
इति जिनेन्द्रस्वस्तिमङ्गलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

परमर्षि स्वस्ति पाठ

नित्याप्रकंपाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बल प्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥1॥
(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति-क्रियासुः परमर्षयो नः ॥2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्धहंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥3॥

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः स्मृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥4॥

जंघानल-श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बीजांकुरुचारणाह्याः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥5॥

अणिम्नि दःक्षाः कुशला महिम्नि लघिम्नि शक्ताः कृतिनोः गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाबलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥6॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथा प्रतीयातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥7॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥8॥
आमर्ष-सर्वोषधस्यतथाशीर्विषं विषा दृष्टिविषं विषाश्च।
सखिल्ल-विडजल्ल-मलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥9॥
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥10॥
इतिपरमर्षिस्वस्तिमंगल विधानं।

प्रश्न– तीर्थयात्रा क्यों करना चाहिए।

उत्तर– प्रत्येक संसारी जीव चौदह राजू ऊँचे पुरुषाकार तीन लोक की चर्तुगति की चौरासी लाख योनियों में द्रव्य क्षेत्र, काल, भाव और भव इन पाँच रूप से परिवर्तन करता हुआ निरन्तर यात्रा कर रहा है। इसी यात्रा को समाप्त करने के लिए तीर्थ यात्रा करना चाहिए।

श्री विनायक यन्त्र-पूजा

प्रवीण चन्द्र जैन शास्त्री–हस्तिनापुर

स्थापना–अडिल्ल छन्द

असिआ उसा पंच परम गुरु ईश हैं,
मंगल उत्तम शरणभूत जगदीश हैं।
भवदधि तारण हेतु श्री जिनदेव को,
विघ्न विनाशन हेतु जजूँ इन सर्व को॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआ उसा केवलिप्रणीतजिनधर्मसमूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट्.....।

अत्र तिष्ठ 2.....।

अत्र मम सन्निहितो.....।

तर्ज–फूल तुम्हें भेजा है खत में.....।

स्वर्ण खचित भृंगार नाल में पद्मपराग मिला जल है,
जन्म जरामृत रोग निवारक अन्तर का हरता मल है।
असिआ उसा मंगल उत्तम शरण भूत जगदीश कहे,
जिनवर कथित धर्म को पूजे रोग शोक सब पाप दहे ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआ उसा जिनधर्मेभ्यः मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यः जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलम् निर्वपामिति स्वाहा।

जगदानंदन के वंदन को नंदन वन का चन्दन है।
कर्पूर और केशर से मिश्रित भव आताप निकंदन है॥
असिआ उसा मंगल.....॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं.....भवाताप विनाशनाय चन्दम्।

चन्द्रप्रभा को कर दे लज्जित, तुम गुण गंधित अक्षत हैं।
आतम पद को अक्षय करने हेतु आप पद शाश्वत हैं ॥
असिआ उसा मंगल उत्तम शरण भूत जगदीश कहे,
जिनवर कथित धर्म को पूजे रोग शोक सब पाप दहे ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा जिनधर्मेभ्य मंगलोत्तम शरणभूतेभ्य: अक्षय पद प्राप्तय अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु के हैं पुष्प सुगंधित कामदेव मद नाशक हैं।
कामजयी के चरण कमल में दृण श्रद्धा से अर्पित हैं॥
असिआ उस मंगल.....॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं..... पष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन रसना लोभित सुरनर के मन हरण करें,
आपके सम्मुख भेंट करत ही क्षुधा वेदनी नाश करें।
असिआ उसा मंगल.....॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं.....क्षुधा रोग नाशाय नैवेद्यम्.....।

दिव्य रत्नमय ज्योति जलाकर जिनवर की आरति करते।
मोह तिमिर के हैं ये नाशक, अज्ञान तिमिर सबका हरते ॥
असिआ उसा मंगल.....॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं.....मोहान्धकार नाशाय दीपम्.....।

सर्व सुगंधित द्रव्य मिलाकर अग्नी के संग होम किया।
अष्टकर्म के नाशक प्रभु के चरण कमल में चढ़ा दिया॥
असिआ उसा मंगल.....॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं.....सर्वसुख प्राप्ताय धूपम्.....।

षट्रितु के फल सरस सरीले सुन नर के मन भावन हैं।
शिवरमणी के प्रिय को अर्पित, फलते सबके सावन हैं॥

असिआ उसा मंगल उत्तम शरण भूत जगदीश कहे,
जिनवर कथित धर्म को पूजे रोग शोक सब पाप दहे॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं.....मोक्षफल प्राप्ताय फलम्.....।

जलफल आदी बसु द्रव्यों को रत्नथाल में सजा लिया।
चिंतामणि चिन्तित फलदाता, परम पदों में चढ़ा दिया॥
असिआ उसा मंगल.....॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं.....अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यम्.....।

प्रत्येक अर्घ्य

तर्ज—श्रीपति जिनवर.....।

सर्वज्ञ हितंकर वीतराग प्रभु छियालिस गुण के धारी हो,
अष्टादश दोष विमुक्त हुये प्रभुलोकालोक प्रकाशी हो।
जल चंदनादि वसु द्रव्यों से, मैं श्री जिनवर का यजन करूँ,
सब रोग शोक क्रोधादिक का इनकी पूजा से शमन करूँ ॥1॥

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं त्रैकालिक अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यम्....।

जिन कर्माष्टक का नाश किया लोकाग्रशिखर पर राज रहे,
हैं अष्टगुणों से संयुत भी, वे अनंत गुणों से साज रहे।
मैं अष्टद्रव्य से पूजा कर, सब सिद्धों का गुणगान करूँ,
उन भक्ती से सिद्धी पाकर मैं सकल अमंगल हान करूँ ॥2॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं त्रैकालिक सकल सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यम्.....।

जो पंचाचार परायण हैं शिष्यों को दीक्षा देते हैं,
छत्तिस गुण का पालन करते, झट् संकट को हर लेते हैं।

जलगंधादिक बसु द्रव्य सजा, मैं चरण कमल का ध्यान करूँ,
आचार्य गुरू की पूजा से, मैं सकल विघ्न अवशान करूँ॥3॥
ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं त्रैकालिक आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यम्.....।

जो पच्चिस गुण से शोभित हों शिष्यों को शिक्षा देते हैं,
सब मोह तिमिर को दूर भगा सम्यग्ज्योति भर देते हैं।
उनके पद पंकज की पूजा जो त्रिभुवन मंगलदायी है,
उन उपाध्याय को नित पूजें वे भव भव में सुखदायी हैं॥4॥
ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं त्रैकालिक उपाध्याय परमेष्ठियो नमः अर्घ्यम्.....।

जो विषयों की आशारहिते आरम्भ परिग्रह हारी हैं,
वे पंचपाप के नाशक हैं और पंच महाव्रत धारी हैं।
अट्ठाइस गुण से शोभित मुनि, उनकी मैं अर्चा करता हूँ,
आत्मा में पूर्ण विशुद्धी हो, ये सम्यक् चर्चा करता हूँ ॥5॥
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं त्रैकालिकसर्वसाधु परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

चाल-छन्द

(नन्दीश्वर श्री जिन धाम....)

जो पाप पंक कर दूर, मंगल दान करें,
अरिहंत है मंगलरूप, पुण्य प्रदान करें ॥
नीरादिक द्रव्य मिलाय, स्वर्ण सुपात्र धरें,
जिन चरणन देत चढ़ाय, सब विधि सौख्य भरें ॥6॥
ॐ ह्रीं अर्हन् मंगलाय नमः अर्घ्यम् निर्वपामिति स्वाहा।

जो तीन लोक के अग्र मस्तक पर राजें,
गुणनंत अष्ट से युक्त, अष्टम् भू साजें।

वे मंगल रूप महान, सिद्धि प्रदान करें,
बसु द्रव्यों से उन पूज अमंगल हान करें ॥7॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलाय नमः अर्घ्यम्।

आचार्य उपाध्याय साधु इनको नित्य जजूँ,
ये तीनों मंगल रूप, सुखमय सार भजूँ।
सललादिक द्रव्य चढ़ाय मन वांछित पाऊँ,
सब रोक शोक मिट जाये, चिंता विनशाऊँ ॥8॥

ॐ ह्रीं साधु मंगलाय नमः अर्घ्यम्....।

जिन धर्म चक्र की शरण पाते भव्य सही,
कर ज्ञानामृत को पान अष्टम् अवनि लही।
है सर्व सौख्य दातार मंगल रूप कहा,
वसु विधि गुण अर्घ्य चढ़ाय, सब विधि स्वस्ति लहा ॥9॥

ॐ ह्रीं केवली प्रज्ञप्ति धर्म मंगलाय नमः अर्घ्यं....।

भुजंग प्रयात छन्द

(तुम्हीं मेरे मन्दिर तुम्हीं मेरी पूजा)

नमो लोक उत्तम महा सौख्यकारी,
लही देव देवा मैं शरणा तुम्हारी।
मन काय वच से, तुम्हीं को मैं ध्याऊँ,
तुम्हारी कृपा से मैं मुक्ति को पाऊँ ॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हत्लोकोत्माय नमः अर्घ्यम्....।

नमो सिद्धा देवा, अनन्ते विराजे,
सदा लोक उत्तम, शास्वत सु राजे।

तुमारे गुणों से तुम्हीं को जजूँ मैं,
वसूद्रव्य अर्चे तुमी को भजूँ मैं ॥11॥

ॐ ह्रीं सिद्ध लोकोत्तमाय नमः अर्घ्यम्।

आचार्य पाठक निर्ग्रंथ साधू,
इनकी कृपा से अघों को भगा दूँ।
तुम ही लोक उत्तम जगत में कहाये,
अर्चा तुम्हारी सुवांछित दिलाये ॥12॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तमाय नमः अर्घ्यम्।

जिनवर वचन हैं परम तृप्ति कारी,
अनेकांतधारी, भव रोग मारी।
जजूँ धर्म जिन का कहा लोक उत्तम,
जिसे धार कर मुनि बने शिवगुणोत्तम ॥13॥

ॐ ह्रीं केवली प्रज्ञप्त धर्म लोकोत्तमाय नमः अर्घ्यम्....।

तर्ज–(होठों को छू लो तो मेरा गीत अमर कर दो)

संसार कहा अशरण यहाँ शरण नहीं कोई,
कर्मारि जो जीत चुके अरिहंत शरण वोही।
हम कर्म खपाने को कुछ उनका ध्यान कर लें,
पूजन अर्चन करके सब रोग शोक हर लें ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हत् शरणाय नमः अर्घ्यम्....।

जिन अष्ट करम जीता पायी सुख की सीता,
सब जन्म जरामृत हर जग को दे दी गीता।
उन सिद्धों की पूजा भवि को सिद्धी देती,
सब कष्ट मिटा सुख दे वांछित को भर देती ॥15॥

ॐ ह्रीं सिद्ध शरणाय नमः अर्घ्यम्.....।

सूरी पाठक साधू इन शरण पुनीता है,
इनकी मुक्ती पथिका भव्यों की सुनीता है।
जन शरण गहें इनकी पूजा अर्चा करते,
हम अर्घ्य चढ़ा करके सब रोग शोक हरते ॥16॥

ॐ ह्रीं साधु शरणाय नमः अर्घ्यम्....।

जिनराज का वचनामृत अमृत का झरना है,
झरते हुए झरने को कानों से पीना है।
जिसको पीते-पीते सुर नर गणधर हारे,
ये वचन पियूष हमें भव सागर से तारे ॥17॥

ॐ ह्रीं केवली प्रज्ञप्त धर्मशरणाय नमः अर्घ्यम्....।

पूर्णार्घ्य

तर्ज–(तीरथ करने चली सती....)

भव दुक्खों का नाश करन को मोक्ष मार्ग दिलवाने को,
सत्रह मंत्र प्रमाण कहें हैं शास्वत सुख दिलवाने को॥
पूरण अर्घ बनाकर के मैं हेम पात्र भर लाया हूँ,
इनके गुण सब प्राप्त मुझे हों इसी हेतु मैं आया हूँ॥
पूजन वंदन ध्यान करन को अपने कर्म जलाने को,
सत्रह मंत्र प्रमाण कहे हैं शास्वत सुख दिलवाने को॥

ॐ ह्रीं अर्हदादि सप्तदश महा मंत्रेभ्यो नमः अर्घ्यम्....।

दोहा

अनंतानंत प्रमाण है प्रभु गुण माल अनंत।
किंचित गुण भी गाय के भविक लहे भव अंत ॥1॥

तीन भुवन के चन्द्रमा पांचों परम निधान।
मंगल शरणोत्तम कहे सर्व गुणों की खान ॥2॥

दश दिश गुण सौरभ भ्रमें करे मोह तम नाश।
भक्ती धागा में पिरो करूँ माल गुण राशि ॥3॥

चाल–शेर–(जिन शासनी हँसासनी पद्मावती माता)

अरिहंत नाम लड्डू सो सिद्ध नाम खीर,
साहू नाम मिश्री सो घोर घोर पी।
जिनधर्म केवली कथित पियूष वापिका,
जो पान करे जनम मृत्यु रोग नाशता ॥4॥

अरिहंत देव अरि के हंत मुक्ति कंत हैं,
छियालीस गुण से युक्त भी तो गुण अनंत हैं।
स्वामी समोशरण के कहे सर्व के ज्ञाता,
इन ॐध्वनीईश से है सर्व का नाता ॥5॥

जो नित्य निरंजन हैं निराकार स्वरूपी,
वे जन्म मृत्यु शून्य शिवाधार अरूपी।
जो नंतानंत सिद्ध लोक अग्र पे राजें,
मेरे भी हृदय कमल में वे नित्य विराजें ॥6॥

आचार पाँच पालते छत्तीस गुण धरें,
भव्यों के भव को नाश के शिव मार्ग में करें।
वे संघ के नायक विभो आचार्य कहे हैं,
भव्यों के हृदयकमल में विराज रहे हैं ॥7॥

अज्ञान अंधकार को जो ज्ञान से हरते,
मुनियों के चित्त में वो ज्ञान भारती भरते।
पच्चीस गुण से युक्त हैं सिद्धांत के ज्ञाता,
मानियों के मद को नाश ज्ञान के दाता ॥8॥

मुनि तीन कम नो करोड़ ढाई द्वीप के,
शिव साधना में रत रहें मोती सु सीप के।
बीस अष्ट गुण धरें वे पाप को हरें,
रोग शोक नाश के सुख शांति को भरें ॥9॥

जो केवली प्रणीत दयामूल धरम है,
द्वादशांग पूर्व से अपूर्व मर्म है।
प्राणियों का दुःख विनाश सुक्ख में धरता,
अतः यर्थात् धर्म नाम जिनका है धरता ॥10॥

अरिहंत सिद्ध साहू हैं जिनराज धर्म भी,
मंगल कहे उत्तम कहे हैं शरणभूत भी।
मिलकर के सतरह मंत्र हैं आगम ये बताये,
जो भक्ति भाव से जपे व्याधी न सताये ॥11॥

श्रद्धान से सम्यकत्व मिले ज्ञान भी मिले,
चारित्र सकल पायते शिवधाम भी मिले।

संसार के सब सौख्य मिलें भोग भी मिलें,
ऋद्धी मिले सिद्धी मिले गुण वृद्धि भी मिले ॥12॥

अर्हंत आदि सप्त परम थान बताये,
जिनराज का है भक्त इन्हें शीघ्र ही पाये।
ऐसी त्रिलोक में निधी नहीं कोई कही,
जो आप भक्त पास में आके नहीं रही ॥13॥

रोग शोक वात पित्त भय व व्याधि भी,
दुर्घटना ओ संकट नशे नशे उपाधि भी।
दारिद्री हो धनवान सुत सपंदा पावे,
प्रभु नाम मंत्र जाप से संपूर्ण सुख आवे ॥14॥

जो यंत्र न्हवन नीर सुधा शीश पे धरें,
सो कुष्ट आदि व्याधि नाश तन मदन धरें।
जो सवा लक्ष जाप करें विधि विधान से,
प्रवीन चन्द्र सो दिपें शिवगुण निधान से ॥15॥

घत्ता छन्द्र

प्रभु गुण मणिमाला भक्ति विशाला, भाव विभोर हो कंठ धरें।
उनके दुख जावें वांछित पावें, त्रिभुवन में पद पूज्य धरें ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआ उसा जिनधर्मेभ्यः मंगलोत्तम शरण भूतेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

मंगल मय भगवान की मंगलमाल महान्।
मोह महामद नाश के करे सकल कल्यान ॥17॥

इत्याशीर्वादः

समुच्चय चौबीसी जिनपूजा

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमित पदम सुपार्श्व जिनराय।
चंद्र पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज्य पूजित सुरराय॥
विमल अनंत धरम जस उज्जवल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौष आवाहननं।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भ वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक (चाल छंद)

मुनिमन सम उज्जवल नीर, प्रासुक गन्ध भरा।
भरि कनक कटोरी धीर, दीनी धार धरा॥
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही।
पद जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्ष मही ॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व०।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी।
जिन चरनन देत चढ़ाय, भव आताप हरी॥ चौ0।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदिवीरान्तेभ्यो भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्व०।

तंदुल सित सोम समान, सुन्दर अनियारे।
मुक्ताफल की उनमान, पुञ्ज धरौं प्यारे ॥चौ०3॥

चौबीसों श्री जिन चंद, आनंद कंद सही।
पद जजत हरत भव कंद, पावत मोक्ष मही ॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदिवीरान्तेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०॥

वरकंज कदंब कुरंड, सुमन सुगंध भरे।
जिन अग्र धरों गुण मंड, काम-कलंक हरे ॥चौ०4॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदिवीरान्तेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०॥

मनमोहन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने।
रस पूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने ॥चौ०5॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदिवीरान्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०॥

तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगे।
सब तिमिर मोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागे ॥चौ०6॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदिवीरान्तेभ्यो मोहन्धकारविनाशनाय दीपं निर्व०॥

दशगंध हुताशन मांहि, हे प्रभु खेवत हों।
मिस धूम करम जरि जाहिं, तुम पद सेवत हों ॥चौ०7॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदिवीरान्तेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व०॥

शुचिपक्वसरस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो।
देखत दृग मनको प्यार, पूजत सुख पायो ॥चौ०8॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व०॥

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ॥चौ०9॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदिवीरान्तेभ्योऽनर्घपदप्रा तये अर्घं निर्व०॥

जयमाला

श्रीमत तीरथ नाथ पद, माथ नाय हितहेत।
गाऊँ गुणमाला, अबे, अजर अमर पद देत॥1॥

छन्द घत्तानन्द

जय भवतम भंजन जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छकरा।
शिव मग परकाशक, अरिगण नाशक चौबीसों जिनराज वरा ॥2॥

छन्द पद्धरी

जय ऋषभदेव ऋषिगण नमंत, जय अजित जीत वसु अरि तुरन्त।
जय संभव भवभय करत चूर, जय अभिनंदन आनन्दपूर ॥3॥
जय सुमति सुमति दायक दयाल, जय पद्म पद्मदुति तन रसाल।
जय जय सुपार्श्व भवपाश नाश, जय चंद चंद तन दुति प्रकाश ॥4॥
जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत, जय शीतल शीतल गुणनिकेत।
जय श्रेयनाथ नुत सहस भुज्ज, जय वासवपूजित वासुपूज्ज ॥5॥
जय विमल विमलपद देनहार, जय जय अनन्त गुणगन अपार।
जय धर्म धर्म शिव शर्म देत, जय शान्ति शान्ति पुष्टी करेत ॥6॥
जय कुंथु कुंथुवादिक रखेय, जय अरजिनवसु अरि छय करेय।
जय मल्लि मल्ल हत मोहमल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रतशल्ल दल्ल ॥7॥
जय नमि नित वासवनुत सपेम, जय नेमिनाथ वृषचक्रनेम।
जय पारसनाथ अनाथ नाथ, जय वर्द्धमान शिवनगर साथ ॥8॥

छन्द घत्तानन्द

चौबीस जिनेन्दा आनंदकंदा, पापनिकन्दा सुखकारी।
तिनपद जुगचन्दा उदय अमन्दा, वासव-वन्दा हितकारी ॥9॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

भुक्ति मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराज वर।
तिनपद मनवच धार, जो पूजे सो शिव लह ।।10।।

इत्याशीर्वादः।

श्री आदिनाथजिन पूजा

रचयिता–प्रवीण चंद जैन शास्त्री

स्थापना

तर्ज–फूल तुम्हें भेजा है खत में.....

क्लीं बीज अक्षर से संयुत, आदिनाथ भगवान कहे,
आदी ब्रह्मा मोक्ष विधाता, शत इन्द्रों से वंद्य रहे॥
नाभिराय मरुदेवी के नन्दन, करूं प्रभो की पूजा मैं,
आप पूज्य हैं, मैं प्रभु पूजक, करूं आप गुण पूजा मैं॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ.....।
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

तर्ज–तीर्थंकर की ध्वनि गणधर ने सुनि.....।

तीरथ जलझारी, रतननवारी निर्मलकारी गुणधारी,
जिन पद त्रयधारा, पाप निवारा, सुख संचारा त्रिपुरारी।
प्रभु जन्म जरामृत, ताहि नशावत, हर्ष बढ़ावत शिवकारी,
आदीश जिनेश्वर जग परमेश्वर विघ्न हरेश्वर सुखकारी ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरामृत्यु त्रिदोषनाशाय जलम् निर्वपामिति स्वाहा।

मन वच ये कायं त्रयविध तापं, भव आतापं दुख देते,
इनका जो कारण मिथ्या धारण, सो दुख कारण हर लेते।

मलियागिर चंदन ले नंदन वन, जिनवर अर्चन हित लावें,
प्रभु आदि सुब्रह्मा अनुपम उपमा, अर्चन कर भव तप जावे ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशाय चन्दम् निर्वपामिति स्वाहा।

त्रिभुवन के सुख का, अंत है दुख, पा, पाकर के भवि पछताते,
वह कौन सुपद है जो अक्षत है, शिवपद अक्षत मन भाते।
सो जाति जाति के भांति भांति के, जिन अर्चन कर सुख भरना,
जय जय ऋषभेश्वर जय वृषभेश्वर, मैं आयो प्रभु तुम शरना ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् निर्वपामिति स्वाहा।

ले पुष्प सुगंधी दुनियां अंधी, शील स्वभाव नशा जाती,
तब जन्म मरण से काम वरण से, लख चौरासी में दुख पाती।
इसके निरवारण पूजन कारण, पुष्प सुगंधित बहु लाऊँ,
प्रभु आदि विधाता शिवपददाता, पूजन कर शिवपद पाऊँ ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामवाण विध्न विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

ये क्षुधा बड़ी है पीछे पड़ी है, खाकर के नहीं तृप्ति मिले,
ये षड्रस व्यंजन क्षुधा के भंजन, कुछ क्षण ही बस तृप्ति मिले।
बस युक्ति यही है पूजन की है, प्रभु पूजन तत्काल हरे,
आदी तीर्थंकर हो क्षेमकर, प्रथम तीर्थंकर सौख्य भरें ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामिति स्वाहा।

ये मोह अंधेरा, तिहुँजग घेरा, सूर्य चन्द्र नहीं दूर करें,
कपूर जलाऊं दीपक लाऊँ, आरति कर तम दूर करें।

यह जिनवर आरति नित अवतारत सब विध का प्रभु मोह हरें,
आदीश्वर स्वामी अन्तर्यामी, आतम गुण प्रद्योत करें ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु द्रव्य सुगंधित, निजकर मिश्रित, त्रय विध अग्नी में ज्वालूँ,
ये द्रव्य भाव नो, कर्म ये मल सो, उसमें इसको छय डालूं।
फिर आतम गंधी उठे सुगंन्धी, रत्नत्रय निधि को पालूँ,
जिन आदि अनंता, प्रभु भगवंता, सब गुणवंता को ध्यालूँ ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म विनाशनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अच्छे अच्छे सबसे सच्चे, पूजा हित मैं फल लाऊँ,
ले कंचनथाली रत्नन वाली, भर के आली गुण गाऊँ।
इन कर्म फलों को पाप मलोंको प्रभु पूजा से विनशाऊं,
हो आदि अवतारी करुणाधारी शिव सुखकारी पद ध्याऊं ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षमहा फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामिति स्वाहा।

जल चंदन लेकर कुसुम मिलाकर, नेवज दीप अरु धूप लिया,
षड्रितु के फल से, अर्घ्य ले कर से, हेम पात्र में सजा लिया।
प्रभु हो जगदीश्वर, त्रिभुवन ईश्वर, हे गुणधीश्वर अर्घ किया,
हो शिवलक्ष्मीपति, मुक्ति रमापति, प्रथम यतीपति पूज किया ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मातीदाम छंद

जिनेश्वर के पद में जलधार, करेगी मन में शांति अपार।
विराजे आदिनाथ भगवान, करें जो भविजन का कल्यान॥

शांतये शांतिधारा

जिनेश्वर पद अरविंद हैं दोय, हेम कुसुमों की वृष्टी होय।
करें पुष्पांजलि जिन पद सार, उठे तहाँ आत्म सुगंधि अपार॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पंच कल्याणक के अर्घ

तर्ज—सुनिये जिनअर्ज हमारी

दोज असित अषाढ़ की आई, उर मात बसे जिनराई।
सवारथ सिद्धि निकासा। अयोध्या में हुआ निवासा ॥1॥

ॐ ह्रीं अषाढ़ कृष्णा द्वितीयायां गर्भ कल्याणक प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तिथि चैत्र वदी शुभ नोमी, गृह नाभिराय जन्मे जी।
अभिषेक करें सुर इन्द्र, जन्मोत्सव वरो जिनेन्द्र ॥2॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां जन्म कल्याणक प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पुनि चैत्रवदी नोमी को, तज राज्य गये जिन वन को।
लौकांतिक पद अरविन्दा जिन पूज रचों आनन्दा ॥3॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णा नवम्यां तप कल्याण प्राप्ताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

फागुन वदि ग्यारह जानो, लहि केवल ज्ञान महानो।
ॐकार ध्वनी विस्तारी, भवि जन को शिव सुखकारी॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तिथि माघ चर्तुदशकारी, अष्टापद शिव सुख धारी।
जिन अष्टकर्म को नाशा, लोकाग्र पे कियो निवासा॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चर्तुदश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

जिनकी जय त्रिभुवन जयी, उनकी यह जयमाल।
भक्ति भाव से अब कहूँ, जिन गुनमाल विशाल॥

तर्ज–तुमी मेरे मंदिर तुम मेरी पूजा....।

जयो आदि देवा तुमी पाप छेवा,
देवाधि देवा नमूं मैं त्वमेवा।
श्री नाभि कुलकर थे अन्तिम कहाये,
उन्हीं पुत्र बनकर जगत में हो आये ॥1॥
मरुदेवी माता जो त्रिभुवन की माता,
ऐसी जग माता से जिनवर का नाता।
छह मास पहले हुई रत्न वृष्टी,
शांति के परमाणु से काय सृष्टी ॥2॥

शची आदि देवी करें मात सेवा,
सेवा से पातीं, वे सम्यकत्व मेवा।
जहाँ भव घनेरे वहाँ कम हैं धरती,
अनंतों भवों को भी बस अल्प करती ॥3॥
जन्मे विधाता तवे इन्द्र आये,
नगरी अयोध्या को स्वर्ग सम बनाये।
पुरी स्वर्ग अलका की उपमा को जीती,
सभी लोग जिनवर से करते थे, प्रीती ॥4॥
धनुष पांच सौ तुंग तन शोभता था,
कांती कनक तप्त की जीतता था।
प्रभू थे निराले, थी उपमा उन्हीं से,
देते सभी थे उन्हीं की उन्ही से ॥5॥
किया था न्हवन मेरु पर आदि जिन का,
हुआ नृत्य तांडव तभी इन्द्र उनका।
देखा जो प्रभु को तो देखा ना जाये,
हरी हर्षधर नेत्र सहस्रों बनाये ॥6॥
देवेन्द्र भक्ती के वश नृत्य करता,
इसी से वो मानो है, भव एक धरता।
शची इन्द्र की जब प्रसूती गृह से,
लाई न्हवन हेतु उस ही समय से ॥7॥
बनी थी वो मानो भव एक धारी,
प्रफुल्लित शची की थी मन की वो क्यारी।

महा जन्म उत्सव सभी देव कीना,
वदी चैत्र की तिथि नौमी महीना ।।8।।
इसी विधि प्रभू पंच कल्याण पति थे,
कल्यान से सर्व भंडार भरते।
प्रभो एक मेरा भी कल्यान कीजे,
अपनी कृपा की दृष्टि भी दीजे ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

कृपा सिन्धु जिनवर प्रभो, तुम हो दीनदयाल।
शरणागत वत्सल कहे, शरणागत प्रतिपाल॥

इत्याशीर्वादः।

श्री संभवनाथ जिन पूजा

स्थापना

तर्ज–पूजा पाठ रचाऊँ मेरे स्वामी.....

असम्भव को जो सम्भव करते वे सम्भव जिन त्राता,
भक्तों को शमदम देने में, तिहुं जग में ब्याख्याता।
उनके चरण कमल की पूजा नित प्रति इन्द्र रचाते,
हृदय कमल में धारण करके, हम भी पूज रचाते।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर 2.....
ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ 2.....
ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहतो भव भव..

तर्ज–हे वीर तुम्हारे द्वारे पर.....।

ये द्रव्य भाव नो कर्म सदा आत्मा से अनादि संयोगित है,
इस मल को धोने हेतु कहा रत्नत्रय जल ही शास्वत है।
इस जल को आत्म झारी से, जिनवर पद में त्रय धार करूँ,
श्री सम्भव जिन की पूजा से मैं, जन्म जरा मृत भार हरूँ ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामिति स्वाहा।

जब भव संताप सताता है तब जीव बहुत दुःख पाता है,
उससे शीतलता पाने को, बस कुपथों में भरमाता है।
मलियागिर नंदनवन चंदन, जिनराज चरण की भक्ति करूँ,
जिन चर्चन से जिन अर्जन से मैं भव भव की नित तपन हरूँ ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय भव आताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामिति स्वाहा।

जीवन पथ जब अवरुद्ध बने, दुष्कर्म उदय में आते हैं,
वे धर्म मार्ग से च्युत करते, दिल टूट टूट गिर जाते हैं।
जिन पथ में आत्मा दृण होवे, अक्षत के पुंज चढ़ाता हूँ,
शिव पद शास्वत पाने हेतु, जिन चरण कमल में आता हूँ ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् निर्वपामिति स्वाहा।

जग काम वासना युक्त सदा, नहीं आत्म शील को प्राप्त किया,
लख चौरासी में भ्रमण किया, अतिशय अनंत दुःख प्राप्त किया।
सुर तरु समेत प्रभु गुण सुगंध युत पुष्पों को अर्पित करता,
संभव जिन के जो चरण कमल, कमलों में कमल अर्पित करता ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय काम रोग विनाशाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में जीव न ऐसा है, नहीं भूख प्यास की बाध जिसे,
षटरस व्यंजन से उदर भरे, फिर भी न मिटी ये व्याधि उसे।
इस आधि व्याधि के शमन हेतु, प्रभु व्यजन विविध ये भेंट करूँ,
बहु विध व्यंजन से पूजन कर, प्रभु नामामृत का पान करूँ ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान तिमिर घेरे दश दिश, हर संसारी को दुखित करे,
ये मोह राग में जकड़ा जन, नहिं मोक्ष मार्ग को प्राप्त करे।
हे नाथ शिवपथ दिखला दो, मैं दीपक आन चढ़ाता हूँ,
मेरा आत्मा परमात्मा हो, बस यही भावना भाता हूँ ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशाय दीपम् निर्वपामिति स्वाहा।

इस जीव ने लख चौरासी भ्रम, सुख दुःख की सुगंधी पाई है,
सुख पाने को अघ किये बहुत, अरु पापों की धूप बड़ाई है।
परमात्म सुगंधी पाने को, मैं दश विध धूप बनाता हूं,
त्रय विध अग्नि में जला उसे, दश दिश को प्रभु महकाता हूँ ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम् निर्वपामिति स्वाहा।

त्रिभुवन में चौदह राजू तक बस मिथ्या फलों को खाया है,
उनको खा खा कर जन्म मरण, करके संसार बढ़ाया है।
मिल जावे एक बार सम्यक, बस आप कृपा से बात बने,
ले सरस सरस सुन्दर मधुकर फल भेंट करूँ मैं घने घने ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्रापताय फलम् निर्वपामिति स्वाहा।

वसु विध का अर्घ्य बना करके वसु विधि पात्रों में सजा सजा,
हे नाथ अर्चना करता हूं, तव चरण कमल में चढ़ा चढ़ा।
मैं बढ़ा बढ़ा कर भक्ति को प्रभु शक्ति ऐसी पा जाऊं,
वसु विधि कर्मों का नाश करूँ वसु विधि गुण वसुधा पा जाऊं ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यम् निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

श्री संभव के पद कमल, करते भवदधि पार,
इसीलिए प्रभु चरण तल, करता शांति धार॥
शांतये शांतिधारा।

दश दिश महके जिन वदन, भीनी भीनी गंध,
उसी गंध के हेतु मैं, करता सुमन सुगंध॥
पुष्पांजलीं क्षिपेत्।

पंचकल्याणक अर्घ्य

गीता छन्द

ग्रैवयक अधो से छूट कर फाल्गुन शिता थी अष्टमी,
मृग सिरा शुभ नक्षत्र में माता सुसैना के तनी।
देखतीं सोलह स्वप्न को, मात सेवें देवियां,
हम गर्भ कल्याणक जजें छूटें गरभ की व्याधियां॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन शुक्ला अष्टमी दिने गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति ***स्वाहा।***

कार्तिक सुदी पन्द्रस तिथी राजा दृणरथ के यहाँ,
नाम संभव जिन लिये, श्रावस्तिपुरि प्रकटे वहाँ।
लख साठ पूरब आयु कुल, इक्ष्वाकु वंशी जानिये,
चारशत धनु हेमतन, हय चिन्ह, लख जज आनिये॥

ॐ ह्रीं कार्तिक सुदी पूर्णिमायां जन्म कल्याणक प्राप्ताय श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मगसिर सुदी पन्द्रस तिथी, लख पात उल्का वन गये,
सहेतुक बनी जेष्ठा नखत, अप्राह में दीक्षित भये।
इक सहस नृप सह धरी दीक्षा, नाथ सम्भव जिन प्रभो,
दीक्षा कल्याणक हम जजें, सब कर्म घन विघटें विभो॥

ॐ ह्रीं मगसिर सुदी पूर्णिमायां दीक्षा कल्याणक प्राप्ताय श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कार्तिक वदी की तिथि चतुर्थी, पूर्वाण्ह बेला में हुआ,
सहेतुक बनी ज्येष्ठा नखत, तरु शाल केवल रवि लहा।
ग्यारह सुयोजन समवसृति, दो लाख मुनिगण मानिये,
पंच, इकशत, गणधरों युत दिव्य ध्वनि जिन जानिये॥

ॐ ह्रीं कार्तिक वदी चतुर्थ्यां केवलज्ञान भास्कर युक्ताय श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्र शुक्ला छठ तिथि को, कर्म अष्टा विध हने,
सम्मेद शिखर सुतीर्थ से, प्रभु मोक्ष लक्ष्मी पति बनें।
मिलकर चतुर्विधि देव सब प्रभु मोक्ष कलयाणक करें,
हम अर्घ्य से जिन पूजकर सर्वार्थ सिद्धी वश करें॥

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ला षष्ट्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– श्री संभव जिनराज की महिमा बड़ी विशाल,
सुरनर गणधर इन्द्र भी, जजते नतकर भाल।

तर्ज–श्रीपति करूणा यतनं.....

जय जय श्री संभव जिनवर ने, असंभव को संभव करके,
श्री मोक्ष पुरुषारथ सिद्ध किया, प्रभु मुक्ति प्रिया को वर करके।

निचले ग्रैवयक को तज करके, श्रावसती पुरी में जन्म लिया,
पितु दृणरथ मात सुषेणा को, जिनराज आपने धन्य किया ॥1॥
तप्तायमान जो हेमप्रभा, प्रभु कांति उसी को जीत रही,
फिर भी कोटी सूरज चंदा की कांति प्रभू से हार गई।
व्यजन तन इक सहस बसु हैं शक्ती त्रिभुवन में उत्तम है,
इतने ही नेत्र बना निरखे, सुरपति कहते सर्वोत्तम हैं ॥2॥
शत चार धनुष तन तुंग प्रभो, त्रिभुवन भी पूजा करता है,
वह एक सहस अठ नामों से, सुरपति नित अर्चा करता है।
वह तांडव नृत्य करे मुंद हो, इतने ही शरीर बना करके,
भव एक करे जिन भक्ती से, सम्यकत्व सहित हर्षा करके ॥3॥
सब इन्द्र और अहिमिंन्द्रादिक में जितनी शक्ति रहती है,
उसको कर वार अनंतगुना जितनी भी शक्ति बनती है।
उतनी शक्ति जिन वाम हस्त कनिष्ठा ऊंगली में बसती है,
त्रिभुवन में ये शक्तिशाली, जिनवाणी माता कहती है ॥4॥
फाल्गुन शुक्ला अष्टम तिथि थी, माता उर आन पधारे थे,
कार्तिक शुक्ला पन्द्रस को प्रभु, पृथ्वी तल पर अवतारे थे।
मगसिर सुदि पन्द्रस की तिथि को लख मेघनाश तप धारा था,
कार्तिक की वदी चतुर्थी को प्रभु केवलज्ञान को धारा था ॥5॥
प्रभु चैत्र सुदी छटवीं तिथि में सम्मेद शिखर गिर राज रहे,
था धवल कूट उत्तम मनहर, मुनि सहस समेत हैं मोक्ष गये।
नौ कोड़ाकोड़ि बहत्तर लख, व्यालिस हजार मुनि पांच शतक,
इतने मुनि मोक्ष गये यहाँ से, सब को बंदू त्रय योग सहित ॥6॥
जिन चरण कमल की भक्ति करूं ये भक्ति सदा सुखदाई है,
भक्ति में शक्ति रहती है अघ हरण करण सुखदाई है।

सुरपतिभक्तीकरते जिनकी, उनकीभक्तीकी शक्ति नहीं,
फिर भी बालकवत् करता हूँ, जिन नाथ आपकी भक्ति यहीं ॥7॥
प्रभु भक्ती से शक्ती पाकर, भव भ्रमण पंच का नाश करूँ,
पद पंच परम पद पाकर के, मैं पंचगति को प्राप्त करूँ।
रतनत्रय पूर्ण विकसित करके मैं आतम को परमात्म करूँ,
सब कर्म प्रपंच को धो डालूँ ऐसी मैं भक्ती प्राप्त करूँ ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– जिनपूजा से शांत हो, रोग शोक भय व्याधि।
त्रिभुवन की संपति मिले, मिटे कर्म की उपाधि॥

इत्याशीर्वादः।

श्री दीपावली पूजन

रचयिता–प्रवीण चन्द्र जैन शास्त्री–हस्तिनापुर

स्थापना–गीता छन्द

जिन घातिया को घात कर, कैवल्य ज्योती को जला।
लक्ष्मी द्विविध संयुक्त कर के, सरस्वती पूजूँ सदा॥
गुरुगणपती गौतम गुरुमय, वीर आराधन करें।
दीपक जला कर ज्ञानयुत, दीपावली पूजन करें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र गौतमगणेश समवशरण केवलज्ञान लक्ष्मी दिव्यध्वनि सरस्वती समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आवाहनम्।

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं स्थापनम्।

सम्यक्त्व जल ले नाथ हम, निज कर्ममल छालन करें।
इन जन्म मृत्यु निवारने को पाद प्रक्षालन करें॥
इन लक्ष्मी गौतम गुरुमय, वीर आराधन करें।
दीपक जलाकर सरस्वती, दीपावली पूजन करें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय गौतमगणेश केवलज्ञान समवशरण लक्ष्मी दिव्य ध्वनि सरस्वती सहिताय जन्म जरामृत्यु विनाशाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

दो वेदनी हैं कर्म जग में, सर्व संतापित करें।
चन्दन गुणों युत अर्चना जो, भव्य का आतप हरें॥
इन लक्ष्मी०॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय गौतमगणेश केवलज्ञान समवशरण लक्ष्मी दिव्य ध्वनि सरस्वती सहिताय भव आताप नाशाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य में हैं जीव जितने, कर्म ने सब क्षत किये।
अब जो कृपा प्रभु पा गये हैं वे सभी अक्षत हुये॥
इन लक्ष्मी०॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गौतम गणेश केवलज्ञान समवशरण लक्ष्मी दिव्यध्वनिसरस्वती सहिताय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कर पुष्प शस्त्र प्रहार रतिपति, विश्व को आहत किया।
लेकर उसी पुनि शस्त्र से, निज काम घन घातन किया॥
इन लक्ष्मी०॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गौतम गणेश केवलज्ञान समवशरण लक्ष्मी दिव्य ध्वनि सरस्वती सहिताय कामबाण विध्न विनाशाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लेकर क्षुधा की तृप्ति हेतु, यत्न सब विधि कर चुके।
अब आश लेकर शरण आये, आप इसको हर चुके॥
इन लक्ष्मी गौतम गुरूमय वीर आराधन करें,
दीपक जलाकर सरस्वती दीपावली पूजन करें ॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गौतम गणेश केवलज्ञान समवशरण लक्ष्मी दिव्य ध्वनि सरस्वती सहिताय क्षुधा रोग विनाशनाय, नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान के दीपक जलाये, मार्ग बहु भ्रम के मिले।
आज सम्यक दीप से, मुझ ज्ञान की ज्योति जले॥
इन लक्ष्मी०॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गौतम गणेश केवलज्ञान समवशरण लक्ष्मी दिव्य ध्वनि सरस्वती सहिताय मोह महान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति सवाहा।

आप गुण युत गंध निर्मल, धूप की सुगन्धता।
खेते दशांगी गंध फैले, हो सुगन्धित दश दिशा॥
इन लक्ष्मी०॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गौतम गणेश केवलज्ञान समवशरण लक्ष्मी दिव्य ध्वनि सरस्वती सहिताय अष्ट कर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या फलों की चाहना में, पाँच परिवर्तन किये।
अब मोक्ष फल की आश लेकर, आ गये प्रभु पद ढिये॥
इन लक्ष्मी०॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गौतम गणेश केवलज्ञान समवशरण लक्ष्मी दिव्य ध्वनि सरस्वती सहिताय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख प्राप्ति हेतू अघ किये, उनकी अहो ! गिनती कहाँ?
उनके विनाशन हेतू भगवन, अर्घ्य ले आये यहाँ॥
इन लक्ष्मी०॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गौतम गणेश केवलज्ञान समवशरण लक्ष्मी दिव्य ध्वनि सरस्वती सहिताय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान का अर्घ

नरेन्द्र छन्द

कार्तिक कृष्ण अमावश का जब, ब्रह्म महूरत आया।
तभी अघाती कर्मनाश प्रभु, मोक्ष परम पद पाया॥
पावापुर उद्यान सरोवर, पूजूँ दीप जला के।
वीर महा अतिवीर जिनेश्वर, संमति पद मन ला के॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कार्तिककृष्णअमावश्यायां पावापुरी उद्यानात् मोक्षकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गौतम स्वामी का अर्घ

गौतम स्वामी चरण कमल का, मिल करके सब ध्यान करें।
वे गण नायक शिक्षा दायक, विपद नाश कल्याण करें॥
जल चंदन अक्षत द्रव्य मिलाकर अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य किया।
केवलज्ञानी गुरु गणेश के, पाद पद्म में चढ़ा दिया॥

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णा अमावश्यां अपराह्न काले केवलज्ञान प्राप्ताय गौतम गणधराय सर्व विघ्न विनाशनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्रों का अर्घ

तर्ज–(हे दीनबन्धुश्रीपति करुणानिधान जी)

श्री आदि जिन कैलास से हैं मोक्ष पधारे,
वसुपूज्य ने चम्पापुरी से कर्म संहारे।
श्रीनेम ने गिरनार से शिवधाम को पाया,
जिन बीस ने सम्मेद से भव धाम नशाया ॥1॥

पावापुरी उद्यान से, लोकाग्र पे गये,
होकर के वर्धमान वे त्रिभुवनपती भये।
इन ढाई द्वीप की सभी निर्वाण भूमियां,
कुल एक सौ सत्तर कहीं हैं कर्म भूमियाँ ॥2॥

इनके सभी निर्वाण क्षेत्र को त्रिधा नमूँ।
ले अष्ट द्रव्य आदि से पूजूँ सदा नमूँ ॥3॥

ॐ ह्रीं ढाई द्वीपस्थ त्रैकालिक निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ

तर्ज–(ज्योति से ज्योति जगाते चलो.....)

जिन मुख गंगा नहाते चलो, ज्ञान की ज्योती जलाते चलो।
प्रथम करणं चरणं द्रव्यं चार रूप है ज्ञान मयी।

दिव्य ध्वनी ॐकार रूप है, नमो शारदा मोक्ष मही।
हाथ में ले के कंचन की थाली, वसुद्रव्यों से पूजन रचाते चलो॥
जिन मुख.....

ॐ ह्रीं श्री वद् वद् वाग्वादिनि जिनमुखोद्भव भगवती सरस्वती देव्यैह्रीं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री केवली ज्ञान समवशरण लक्ष्मी का अर्घ

परमज्योति से दीपक तिहुँ जग सकल कला गुण मंदिर है।
त्रैकालिकपर्याय अनंतों, झलकाता नित दर्पण है॥
स्वर्ग लोग की अतुल सम्पदा, जिनके चरणों में रहती।
ऐसी पद्मा के पद पद्मों, सब पदमायें नत रहतीं॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञान अतिशय सम्पन्न समवशरण लक्ष्मी देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

तर्ज–होठों से छू लो तो मेरा गीत अमर कर दो.....

ये दीप जला कर हम जगरीत अमर कर दें।
महावीर के चरणों की यह प्रीत अमर कर दें॥टेक

ऊषा की बेला में पावापुरी सरवर से,
देखो मोक्ष गये भगवन् कर्मों को जला करके।
वे वीर हरें भव पीर, सुख सीर जग भर दें,
महावीर के चरणों की यह प्रीति अमर कर दें ॥1॥

जब उर्ध्व गमन कर के, प्रभु प्राप्त किया शिव को,
हुआ केवल ज्ञान तभी, श्री गौतम गणधर को।
तव सुर कृत दीप जले जग को जगमग कर दें,
महावीर के चरणों की यह प्रीति अमर कर दें ॥2॥

भवि मोक्ष गये जितने उन सबको वंदन है,
जाते हैं जायेंगे सबका अभिनन्दन है !
जहाँ जहाँ से मोक्ष गये वहाँ को भी नमन कर दें,
महावीर के चरणों की यह प्रीति अमर कर दें ॥3॥

कैलाश वृषभ जिनका, वसुपूज्य का चम्पापुर,
गिरनार है नेमी का, संमति का पावापुर।
गये बीस जिनेश्वर जी, सम्मेद शिखर गिर तें,
महावीर के चरणों की यह प्रीति अमर कर दें ॥4॥

जो सिद्ध भूमियाँ हैं सिद्धी देतीं भवि को,
दीवाली कहती है पूजो सब जिनवर कों।
शत कोटि जला दीपक, भवि मोह तिमिर हर लें,
महावीर के चरणों की यह प्रीति अमर कर दें ॥5॥

मिथ्यात्व तिमिर ने ही, जग में भटकाया है,
बहु कुरीत चलाने को, भव्यों को सताया है।
सब कुरीत मिटाकर हम, जग ज्ञान ज्योति भर दें,
महावीर के चरणों की, यह प्रीति अमर कर दें ॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गौतम गणेश केवलज्ञान अनन्तचतुष्टय समवशरण लक्ष्मी दिव्यध्वनि सरस्वती सहिताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पूजा त्रिभुवन नाथ की हरे अमंगल दोष।
अनंत भव अघ नाश के, भरे सर्व सुख कोश ॥7॥

इत्याशीर्वादः।

नवग्रह अरिष्ट निवारक श्री जिन पूजा

स्थापना

तर्ज–पूजा पाठ रचाऊं.....

ॐ में गर्भित पंच परमेष्ठी, हीं में चौबीस जिनवर,
मध्य लोक के ढाई द्वीप में, ज्योतिष मेरु प्रदक्षिण।
इनके गृह जिन निलय अकृत्रिम, आगम, ग्रंथ बतायें,
इन सबकी पूजन करने से, ग्रह बाधा नश जायें॥

ॐ ह्रीं असि आउसा वृषभादि चतुर्विन्शाति तीर्थंकर नवग्रह विमान स्थित अकृत्रिम जिनालय जिनबिम्ब समूह अत्र अवतर अवतर सम्वौषट्।

ॐ ह्रीं असिआ उसा.....जिनबिम्ब समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं असिआ उसा.....जिनबिम्ब समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् स्थापनम्।

द्रव्य भावाष्टकम्

तर्ज–पूजा पाठ रचाऊँ.....

मणिमय कुंभ रतनमय झारी, तीरथ जल सुखकारी,
नवग्रह बाधा दूर करन को, धार दई गुणकारी।
पंच परमेष्ठी चौबीस जिनवर नवग्रह-जिनगृह राजें,
जो भविजन इन पूजन करते, ग्रह बाधा डर भाजे ॥1॥

ॐ ह्रीं नवग्रह अरिष्ट निवारण समर्थेभ्य असिआ उसा वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः नवग्रह विमान स्थित सर्व जिनालय जिनबिम्बेभ्यः जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

ग्रह चाल और अशुभ करम मिल दौनों आन सताते,
चंदन से जिनवर की पूजा, करते अघ नश जाते।
पंचपरमेष्ठी चौबीस.....॥2॥

ॐ ह्रीं नवग्रह अरिष्ट निवारण समर्थेभ्य आसिआ उसा वृषभादि चतुर्विन्शति तीर्थंकरेभ्यः नवग्रह विमानस्थित सर्वजिनालय जिनबिम्बेभ्यः भवाताप नाशाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिस जिस सुख की इच्छा करते, खंड-खंड हो जाते,
सुख अखण्ड की इच्छा हेतू शाली पुंज चढ़ाते।
पंचपरमेष्ठी चौबीस.....॥3॥

ॐ ह्रीं नवग्रह अरिष्ट निवारण समर्थेभ्यः असिआ उसा वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नवग्रह विमान स्थित सर्व जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अक्षय सौख्यकाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पारिजात मंदार मनोहर, अवनि तरु सुर सुमना,
काम बाण के नाश करन को, पूंजू जिन पद सुमना।
पंचपरमेष्ठी चौबीस.....॥4॥

ॐ ह्रीं नवग्रह अरिष्ट निवारण समर्थेभ्यः असिआ उसा वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नवग्रह विमान स्थित सर्व जिनालय जिनबिम्बेभ्यः कामविघ्न शांत कराय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुर सरस षट् रस के व्यंजन, तनिक क्षुधा हरते हैं,
पूर्ण क्षुधा के नाशन हेतु, पूजा हम करते हैं।
पंचपरमेष्ठी चौबीस.....॥5॥

ॐ ह्रीं नवग्रह अरिष्ट निवारण समर्थेभ्यः असिआ उसा वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नवग्रह विमान स्थित सर्व जिनालय जिनबिम्बेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अन्धेरा तिहुंजग छाया, मोह माया में भटके,
श्री जिनवर की दीपक पूजा, मेटें सबके खटके।
पंचपरमेष्ठी चौबीस.....॥6॥

ॐ ह्रीं नवग्रह अरिष्ट निवारण समर्थेभ्यः असिआ उसा वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नवग्रह विमानस्थित सर्व जिनालयजिनबिम्बेभ्यः मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर चूर्ण मलियागिर चंदन, धूप सुगंधित लेऊं,
जिन मंदिर में धूप जला कर, पाप भस्म कर देऊं।
पंचपरमेष्ठी चौबीस.....॥7॥

ॐ ह्रीं नवग्रह अरिष्ट निवारण समर्थेभ्यः असिआ उसा वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नवग्रह विमान स्थित सर्व जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अष्ट कर्म विनाशाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के अवनि तरु के, सरस मधुर फल लाऊं,
अष्टम पृथ्वी प्राप्त करन को, जिन पद आन चढ़ाऊं।
पंचपरमेष्ठी चौबिस जिनवर, नवग्रह जिनगृह राजें,
जो भविजन इन पूजन करते, ग्रह बाधा डर भाजे॥8॥

ॐ ह्रीं नवग्रह अरिष्ट निवारण समर्थेभ्यः असिआ उसा वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नवग्रह विमान स्थित सर्व जिनालय जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत सुम चरुवर, दीप धूप फल लाकर,
बीन बजाकर नृत्य कराकर, अर्घ्य चढ़ाऊं आकर।
पंचपरमेष्ठी चौबीस.....॥9॥

ॐ ह्रीं नवग्रह अरिष्ट निवारण समर्थेभ्यः असिआ उसा वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नवग्रह विमानस्थित सर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– ध्यान सलिल से जिन किया, कर्म मल प्रक्षाल।
उन पद जल की धार दे, शांत करूं भव जाल॥
शांतये शांतिधारा।
आत्म सुगंधी को लिया, मोक्ष तरु विकसाय।
पुष्पांजलि उन पद करूं, मन में अति हर्षाय॥
पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ प्रत्येक अर्घ

1. रविग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ

सिद्ध परमेष्ठी उर्ध्वलोक में, अनंतानंत विराजें,
रविग्रह के बिम्बों के मधि में, जिनगृह बिम्ब विराजें।

पद्म प्रभू जिनराज पूजने काज मैं अर्घ्य चढ़ाऊं,
रवि अरिष्ट के नाश करन को, पूजा आप रचाऊं॥1॥

ॐ ह्रीं रविग्रह अरिष्ट निवारक णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठी श्रीपद्म प्रभु जिनेन्द्र रविबिम्बेषु स्थित सर्व जिनालय जिनबिम्बेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

2. चन्द्रग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ

श्री अरिहंत जिनेश्वर जग में चन्द्र अरिष्ट निवारें,
चन्द्र प्रभू के चरण कमल भी, सब दुःख संकट टारें।
चन्द्र विमान असंख्यातों में, जिनवर बिम्ब विराजे,
बसु विध द्रव्य सजा कर पूजें, विघ्न निकट नहीं आवें॥2॥

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रह अरिष्ट निवारक णमो अरिहंताणं अरिहंत परमेष्ठी श्री चन्द्र जिनेन्द्र असंख्यात चन्द्र विमान स्थित सर्व जिनालय जिनबिम्बेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

3. मंगलग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ

तर्ज–हे वीर तुम्हारे द्वारे पर.....

श्री सिद्ध परमेष्ठी भविजन के मंगल अरिष्ट को नाशे हैं,
श्री वासुपूज्य भगवान सदा, सबको सुख शांती बांटें हैं।
मंगल विमान हैं असंख्यात, उनमें जिनगृह जिन प्रतिमायें,
बसु मंगल द्रव्य मिला पूजें, मंगल अरिष्ट सब नश जायें॥3॥

ॐ ह्रीं मंगलग्रह अरिष्ट निवारक णमो सिद्धाणं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र असंख्यात मंगलग्रह विमान स्थित सर्वजिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

4. बुधग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ

श्री विमल अनंत धर्म शांती, अरु कुंथु अर नमि वीर प्रभो,
ये अष्ट जिन पाठक गुरुवर, बुध अरिष्ट नाशने समर्थ विभो।

ये अंख्यात बुध ग्रह विमान, जिनगृह इन सबमें राज रहे,
सबमें हैं एक सौ अठ प्रतिमा, पूजन से पातक भाज रहे॥4॥

ॐ ह्रीं बुधग्रह अरिष्ट निवारक णमो उवज्झायाणं श्री विमलानंत धर्मशांति कुंथु अरनमिवीर अष्ट जिनेभ्यो असंख्यात बुधग्रह विमान स्थित सर्वजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

5. गुरु ग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ

श्री आदि अजित संभव अभिनंदन सुमति सुपारसनाथ प्रभो,
श्री शीतलनाथ श्रेयांस जिनेश्वर, श्री आचार्य परमेष्ठिविभो।
जोअसंख्यात गुरुग्रह मानें ये मध्यलोक में राज रहे,
सबमें जिनगृह शत अठ प्रतिमा, पूजन से भविजन पाप दहे॥5॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रह अरिष्ट निवारक णमो आयरियाणं श्री आदि अजित संभव अभिनंदन सुमति सुपार्श्व शीतल श्रेयांस अष्ट जिनेभ्यो असंख्यात गुरु ग्रह स्थित सर्व जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

6. शुक्रग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ

तर्ज–नाम तिहारा तारन हारा.....

शुक्रग्रह का अरिष्ट विनाशे, श्री अरिहंत जिनेश्वर,
पुष्पदंत भगवान कहे हैं, लोकोत्तम परमेश्वर।
मध्यलोक में शुक्रग्रह के, विमान असंख्य बताये,
बसु विध अर्घ्य चढ़ा जिन पूजें, विघ्न निकट नहीं आये॥6॥

ॐ ह्रीं शुक्रग्रह अरिष्ट निवारक णमो अरिहंताणं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र असंख्यात शुक्रग्रह विमान स्थित सर्व जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

7. शनिग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ्य

सर्वसाधु परमेष्ठी जग में, शनि अरिष्ट के घाता,
इस अरिष्ट के नाशन हेतु, मुनिसुव्रत जिन ख्याता।
मध्य लोक में शनीग्रह के, विमान असंख्य बताये,
बसु द्रव्यों से जिनगृह पूजें, शनि अरिष्ट मिट जाये॥7॥

ॐ ह्रीं शनिग्रह अरिष्ट निवारक णमो लोए सव्वसाहूणं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्र असंख्यात शनि विमान स्थित सर्वजिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

8. राहू ग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ

गीता छन्द– राहू ग्रह का अरिष्ट नाशें सर्व साधु मुनीश्वरा,
श्री नेमनाथ जिनेन्द्र जग में, इष्ट हेतु जिनेश्वरा।
मधिलोक में राहू ग्रह के, असंख्यात विमान हैं,
जो जजत जिन बसु द्रव्य लेकर, होत अघ की हानि है॥8॥

ॐ ह्रीं राहूग्रह अरिष्ट निवारक णमो लोए सव्व साहूणं श्री नेमनाथ जिनेन्द्र असंख्यात राहूग्रह विमान स्थित सर्व जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

9. केतु ग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ

केतु ग्रह का अरिष्ट नाशन, हेतु जिन मुनिराज हैं,
श्रीमल्लि पार्श्व जिनेन्द्र जग में अरिष्ट नाशन ख्यात हैं।
सब केतु ग्रह के विमान मधि में, असंख्यमान प्रमाण हैं,
सबमें जिनेश्वर बिम्ब राजें, करत अघ की हानि हैं ॥9॥

ॐ ह्रीं केतु ग्रह अरिष्ट निवारक णमो लोए सव्व साहूणं श्री मल्लिपार्श्व जिनेन्द्र असंख्यात केतुग्रह विमान स्थित सर्व जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–नवग्रह अरिष्ट विनाशने, जिनपूजा है समर्थ।
पंचगुरु चौबीस जिन, जिग्रह बिम्ब तदर्थ ॥1॥

गीता छन्द–सब जीव ओ अजीव मिलकर बन रहा संसार है,
होते उपकृत परस्पर मिल, सूत्रग्रंथ आधार है।
त्रैलोक के मधि लोक में जो ढाई द्वीप विख्यात है,
है द्वीप जम्बू धातकी पुष्कर जो अर्ध प्रमात है ॥2॥

नर लोक पितालिस लक्ष योजन भ्रमण ज्योतिष चक्र का,
जो सूर्य चन्द्र नक्षत्र तारे, ग्रह आदिक भ्रमण का।
ये पंच मेरु द्वीप ढाई परिक्रमा इनकी करें,
इनके भ्रमण दिन रात होते, पंच भरत ऐरावतें ॥3॥

हैं द्वीप ढाई बहिर स्थिर ज्योतिषी के विमान हैं,
होते नहीं दिन रात वहं पर, जन्म नर नहीं आन हैं।
रवि चन्द्र मंगल बुध गुरू शुक्र, शान के ग्रह कहे,
राहू व केतु नव ग्र मधिलोक तक फैले रहे ॥4॥

मधिलोक तक प्रत्येक ग्रह की गणन असंख्य प्रमाण है,
इनके विमानों में हैं शास्वत जिन निलय सुख खान हैं।
प्रति निलय जिनवर चैत्य इक शत आठ मणिमय सुख भरें,
उनके जिनालय बिम्ब पूजें, सर्वदुख संकट हरें ॥5॥

दुर्योग कर्म संयोग से नर लोक में इन चाल से,
होते प्रभावित मनुज भविजन, दुक्ख पाते काल से।

कुछ डिगें जिनवर धर्म से भी, कुछ मरें यहां अकाल से,
अतऐव जिनवर बिम्ब पूजा ही बचावे चाल से ॥6॥

ये पंच गुरु चौबीस जिन, गृह बिम्ब सुखकर हैं सदा,
नाशें नवग्रह अरिष्ट जग में, दे ये शिव सुख भी सदा।
अरिहंत जिनवर अरिष्ट नाशें, चन्द्र का ओ शुक्र का,
श्री सिद्ध परमेष्ठी विनाशे, अरिष्ट रवि ओ भौम का ॥7॥

आचार्य गुरु का अरिष्ट नाशें, पाठक गुरु बुध का हरें,
जिन साधु हरते शनि व राहू, केतु का दुष्कृत हरें।
जिन पद्मप्रभु रवि का अमंगल चन्द्र प्रभ जिन चन्द्र का,
बसुपूज्य मंगल का अमंगल, पुष्पदंत जिन शुक्र का ॥8॥

मुनिसुव्रत शनि अरिष्ट नाशें, नेम जिन प्रभु राहु का,
मल्लिजिन पारस जिनेश्वर, केतु ग्रह के अरिष्ट का।
श्री विमल अनंत अरु धर्म शांती कुंथु अर नमिवीर जी,
सब बुध ग्रह का अरिष्ट नाशें, करें मंगल धीर जी ॥9॥

वृषभेश से सुमती सुपारस और शीतल श्रेय जिन,
ये अष्ट जिन गुरु कष्ट नाशें पूज देते सौख्य तिन।
नव नव ग्रह के विमान में जो, असंख्य जिनग्रह बिम्ब हैं,
उन पूजते तत् कष्ट नाशें, जिन गृह के बिम्ब हैं ॥10॥

जब हों नवग्रह कष्टकारी, भक्ति से पूजा करो,
कर ध्यान वंदन आरती, नित सौख्य मंगल विस्तरो।
जिन द्वादशांगी अंग में जो, पूर्व कृत इक अंग है,
है ज्ञान प्रश्न व्याकरण में, वर्णन कहा जिन गंग में॥11॥

दोहा– श्री भद्रबाहु श्रुत केवली, कथित ये वर्णन ठाट।
अतः ग्रहन जिनपूजता, सम्यकता का पाठ ॥12॥

ॐ ह्रीं नवग्रह अरिष्ट निवारण समर्थेभ्य असिआ उसा वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः नवग्रह विमान स्थित सर्व जिनालय जिनबिम्बेभ्यः नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पाप कर्म संयोग से प्रगटें विघ्न अनेक।
जिन पूजा से शांत हों, प्रगटे पुण्य विवेक ॥13॥

इत्याशीर्वादः।

सलूजा पर्व पूजा

स्थापना–अडिल छंद

रक्षाबंधन पर्व सलूना जानिये,
अकम्पनाचार्य सात सौ मुनिवर मानिये।
विष्णुकुमार मुनी को सब मिल पूजिये,
धर्म का रक्षा सूत्र परस्पर बांधिये॥

दोहा– श्री श्रुत सागर सूरि का माने सब उपकार।
श्री पुष्पदंत क्षुल्लक बने, रक्षा में आधार॥
सम्यग्दर्शन अंग का, वत्सल भाव महान।
विष्णु मुनी रक्षा करी, पर्व चला ये जान॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अकम्पनाचार्य श्रुतसागराचार्यादि सप्त शत मुनि समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट्....।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णु.....मुनि समूह....अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णु.....मुनि समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्....।

द्रव्य भावाष्टकम्

तर्ज–सुनिये जिन अरज हमारी.....

अमृत जल स्वर्ण कलश में, त्रयधार करूं गुरु पद में।
यह त्रय विध दोष नशाती, मुक्ती में शीघ्र लगाती।।
मुनि सातशतक अग्नी से, मुनि विष्णु बचाये विधि से।
सो पर्व सलूना पूजा, पूजा सम पुण्य न दूजा ॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अंकपनाचार्य श्रुतसागराचार्यादि सप्तशत मुनिभ्यो जन्म जरा मृत्यु शांत कराय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो हेमवरण सम सोहे, चंदन नंदनवन होहै।
सो सब विध ताप दहंता, पूजूं जिन सम मुनि संता॥
मुनि सात शतक..... ॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अंकपनाचार्य श्रुतसागराचार्यादि सप्तशत मुनिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो श्वेत सुगंधित नीके, अक्षत सब विध अवनी के,
सो अक्षय पाप नशावें, गुरु चरण कमल जो जावें।
मुनि सात शतक..... ॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अंकपनाचार्य श्रुतसागराचार्यादि सप्तशत मुनिभ्यो अक्षय पाप विनाशनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु पुष्प सुगंधित महकें, पुष्पांजलि गुरु पद देके,
कामादिक दोष नशाऊं, शीलादिक धर्म बड़ाऊं
मुनि सात शतक..... ॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अंकपनाचार्य श्रुतसागराचार्यादि सप्तशत मुनि चरणेभ्यो: शीतगुण प्राप्ताय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु विध पकवान नवीने, आतम अमृतगुण भीने,
गुरु पद में नेवज धरिये, सब व्याधि क्षुधा की हरिये।
मुनि सात शतक अग्नी से, मुनि विष्णु बचाये विध से,
सो पर्व सलूना पूजा, पूजा सम पुण्य न दूजा ॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अंकपनाचार्य श्रुतसागराचार्यादि सप्तशत मुनि चरणेभ्यो: आत्मतृप्ति प्राप्ताय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक, गुरु आरति करिये, सुज्ञान की ज्योती भरिये,
अज्ञान तिमिर सब नाशे, मम केवल ज्ञान प्रकासे।
मुनि सात शतक..... ॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अंकपनाचार्य श्रुतसागराचार्यादि सप्तशत मुनि चरणेभ्यो: केवलज्ञान प्राप्ताय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

दश विध की धूप सुलेके, त्रय विध अग्नी में खेके,
सब विध मम कर्म जलाऊं, निज आतम गुण महकाऊं।
मुनि सात शतक..... ॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अंकपनाचार्य श्रुतसागराचार्यादि सप्तशत मुनि चरणेभ्यो: सिद्धाष्ट गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले सरस मधुर फल ताजे, गुरु के पद कंज विराजे,
फल पूजा शिव फल देती, मिथ्या भव फल हर लेती।
मुनि सात शतक..... ॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अंकपनाचार्य श्रुतसागराचार्यादि सप्तशत मुनि चरणेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल से फल तक सब लीजे, सो रत्नन थाल धरीजे,
गुरु चरणन निकट चढ़ावे, सो स्वयं अनर्घ पद पावे।
मुनि सात शतक..... ॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अंकपनाचार्य श्रुतसागराचार्यादि सप्तशत मुनि चरणेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांती धारा– अशांती जगत ताप सबको सताते,
त्रिधारा करें वे महा शांति पाते।
गुरु पाद पंकज गुरु हैं जगत में,
जजें जे गुरु वे बने गुरु भी सच में॥
शांतये शांतिधारा।

कर अंजली से करो पुष्प धारा,
गुरु ने सभी को भवोदधि से तारा।
महके निजात्मा भी, निज के गुणों से,
बनूं मैं गुरु सा गुरु के गुणों से॥
दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ प्रत्येक अर्घ

श्री विष्णु कुमार मुनिराज का अर्घ

तर्ज–हे! वीर तुम्हारे.....

श्री शांतिकुंथ अर वंश में जन्मे, महापद्म के पुत्र महान,
यौवन में जिन दीक्षा लेकर, तप से विक्रिया वरी महान।
अकम्पन सूरी सप्तशत मुनिवर गजपुर रक्षाकरी सुजान,
अर्घ्य चढ़ाय इन ऋषीराज को, पूजूं रक्षाबंधन जान॥

ॐ ह्रीं वामनावतार श्री विष्णुकुमार मुनिराजाय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अकम्पनाचार्य आदि सात सौ मुनियों का अर्घ

ज्ञान ध्यान तप के अनुरागी, घोर उपसर्ग विजेता,
श्री अकम्पनाचार्य सातशत मुनि जिन तप के नेता।
सब मुनियों के अर्घ्य चढ़ाकर पूजूं वंदू ध्याऊं,
उनके जैसी शक्ति प्राप्त हो, यही भावना भाऊं॥

ॐ ह्रीं अकम्पनाचार्यादि सप्तशत मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रुत सागर आचार्य का अर्घ

श्रुत सागर आचार्य से दीक्षा, विष्णु कुमार ने पाई,
मुनि रक्षा की जुगत गुरु ने, क्षुल्लक जी को बताई।
धीर वीर हैं परम तपस्वी, श्रुत सागर जी सूरी,
अर्घ चढ़ाकर पूजूं गुरु को, बांछा सबकी पूरी॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतसागर सूरीवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदंत क्षुल्लक जी का अर्घ

आकाश गामिनी विद्याधारी, पुष्पदंत क्षुल्लक गुणरास,
विद्याबल उपसर्ग निवारण, हेतु गये विष्णू मुनि पास।
ऐसे क्षुल्लक गुणधारी को, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाय,
मिले प्रेरणा आपके जैसी, ताते धर्म का विघ्न पलाय॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत क्षुल्लकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांति कुंथु अर वंश जिन, हुये विष्णु भगवान।
सात शतक रक्षा करी, प्रगटा पर्व महान ॥1॥
मेरु सुदर्शन पर धरा, प्रथम पद का चाप।
मनुजोत्तर पर दूसरा, हरा पाप का शाप ॥2॥

तर्ज–हे वीर तुम्हारे द्वारे पर.....

इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, आर्यखंड इक माना है,
इसमें कुरुजांगल देश एक, जिन धर्म का एक खजाना है।
था स्वर्ग से सुन्दर नगर यहां, जो गजपुर नाम से शोभित था,
श्री ऋषभदेव की पारणा से, ये अनेक गुणों से मंडित था ॥3॥
श्री शांतिकुंथु अरजिनवर के, थे चार चार कल्याण हुए,
इनके ही वंश शिरोमणि में, श्री विष्णुमुनी भगवान हुए।
इस नगर हस्तिनापुर में ही, इक महापद्मजी राजा थे,
अपने सुत पद्मराज को देकर, राज बने मुनिराजा थे ॥4॥
उनके मंत्री जिनवृष द्वेषी, बलि बृहस्पति नमुचि प्रहलाद हुए,
छल से नृपके अरि को जीता, अरु वर की धरोहर प्राप्त किये।
इक समय अकम्पनाचार्य आदि सप्त शत मुनिवर गजपुर आये,
उद्यान में आकर ठहर गये, जन दर्शन करके हर्षाये ॥5॥
वे मंत्री पूर्व अपमानित थे, नृप से अपना वर मांग लिया,
फिर सात दिवस का राज लिया, पशु यज्ञ रचा उपसर्ग किया।

उन दुष्टों ने जिन मुनियों को सब तरफ अगनि से घेर लिया,
पशु होम किया नानाविध से, मुनियों को अतिशय कष्ट दिया ॥6॥
दश दिश में हा हाकार मचा, परजा में दुक्ख अपार हुआ,
उपसर्ग दूर होने तक का, सबने कुछ ना कुछ त्याग किया।
उस तरफ मिथला नगरी में, आचार्य श्रुत सागर मुनिवर,
क्षुल्लक जी सह तप तपते थे, उस अर्ध रात्रि में भी गुरुवर ॥7॥
नक्षत्र श्रवण कम्पायमान, हो गया तभी नभ आंगन में।
गुरु मुख से हा हाकार हुआ, अति क्षोभ हुआ उनके मन में,
क्षुल्लक जी ने पूछा गुरु से, क्यों हा हाकार हुआ मुख से,
उपसर्ग हो रहा गजपुर में, मुनि अग्नि जल रहे हैं इससे ॥8॥
उपसर्ग निवारण कैसे हो वह युक्ति कहो अतिशीघ्र अभी,
हुई ऋद्धि विक्रिया मुनि विष्णू, हर सकते हैं वे कष्ट सभी।
श्री पुष्पदंत थे क्षुल्लक जी, आकाशगमन विद्या धारी,
पहुंचे धरणी भूषण गिर पर, जहाँ विष्णु मुनि विक्रिया धारी ॥9॥
बोले त्रयबार नमोऽस्तु प्रभो, अब कृपा करो अब कृपा करो,
अपनी विक्रिया ऋद्धी द्वारा, मुनियों का सब उपसर्ग हरो।
मुनिराज श्री विष्णूकुमार ने, निज कर को जब फैलाया,
वह लवणोदधि तक जा पहुंचा, क्षुल्लक जी का मन हर्षाया ॥10॥
इक क्षण में गजपुर जा पहुंचे, निज भ्रात को जा धमकाया है,
तुमने कुल वंश परम्परा को, क्यों करके कलंक लगाया है।
श्री शांति कुंथु अरके वंशज, हो करके पाप कमाया है,
जो हुआ कभी ना अब तक था, वह आज सामने आया है ॥11॥

प्रभु क्षमा करो, प्रभु क्षमा करो, मैंने वचनों को हारा है,
मैं तो कुछ भी न कर सकता, अब आपका एक सहारा है।
यह सुनकर श्री विष्णु कुमार, मुनि बामन रूप को धार लिया,
राजा बलि सन्मुख पहुंच गये पग तीन पृथ्वी का वचन लिया ॥12॥

फिर विक्रिया ऋद्धी के द्वारा निजतन को अतिश्य बड़ा लिया,
पहला पग मेरु सुदर्शन पर, दूजा मनजोत्तर मांहि दिया।
दो पग में मनुज लोक नापा, सर्वत्र लोक में क्षोभ हुआ,
ज्योतिषी देवों के विमानों का, नभ में, भी तब संघट्ट हुआ ॥13॥

प्रभु त्राहिमाम्, प्रभ्रत्राहि माम्, का शब्द चहुं दिश व्याप्त हुआ,
तीजे पग की फिर जगह न थी, देवों ने बलि को बांध लिया।
उपसर्ग किया फिर दूर तभी, सब लोक में क्षेम अपार हुआ,
तब चैन की सांस ली सबने, विष्णू कुमार मुनि पूज्य किया ॥14॥

मुनियों के कंठ थे रुधे हुये, दुर्गंधित धूम पदार्थों से,
आहार दिया तब श्रावकों ने, सेवई औ मिष्ट पदार्थों से।
जिस गृह में मुनिवर नहीं पड़गे, परस्पर में भोज दिया मिलकर,
बांधा फिर रक्षा सूत्र सभी, इक दूजे ने कर में मिल कर ॥15॥

इस तरह रक्षाबंधन का, है पर्व चला इसी ही दिन से,
रक्षा करें धर्मायत्नों की, है यह संकल्प हुआ इस से।
हम भी ऐसा संकल्प करें, वात्सल्य अंग को अपनावें,
प्रवीन चन्द्र मुनि पूजा से, नित नित नव नव मंगल आवें ॥16॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार अकम्पनाचार्य श्रुत सागराचार्यादि सप्तशत मुनि चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– रक्षाबंधन पर्व की पूजा परम पुनीत।
जग जीवन कल्याण हित, रूचि से करो सुनीत॥
रक्षा वामन विष्णुकर, भये पुनः वे मुनीश।
कर्म कुलाचल चूर के गये लोक के शीश॥

इत्याशीर्वादः।

दश लक्षण पर्व पूजा

स्थापना

तर्ज–हे वीर तुमारे द्वारे पर.....

जो आत्मा का है स्वभाव कहा, वह दश लक्षण से जाना है,
वह उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच ओ सत्य बखाना है।
संयम तप त्याग है आकिंचन से ब्रह्मचर्य दश नाम धरें,
इनकी पूजा जो करते हैं, वे निज आतम परमात्म करें॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दश धर्म समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आवाहनम्।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दश धर्म समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दश धर्म समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्य भावाष्टकम्

तर्ज–पूजा पाठ रचाऊं मेरे भगवान.....

रत्न जड़ित कंचन की झारी तीरथ नीर भरी है।
क्षमा धरम की प्राप्ती हेतू निर्मल धार करी है।

उत्तम क्षमा से ब्रह्मचर्य तक, धर्म दश विध जानो,
जो जन इन धारण करते हैं, शिवपुर जाते मानों ॥1॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दश धर्मेभ्यो क्रोधानल कषाय विमुक्ताय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल शीतल द्रव्य सुगंधित, चंदन कर्पूर मिलाऊं,
मान हरन मार्दव गुण पाने, पूजा आन रचाऊं।
उत्तम क्षमा से..... ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिक दश धर्मेभ्यो मान कषाय विमुक्ताय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

धवल अखंडित अक्षत कितना मायाचार रहित है,
सरल स्वभावी आर्जव गुण युत पूजा करूं उचित है।
उत्तम क्षमा से..... ॥3॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादिक दश धर्मेभ्यो मायाकषाय विमुक्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष सम सत्य धर्म के, कुसुम मनोहर महके,
कुसुमावलि से पूजा करते, आत्मा गुण से महके।
उत्तम क्षमा से..... ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिक दशधर्मेभ्यो सत्यशील सुगंधी प्राप्ताय पुष्पम् निर्वपामिति स्वाहा।

शौच गुण नहीं धारण कीना, षड्रस व्यंजन खाये,
लोभ त्याग कर शौच धरन को, व्यंजन सरस चढ़ाये।
उत्तम क्षमा से..... ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिक दशधर्मेभ्यो लोभ कषाय विमुक्ताय नैवेद्यम् निर्वपामिति स्वाहा।

अज्ञान तिमिर में भटके प्राणी, संयम तनिक न धारा,
इसी हेतु घृत दीपक लेकर, ज्ञान का किया उजारा।
उत्तम क्षमा से ब्रह्मचर्यतक, धर्मदशविध जानो।
जो जन इन धारण करते हैं, शिवपुर जाते मानो ॥6॥

ॐ ह्रा श्री उत्तमक्षमादिक दशधर्मेभ्यो संयमधर्म प्रकाशाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश तप की अग्नि जला कर कर्म की धूप जलाऊं,
त्रिविध अग्नि में दश विध धूप जला निजगंधी पाऊं।
उत्तम क्षमा से..... ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिक दशधर्मेभ्यो तप धर्म प्राप्ताय धूपम् निर्वपामिति स्वाहा।

मोक्ष महाफल पाने हेतू, षड्रितु के फल लाये,
भव के कारण कर्म बीज तज, त्याग फलों ललचाये।
उत्तम क्षमा से..... ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिक दशधर्मेभ्यो संसार फल त्याग रूप मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामिति स्वाहा।

जल से फल तक द्रव्य सजाकर, उत्तम अर्घ्य बनाऊं,
आकिंचन को अर्पण करके, आकिंचन बन जाऊं।
उत्तम क्षमा से..... ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिक दशधर्मेभ्यो आकिंचन धर्म प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अष्ट धातु दश विध रत्नों का थाल अर्घ्य भरवाया,
रत्नत्रय मय तीन योग से, ब्रह्मचर्य को चढ़ाया।
उत्तम क्षमा से ब्रह्मचर्य तक धरम दश हितकारी,
सो जन इन धारण करते हैं, वरते शिवतिय प्यारी ॥10॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिक दशधर्मेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तर्ज–दुनिया में धर्म का ही सहारा.....

शीतल सुगंध मिष्ट जल से, धार मैं करूं,
क्रोधादि भाव शांत हो, ये आश मैं धरूं।
उत्तम क्षमादि धर्म कहे दश अनादि से,
धारण करें जो आत्मा छूटें फसादि से॥
शांतये शांतिधारा।

मंदार पारिजात के जो कुसम मनोहर,
कर अंजली में लेके के करूं धर्मों पे अर्पण।
ये हैं सदाबहार आत्म सार भरेंगे,
आतमा में सद्गुणों की, बहार भरेंगे॥
दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

प्रत्येक अर्घ्य

1. उत्तम क्षमा

दोहा–अप्रिय कठिन कठोर वच ज्यों दुष्टन के तीर।
क्षमा कवच पर वारिये, बनकर गुण गम्भीर॥

तर्ज–सुनिये जिन अरज हमारी.....

क्रोधानल जब जब आवे, सो आत्म स्वभाव खिपावे,
जप तप संयम बहु काजा, सो छिनक मांहि बिनसावा।
दीपायन से मुनि ज्ञानी, ते पाई नरक निशानी,
तातें समरस घट भरिये, नहीं क्षमा धरम को तजिये ॥1॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

2. उत्तम मार्दव धर्म

दोहा–मान हरन मृदुता धरन, मार्दव आत्म स्वभाव।
ज्यों क्षीरोदधि नीर है, सो ये धर्म प्रवाह॥
बसुविध जो मान हरन्ता, सो मादर्व धर्म धरंता,
यह मान महा दुख दाता, मिथ्यामति नीच कराता।
मारीचि महादुख पायो, जग वर्तन पंच करायो,
महाविष ये तातें तजिये, निज भाव मृदू बस करिये ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दव धर्माय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

3. उत्तम आर्जव धर्म

सरल भाव जो भवि करे, आर्जव ताके होय।
कपट करे धोखा करे, पशु गति निश्चय होय॥
क्यों कपट करे रे प्रानी! माया दुर्गति की खानी,
है मायाशल्य कहावे, दुख देवे, नहीं शिव पावे।
मृदुमति मुनि मायाधारी, गज बनकर ताहि निकारी,
त्रय योग सरलता धरिये, फिर विनय महातप वरिये ॥3॥

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्माय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

4. उत्तम शौच धर्म

नर तन अशुचि स्वभाव से, रत्नत्रय से शुद्ध।
लोभ पाप के बाप को, तज कर बनो विशुद्ध॥
तीरथ जल नित्य नहाये, पर तन न अशुचिता जाये।
कड़वी तुम्बी ज्यों होवे, सो नाहीं कटुकता खोवे॥

सागर पंडित इक लोभी, सब धर्म कर्म निधि खोदी।
ये लोभ महा दुख देता, सम्यक मति भी हर लेता ॥4॥
ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्माय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

5. उत्तम सत्य धर्म

हित मित प्रिय उत्तमवचन, आगम के अनुकूल।
पर पीड़न निंदा रहित, सत्य धर्म के फूल॥
जप तप बहु विधि है जोई, नहीं सत्य वरत सम कोई।
है सत्य कल्प तरुदाता, इक सत्य व्रती सब पाता॥
बसु झूठ सों नरक गया है, नारद ने स्वर्ग लिया है।
जिन सत्य धरम को जाना, सो आत्म धर्म पहिचाना ॥5॥
ॐ ह्रीं श्री सत्य धर्माय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

6. उत्तम संयम धर्म

छहों काय रक्षा करो, इन्द्रीयमन को जीत।
अणुव्रत महाव्रत भी धरो, बन संयम के मीत॥
मन इन्द्रीय लगाम लगावे, सो संयम धर्म कहावे।
बिन संयम मरे जो प्रानी, सो पावें नरक निशानी॥
पशु नरक सुरग ना मिलता, नर भव में कमल ये खिलता।
ये संयम भवदधि नौका, धर भरत चक्रि शिव पहुंचा ॥6॥
ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्माय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

7. उत्तम तप धर्म

कंचन अग्नी पाक में, तप कर हुआ विशुद्ध।
त्यों आतम द्वादश तपे, परमातम होय शुद्ध॥

सुरपति भी तप को चाहे, नर जन्म बिना नहीं पाये।
बिन तप कल्यान न होई, चाहे लाख करो कुछ कोई॥
तीर्थंकर भी जो होते, सो भी तप दीक्षा धरते।
तप बाहुबली ने कीना, हुआ केवल ज्ञान नगीना ॥7॥
ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्माय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

8. उत्तम त्याग धर्म

निज पर के उपकार हित, त्याग दान हैं चार।
चार संघ पोषें सुजन, वे त्यागी गुण धार॥
अभय औषधिऔर अहारा, है शास्त्रदान गुणसारा,
दे दान हरष मन धारे, सो निज यशकीर्ति संभारे।
इक ग्रंथ दान दे ग्वाला, बना कुंदुकुद मुनि आला,
जो दान धरम अनुरागे, सो ज्ञान बोध को पावे ॥8॥
ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्माय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

9. उत्तम आकिंचन धर्म

किंचित भी मम कुछ नहीं, ये आकिंचन भाव।
तारण हेतु समर्थ है, ये शिवपुर की नाव॥
चौबीस प्रकार परिग्रह, मत करो इनका संग्रह।
नहीं, पड़े नरक में जाना, वहाँ होगा फिर पछताना॥
जो सर्व परिग्रह त्यागें, मुनि बनकर मोक्ष को जावें।
श्री वृषभ जिन सब त्यागा, आकिंचन उनमें जागा ॥9॥
ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काम भाव का त्याग कर, ब्रह्म भाव में लाग।
ब्रह्मचर्य उत्तम कहा, जो आनंद स्वभाव॥
जो स्त्री मात्र को त्यागे, सो पूर्ण ब्रह्म श्रुत गावे,
जो पुरुष मात्र का तजना, सो ब्रह्म गुण का भजना।
निज पति पत्नी मर्यादा, सो अणु व्रत रूप कहावा,
नर नारी ब्रह्मचारी, हैं दोनौं शिवमग धारी।।
दस सहस शील प्रकारा, जो धरें लहें शिव प्यारा,
है शील समान न कोई, ये अंक शून्य सब होई ॥10॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– दश लक्षण में धर्म के, लक्षण अनंत सुजान।
परमात्म सम व्यापते, उनका मंगल गान॥

तर्ज–जैन धर्म के हीरे मोती.....

दश लक्षण की करें वंदना, पर्यूषण का अमृत पान,
आत्मविशुद्धी के हेतू हो, पंच परमगुरु आत्म ध्यान।
जप तप संयम ध्यान साधना, ये सब हेतू आत्म कल्यान,
इन सबसे शिव पथ में मिलता, शास्वत मोक्ष परम स्थान ॥1॥

कोध वैर औ द्वेष भाव, उत्पन्न न होवें आत्म में,
उत्तम क्षमा तभी होती है करुणा हो जब जीवन में।

समता सुधा पियूष पान कर, कर दें सबको अभय प्रदान,
आत्म विशुद्धी के हेतू हो, पंच परम गुरु आतम ध्यान ॥2॥

मान दंभ अभिमान त्याग कर, सरस मधुर मृदुभाव धरें,
मार्दव धर्म को धारण करके, जीवन में रस धार वरें।
जाती कुल बल रूप पूजा मद, तप ऐश्वर्य ज्ञान मद हान,
आत्म विशुद्धी के हेतू हो, पंचम परम गुरु आतम ध्यान ॥3॥

मायाचार कुटिल धोका तज, सरलवृत्ति परिणाम धरें,
निज दोषों का प्रायश्चित करके, त्रियग गति न कभी धरें।
मन वचकाय त्रियोग सरलता, विनय से आर्जव धर्म विधान,
आत्म विशुद्धी के हेतू हो, पंच परमगुरु आतम ध्यान ॥4॥

निंदा गर्हा प्राणघात युत, पर पीड़न के वचन तजें,
पैशून्य हास्य कर्कश चुगली तज, आगम के अनुकूल कहें।
सत्य वचन सम नहीं त्रिभुवन में, करता जो आतम कल्यान,
आत्म विशुद्धी के हेतू हो, पंच परमगुरु आतम ध्यान ॥5॥

लोभ परिग्रह का कारण है, यही पाप का बाप बखान,
नरकों में ये वास कराता, तज मुनि बने शौच वृष खान।
आशा तृष्णा पाप मैल हनि, शौच सलिल से करें स्नान,
आत्म विशुद्धी के हेतू हो, पंच परमगुरु आत्म ध्यान ॥6॥

प्राणी संयम इन्द्रीय संयम, नरभव में परिपूर्ण मिले,
इसको पाकर विषय वासना, तज आतम कल्यान मिले।
आत्मा तब परमात्मा बनती, होता विमल जगत कल्यान,
आत्मा विशुद्धी के हेतू हो, पंच परम गुरु आतम ध्यान ॥7॥

कर्म क्षय के हेतु जो साधन, उत्तम तप कहलाता है,
अन्तर बाहिर भेद विधि से द्वादश विध बन जाता है।
आत्मा तप से कुंदन होती, बनते पार्श्वनाथ भगवान,
आत्म विशुद्धी के हेतू हो, पंच परम गुरु आतम ध्यान ॥8॥

अंतरंग बहिरंग परिग्रह, चौबिस विध युत त्याग कहा,
स्वपर के कल्याण हेतु ही, दान चुतुर्विध धर्म लहा।
आहर औषधि ज्ञान अभय का दान देय अरु करें कल्यान,
आत्म विशुद्धी के हेतू हो पंच परम गुरु आतम ध्यान ॥9॥

शेष नहीं किंचित परिग्रह, वही अकिंचन आत्मा है,
निज को पर से पृथक बनाकर, बन जाता परमात्मा है।
आकिंचन पद पाने हेतू धर्म आकिंचन धरें महान,
आत्म विशुद्धी के हेतू हो, पंच परमगुरु आतम ध्यान ॥10॥

ब्रह्मरूप निज आतम में ही, चर्या कर ब्रह्मचर्य धरें,
रमण भाव की तजें भावना, दुर्भावों को नहीं ग्रहें।
नर नारी ब्रह्मचर्य धरम धर, पावें शीघ्र मोक्ष स्थान,
आत्म विशुद्धी के हेतू हो, पंच परमगुरु आत्म ध्यान ॥11॥

दशलक्षण की करें वंदना.....

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दश धर्मेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलि।

दोहा– दश विध पालें धर्म जो, धर्म धुरा वर वीर।
सिद्ध गुणों को प्राप्त कर होते भवदधि तीर॥

इत्याशीर्वादः।

अर्घावली

नोट—अर्घावली में प्रतिदिन चढ़ाये जाने वाले अर्घ क्रम से दिये जा रहे हैं, इन्हें इसी क्रम से चढ़ाने की परम्परा है। कहीं-कहीं पर्वों के अर्घ चौबीस तीर्थंकरों के अर्घ के बाद चढ़ाये जाते हैं।

तीस चौबीसी का अर्घ

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ्य कर में नवीना है,
पूजतां पाप छीना है, भानुमल जोर कीना है।
द्वीप अढाई सरस राजें क्षेत्र दश धा विषे छाजें,
सात शत बीस जिन राजें, पूजतां पाप सब भाजें॥

ॐ ह्रीं पंच भरत पंच ऐरावत दश क्षेत्रस्थ त्रिकाल त्रिंशत् चौबीसी सम्बन्धि सप्तशत् विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वापामिति स्वाहा।

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ

जल फल आठों द्रव्य, अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्रनहूतैं, थुति पूरी न करी है।
द्यानत सेवक जानके (हो) जग तें लेहु निकार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज हो॥

ॐ ह्रीं विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि०।

अथवा

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधर-युगमंधरबाहु-सुबाहु संजातक-स्वयंप्रभऋषभानन अनन्तवीर्य सूरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-चन्द्रबाहु-भुजंगम-ईश्वर-नेमिप्रभ-वीर-सेन-महाभद्र-देवयश-अजितवीर्येतिविंशतिविद्यमान तीर्थङ्करेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालयों का अर्घ (संस्कृत)

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकीगतान्,
वंदे भावन-व्यंतरान्-द्युतिवरान् स्वर्गामरावासगान्।
सद्गंधाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैर्,
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शांतये॥1॥

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसम्बन्धिजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निव०।

अकृत्रिम चैत्यालयों का अर्घ (हिन्दी)

जल चंदन तंदुल कुसुम अरु नेवज, दीप धूप फल अर्घ रचों,
जय घोष कराऊं बीज बजाऊं अर्घ चढ़ाऊं खूब नचूं।
बसु कोटि सुछप्पन लाख सतानवें सहस चार शत इक्यासी,
जिन गेह अकृत्रिम, तिहुं जग भीतर, पूजत पद ले अविनाशी।

ॐ ह्रीं त्रैलोक सम्बन्धि अष्टकोटि षट्पंचाशत लक्ष सत नवति सहस्र चतुशतैक अष्टाशीत-अकृत्रिम जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

नोट–यहां आगे के अर्घ्य चढ़ाने से पूर्व कार्योत्सर्ग पूर्वक णमोकार मंत्र का 9 बार जाप्य करें। कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

सिद्ध परमेष्ठी का अर्घ (संस्कृत)

गन्धाढ्यं सुपयोमधुव्रत-गणैः संगं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं रम्यं चरुं दीपकम्।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितम्॥

ॐ ह्रीं सिद्ध-चक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

सिद्ध परमेष्ठी का अर्घ (हिन्दी)

जल फल बसु वृन्दा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा,
मेटो भव फंदा सब दुख द्वंदा, हीरा चंदा तुम वंदा।
त्रिभुवन के स्वामी, त्रिभुवन नामी, अन्तर्यामी अभिरामी,
शिवपुर विश्रामी, निज निधि पामी, सिद्ध जजामी, शिरनामी॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध चक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

सोलहकारण का अर्घ

जल फल आठों दरब चढ़ाय द्यानत वरत करो मनलाय।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥
दरशविशुद्धि भावना भाय सोलह तीर्थंकर-पद-दाय।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥

ॐ ह्रीं दर्शनाविशुद्धिय्यादिषोडशकारणेभ्योऽनर्घपद प्राप्तये अर्घं.....।

पंचमेरू जिनालयों का अर्घ

आठ दरवमय अरघ बनाय 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥
पांचों मेरु असी जिन धाम, सब प्रतिमा जी को करो प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि अष्टा शीत-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वरद्वीप जिनालयों का अर्घ

यह अर्घ कियो निज-हेत, तुमको अरपतु हों।
'द्यानत' कीज्यो शिव-खेत, भूमि समरपतु हों॥
नन्दीश्वर श्रीजिनधाम बावन पुंज करों।
बसुदिन प्रतिमा अभिराम आनन्द भाव धरों॥
क्षेपक–नंदीश्वर द्वीप महान, चारों दिश सोहे,
बावन जिन मंदिर जान, सुर नर मन मोहे।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणधर्म का अर्घ

आठों दरब संभार, 'द्यानत अधिक उछाहसों।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीरत्नत्रय का अर्घ

आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूँ ॥1॥

ॐ ह्रीं सम्यक् रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व०।

(समुच्चय चौबीसी) का अर्घ

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों॥
चौबीसों श्रीजिनचंद, आनंद कंद सही।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांत-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽनर्घ पदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय॥
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलिबलि जाऊं मन बच काय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातै मैं पूजों प्रभु पाय॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति०।

श्री पद्मप्रभु भगवान का अर्घ

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज आदि मिला,
मैं अष्ट द्रव्य से पूज, पाऊं सिद्ध शिला।
बाड़ा के पद्म जिनेश, मंगल रुप सही,
काटो सब क्लेश महेश, मेरी अर्ज यही॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का अर्घ

सजि आठों दरब पुनीत आठों अंग नमो।
पूजो अष्टम जिन मीत अष्टम अवनि गमो॥
श्री चन्द्रनाथ दुति चन्द्र चरनन चन्द्र लसें।
मन वच तन जजत अमंद आत्म ज्योति जगे॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभस्वामिने अनर्घ्यप्रदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति०।

श्रीवासुपूज्य भगवान का अर्घ

जलफल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति ! निकट धरों यह लाई॥
वासुपूज्य वसुपूज-तनुज-पद, वासव सेवत आई।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यप्रद प्राप्तये अर्घं०।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ-1

जल फलादि वसु द्रव्य संवारे अर्घ चढ़ाये मंगल गाय।
'वखत रतन' के तुम ही साहिब दीजे शिवपुर राज कराय॥
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजे रोग शोक दुख दारिद जाय॥
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्व।०

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ-2

वसु द्रव्य संवारी, तुम ढिंगधारी, आनंदकारी दृग प्यारी,
तुम हो भवतारी, करुनाधारी, यातें थारी शरणारी।
श्रीशांति जिनेशं नुत शक्रेशं वृष चक्रेशं चक्रेशं,
हनि अरि चक्रेशं, हे गुनधेशं दयामृतेशं मक्रेशं॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान का अर्घ

जलफल आदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय।
अष्टम छितिके राज करनकों, जजों अंग वसु नाय॥
दाता मोक्षके, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता०
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ

नीर गंध अक्षतानू पुष्प चारु लीजिये।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ तें जजीजिये॥
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूं सदा।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान का अर्घ

जल फल वसु सजि हेम थाल, तन मन मोद धरों।
गुणगाऊँ भवदधितार, पूजत, पाप हरों॥
श्री वीरमहा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्व०।

पाँच बालयति तीर्थंकरों का अर्घ

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं,
वसुकर्म अनादि संयोग ताहि नशावत हैं।
श्री वासूपूज्य मलि नेम पारस वीर अती,
नमूं मन वच तन धरि प्रेम पाँचों बालयती॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य मल्लिनाथ नेमिनाथ पार्श्वनाथ महावीर स्वामी, श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व०।

श्री ऋषि-मण्डल का अर्घ

जल फलादिक द्रव्य लेकर अर्घ सुन्दर कर लिया।
संसार रोग निवार भगवन् वारि तुम पद में दिया॥
जहाँ सुभग ऋषिमंडल विराजैं पूजि मन वच तन सदा।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय, रोग-शोक-सर्व-संकट हराय, सर्व-शान्ति-पुष्टि-कराय, श्रीवृषभादि चौबीस तीर्थंकर, अष्ट वर्ग, अरहंतादि पंचपद, दर्शन-ज्ञान-चारित्र, चतुर्णिकाय देव, चार प्रकार अवधिधारक श्रमण, अष्ट ऋद्धि संयुक्त ऋषि, बीस चार सूरि तीन हीं, अर्हंतबिम्ब, दशदिग्पाल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तऋषियों का अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य-मिश्रित, अर्घ कीजे पावना।
मन्वादि चारण-ऋद्धि-धारक, मुनिनकी पूजा करूं।
शिव करें, पातक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूं॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्वादिससप्तर्षिभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्रों का अर्घ

जल गंध अच्छत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं।
'द्यानत' करो निरभय जगतसों, जोर कर विनती करौं॥
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा, पापुरि कैलाशकों।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवासकों॥1॥
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्व०।

सरस्वती माता का अर्घ

जल चंदन अक्षत फूल चरु, अरु दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावै॥
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन-मानी पूज्य भई॥
ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूँ सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पूजूँ भाव सों ॥1॥
अर्हन्त-भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरन शिव हेतु सब आशा हनी ॥2॥

सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दया-मय पूजूँ सदा।
जजूँ भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहीं कदा ॥3॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजत भजूँ ॥4॥
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा ॥5॥
चौवीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस-वसु जपि होय पति शिव गेह के ॥6॥

दोहा

जलगधाक्षत पुष्प चरु दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ बहु विधि भक्ति बड़ाय॥

ॐ ह्रीं महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथवा

ॐ ह्रीं भाव पूजा, द्रव्य पूजा, भाव द्रव्य वंदना त्रिकालपूजा वंदना करेमि करियामि अर्हत्सिद्धाचार्यपाठक सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमं करणं चरणं द्रव्यानुयोगेभ्योः नमः दर्शन विशुद्धियादि षोडसकारणेभ्यो नमः उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मेभ्यो नमः सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्रेभ्यो नमः जलथल आकाश गुफा पहाड़ नगर नगरी उर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोकेषु विराजमान कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः विदेह क्षेत्रेषु विराजमान विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः पंचभरत पंचऐरावत दश क्षेत्रस्थ तीसचौवीसी सम्बंधि सप्त शत बीस जिनराजेभ्यो नमः नंदीश्वर द्वीप सम्बन्धि द्वयपंचाशत् जिन चैत्यचैत्यालेभ्यो नमः पंचमेरु तम्बन्धि अष्टाशीत जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः सम्मेदशिखर कैलाश चंपापुर पावापुर गिरनार सोनागिर मथुरादि

सर्वसिद्धक्षेत्रेभ्यः नमः जैनवद्री, मूडवद्री, देवगढ़, चंदेरी पपौरा हस्तिनापुर अयोध्या राजग्रही तारंगा चमत्कार महावीर जी, पद्मपुरी तिजारा रानीला आदि सर्व अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः त्रैकालस्र कालस्य सर्व आचार्यउपाध्याय सर्वसाधुभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं श्रीवृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेव आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखंडे....नाम नगरे मासानाममासे....मासे शुभे....पक्षे शुभ....तिथौ....वासरे मुनिआर्यिकानां श्रावक श्राविकानां क्षुल्लक क्षुल्लिकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ्यपद प्राप्ताय महार्घ्यं पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतिपाठ

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शीलगुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयनकमलदललाजैं ॥1॥
पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थङ्कर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक नमों शांतिहित शांतिविधायक ॥2॥
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुंदभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तव प्रातिहार्य मनहारी ॥3॥
शांतिजिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजौं सिरनाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघ को ॥4॥

बसंत तिलका छंद

पूजें जिन्हें मुकुट-हार किरीट लाके, इन्द्रादिदेव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप, मेरे लिये करहु शांति सदा अनूप ॥5॥

इन्द्रवज्रा छंद

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिनशांतिको दे ॥6॥

स्त्रगधरा छंद

होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पे, तिलभर न रहे व्याधियों का अदेशा॥
होवे चोरी न मारी, सुसमै बरतै, हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारैं, जिनवर वृष को, जो सदा सौख्यकारी ॥7॥

दोहा

घाति कर्म जिन नाश कर, पायो केवलराज।
शांति करें ते जगत में, वृषभादिक जिनराज ॥8॥

मन्दाक्रांता छंद

शास्त्रों का हो पठन सुखदा लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके दोष ढाकूँ सभी का॥
बालूँ प्यारे वचन हितके आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौं सेऊँ चरण जिनके मोक्ष जो लो न पाऊँ ॥9॥

आर्या छन्द

तव पद मेरे हिय में, मम हिय मेरे पुनीत चरणों में।
तब लों लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति पद मैंने ॥10॥

अक्षर पद मात्रा से दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब करुणा करि पुन छुड़ाहु भवदुख से ॥11॥
हे जगबन्धु जिनेश्वर पाऊँ तव शरण चरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥12॥
(तीन बार शांतिधारा देवें तथा नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप करें।)

विसर्जन पाठ

दोहा

बिन जाने या जानके रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तें परमगुरु, सो सब पूरन होय॥
पूजनविधि जानूँ नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करो भगवान॥
मन्त्र-हीन धन-हीन हूँ क्रिया हीन जिनदेव।
क्षमा करहुँ राखहु मुझे देहु चरण की सेव॥
आये जो-जो देवगण पूजे भक्ति प्रमाण।
सो अब जावहु कृपा कर अपने-अपने थान॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अर्हत्सद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालय अन्ये च देवादयः स्वस्थानं गच्छ गच्छ जः जः।

स्तुति पाठ

तुम तरण-तारण भव-निवारण भवि कमन आनंदनो।
श्रीनाभिनंदन जगतवंदन आदिनाथ निरंजनो॥

तुम आदिनाथ अनादि सेऊँ सेय पद पूजा करूँ।
कैलाश गिरि पर रिषभ जिनवर पदकमल हिरदै धरूँ॥
तुम अजितनाथ अजीत जीते अष्टकर्म महाबली।
इह विरद सुनकर सरन आयो कृपा कीज्यो नाथजी॥
तुम चंद्रवदन सु चंद्र लच्छन चंद्रपुरि परमेश्वरो।
महासेननंदन जगतवंदन चंद्रनाथ जिनेश्वरो॥
तुम शांति पाँच कल्याण पूजों शुद्ध मन वच काय जू।
दुर्भिक्ष चोरी पाप नाशन विघन जाय पलाय जू॥
तुम बालब्रह्म विवेक-सागर भव्य-कमल विकाशनो।
श्रीनेमिनाथ पवित्र दिनकर पाप-तिमिर विनाशनो॥
जिन तजी राजुल राजकन्या कामसैन्या वश करी।
चारित्र रथ चढ़ि भये दूलहा जाय शिव-रमणी वरी॥
कंदर्प दर्प सु सर्पलच्छन कमट शठ निर्मद कियो।
अश्वसेननंदन जगतवंदन सकल संघ मंगल कियो॥
जिन धरी बालकपणे दीक्षा कमठ-मान विदारकैं।
श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्र के पद में नमों शिर धारकैं॥
तुम कर्मघाता मोक्षदाता दीन जानि दया करो।
सिद्धार्थनंदन जगतवंदन महावीर जिनेश्वरो॥
छत्र तीन सोहैं सुर नर मोहैं बीनती अब धारिये।
कर जोड़ सेवक बीन बै प्रभु आवागमन निवारिये॥
अब होउ भव भव स्वामि मेरे मैं सदा सेवक रहों।
कर जोड़ यों वरदान माँगूँ मोक्षफल चाहत लहों॥

जो एक माहीं एक राजत एक माँहिं अनेकनो।
एक अनेक की नाहिं संख्या नमूँ सिद्ध निरंजनो॥

चौपाई

मैं तुम चरण-कमल गुण गाय। बहुविधि भक्ति करी मन लाय।
जनम जनम प्रभु पाऊँ तोहि। यह सेवा फल दीजे मोहि।
कृपा तिहारी ऐसी होय। जामन मरन मिटावो मोय।
बार बार मैं विनती करूँ। तुम सेवा भव-सागर तरूं।
नाम लेत सब दुख मिट जाय। तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवनके देव। मैं तो करूँ चरण तव सेव।
मैं आयो पूजन के काज। मेरो जन्म सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊँ शीश। मुझ अपराध क्षमहु जगदीश।

दोहा

सुख देना दुख मेटना यही आपकी बान।
मो गरीबकी बीनती सुन लीज्यो भगवान॥
पूजन करते देव जो आदि मध्य अवसान।
सुरगनके सुख भोग कर पावै मोक्ष निदान॥
जैसी महिमा तुम विषैं और धरै नहिं कोय।
जो सूरजमें जोति है तारागण नहिं सोय॥
नाथ तिहारे नामतैं अघ छिन माहिं पलाय।
ज्यों दिनकर परकाशतैं अंधकार विनाशाय॥
बहुत प्रशंसा क्या करूँ मैं प्रभु बहुत अजान।
पूजाविधि जानूँ नहीं सरन राखि भगवान॥

श्री शांतिनाथ जिन चालीसा

दोहा

अरिहंत सिद्धाचार्य अरु पाठक साधु महान।
जिन धर्म जिनागम चैत्य भी, चैत्यालय सुखदान ॥1॥
त्रैकालिक नवदेव ये श्री चौबीस जिनेन्द्र।
मात शारदा सरस्वती, करें सिद्धि सुख कंद ॥2॥
गौतम कुंदकुंदादि गण शांति वीरादिक सूरि।
गणिनी आर्यिका ज्ञानमती, करें पाप को दूर ॥3॥
चालीसा जिन शांति का दुक्ख हरण सुखदाय।
भक्ती वश गाऊँ अभी सर्वपूज्य मन ध्याय ॥4॥

चौपाई

जय श्री शांति सदा सुखकारी, विघ्न हरण भवि मंगल कारी।
पंचम चक्रवर्ति पद धारी, कामदेव द्वादश हितकारी ॥5॥
सोलहवें तीर्थेश कहाये, सुर गणधर मुनि शीश नवाये।
कंचन वरण अनुपम शोभा, त्रिभुवन नयन सबन मन लोभा ॥6॥
चालिस धनुष तुंग ऊंचाई, इक लख वर्ष आयु शुभ पाई।
पच्चिस सहस वर्ष बचपन था, पचास हजार तक राज्य किया था ॥7॥
चक्र रतन धर छह खंड जीता, धर्म चक्रधर मुक्ति पुनीता।
चौदह रतन नवों निधि सोहे, छियानवे सहस रानियां होहें ॥8॥

अठारह कोटी तुरंग सुहाने, चौरासी लख हाथी माने।
देव देवियां सेवा करते, रिद्धि सिद्धियों से मन हरते ॥9॥

त्रिभुवन मध्य लोक शुभ जानो, असंख्यात वर द्वीप प्रमानो।
इक लख योजन जम्बूद्वीप, मेरु सुदर्शन बीचों बीच ॥10॥

भरत क्षेत्र दक्षिण दिश जानो, छह खंडों में आर्य बखानो।
आर्य खंड में वर्तमान के, द्वीप सातों हैं जहान के ॥11॥

इनमें भारत देश महाना, ऋषभ देव सुत भरत से माना।
गजपुर नगर यहां इक सुन्दर, स्वर्ग से आकर रमें पुरन्दर ॥12॥

अद्भुत अनुपम नगर की शोभा, कोट पुर जिन गृह मन मोहा।
सुरपति आज्ञा धनपति आये, द्वादश योजन नगर सजाये ॥13॥

गर्भागम के छह माह पहले, रतन बरसते मात के महले।
पन्द्रह मास रतन नित बरसे, दुःख दारिद्रय तनिक नहीं परसे ॥14॥

विश्वसेन भूपाल कहाये, ऐरा माता मोद मनाये।
सर्वारथ सिद्धी से चय कर, गर्भ बसे थे माता के उर ॥15॥

भादों कृष्णा सप्तम के दिन, भरणी था नक्षत्र उसी दिन।
श्री ही धृति कीर्ति अरु बुद्धी, मात की सेवा करती लक्ष्मी ॥16॥

छप्पन कुमारियां सेवा करतीं, पूजा कर माता मन हरतीं।
ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी थी, भरणी में जन्मे थे जिन श्री ॥17॥

उन इक्ष्वाकू वंश महाना, दिव पति कीनो जन्म कल्याणा।
पांडुक वन में क्षीरोदधि से, न्हवन किया सहस्त्र अठ कलशों से ॥18॥

मति श्रुत अवधि ज्ञान के धारी, जन्मत ही त्रिभुवन सुखकारी।
जाति स्मरण से वैराग्य. लौकांतिक देवन पग लाग ॥19॥

जेठ कृष्णा चतुर्दशी थी, भरणी नखत अरु आम्र बनी थी।
अप्रहान्ह काल में दीक्षा धारी, हुये दिगम्बर महाव्रत धारी ॥20॥
एक हजार नृपति हैं गाये, जिनवर साथे दीक्षा पाये।
अन्तरमुहूरत में मनपर्यय, चौथा ज्ञान धरा जिनवर्य ॥21॥
सोलह वर्ष रहे छदमस्थ, केवल रवि प्रकटा तव मस्त।
पौष शुदी दशमीं पौर्वाहणों, भरणी आम वनी में जानो ॥22॥
नंदी तरु तट केवलज्ञान, समवशरण चतु योजन मान।
गरुण मानसी यक्ष यक्षिणी, जिन शासन की रक्षा कर्ती ॥23॥
चौबिस सहस नव सौ चौरासी, केवलि इतना काल विभासी।
समवशरण में गणधर जानो, छत्तिस चक्रायुध से मानो ॥24॥
बासठ सहस थे नग्न मुनीश्वर, आठ शतक मुनि वहां पूर्वधर।
इकतालिस सहस आठ सौ शिक्षक, तीन हजार मुनि अवधीधर ॥25॥
चार हजार केवली सोहें छह हजार विक्रिया धर होहैं।
चार हजार विपुल मन धारी, चौबिस शतक वहां पर वादी ॥26॥
आठ हजार तीन सौ गणिनी, हरिषेणा आर्या मन हरिणी।
दो लख श्रावक दूनी श्राविका, मोक्ष मार्ग की सकल साधिका ॥27॥
जेठ कृष्णा चौदस आई, गिर सम्मेद से मुक्ती पाई।
शांतिनाथ शांती के दाता, भुक्ति मुक्ति गुण कांति प्रदाता ॥28॥
शांतिनाथ की जैसी महिमा, तीन भुवन में नहीं कोई उपमा।
लंकेश्वर तुम ध्यान लगाया, बहुरुपणी विद्या को पाया ॥29॥
रवि वंशी मथुरा का राजा, धर्म छोड़ अधर्म में लागा।
रक्षक देव उपद्रव कीना, नगर हुआ तव प्रजा विहीना ॥30॥

सुमतिनाम वैश्य वहां आया, उपद्रव से वह गया सताया।
तब जिन मंदिर पूजा कीनी, चारण मुनि दर्शन तहां दीनी ॥31॥
उपद्रव शांत का उपाय बताया, शांतिनाथ का विधान रचाया।
उपद्रव शांत हुआ तब भारी, प्रजा हुई तब शांत सुखारी ॥32॥
दक्षिण भारत में पौदनपुर, विजयराज थे वहां पुरन्दर।
एक ज्योतिषी ने यह भाखा, वज्रपात से मरेगा राजा ॥33॥
मतिसागर मंत्री ने सुझाया, राज्यपाट का त्याग कराया।
राजा जिन मंदिर में जाकर, शांतिनाथ का ध्यान लगाकर ॥34॥
सिंहासन पर यक्ष बिठाया, सात दिनों तक ध्यान लगाया।
वज्र गिरा सिंहासन ऊपर, मंदिर में बच गया वह भूपति ॥35॥
उत्सव तभी नगर में कीना, राज्य पाट पुनि नृप को दीना।
शांतिनाथ को जो जन ध्यावे, भव सुख भोग मुकति को पावे ॥36॥
एक समय मुनि पूज्यपाद की, नेत्र ज्योति गई मुनि श्री की।
शांत्यष्टक मुनि रचना कीनी, नेत्र ज्योति तुरतहिं तब लीनी ॥37॥
भक्ति प्रभू की जो जन करते, दुःख दारिद्रय सकल दुःख हरते।
नवग्रह अरिष्ट को दूर भगावें, भूत पिशाच निकट नहीं आवें ॥38॥
धन अर्थी कुवेर पद पावे, भार्यार्थी शचि पति बन जावे।
सुतार्थी सुत गोद खिलावे, धर्म चक्र लहि तीर्थ चलावे ॥39॥
रोग शोक चिंता भय नाहीं, टौना टुटका दूर भगाहीं।
रोग मरी चौरादिक नाहीं, रिद्धि सिद्धि नव निधि लहाहीं ॥40॥

दोहा

चालिस दिन तक नित करो, चालिस बार ये पाठ।
प्रवीन चंद भव नाश के, करो मुक्ति वश ठाट ॥41॥

विनायक यंत्र की आरती

ॐ जय विनायक यंत्रम्। स्वामी जय विनायक यंत्र।
सब विधि विघ्न विनाशक 2, मंगलमय यंत्रम ॥ ॐ जय विनायक...
ॐकार बीजाक्षर संयुत, सर्व कला धारी। स्वामी.....
असिआ उसा से युत 2, पाप ताप हारी ॥ ॐ जय विनायक...
अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी हैं। स्वामी.....
मंगल शरण भूत लोकोत्तम 2, त्रिभुवन इष्टी हैं ॥ ॐ जय विनायक...
मंगलशरण भूतलोकोत्तम, केवलि धर्म कहा। स्वामी.....
सत्रह मंत्र प्रमाणित 2, भवदधि सेतु रहा ॥ ॐ जय विनायक...
असिआ उसा महामंत्र की सवा लाख जापें। स्वामी.....
जो करते श्रद्धा से 2, भवदुख नहिं व्यापें ॥ ॐ जय विनायक...
व्यंतरादि भय नशता, नवग्रह अरिष्ट नशे। स्वामी.....
वात कुष्ट कफ नाशे 2, नवनिधि आन बसे ॥ ॐ जय विनायक...
त्रिसंध्या युत यंत्रराज की, आरति जो करते। स्वामी.....
धन सुत संपति पाकर 2, सिद्ध शिला बसते ॥ ॐ जय विनायक...

णमोकार महामन्त्र की आरती

तर्ज–(ॐ जय वर्धमान प्रभो, स्वामी.....)

ॐ जय जय णमोकारं, स्वामी जय जय णमोकारं।
मन वच तन से जप लो 2, सर्व दुक्ख हारं॥ ॐ जय जय.....
णमो अरिहंताणं सुखकर त्रिभुवन के स्वामी। स्वा०
केवलज्ञान दिवाकर 2, हो अन्तर्यामी ॥ ॐ जय जय.....
णमो सिद्धाणं श्रद्धामय, सब सिद्धी दाता। स्वा०
लोक शिखर पर राजो 2, अष्ट कर्म घाता ॥ ॐ जय जय.....
णमो आयरियाणं मुनिवर, संघाचार्य कहे। स्वा०
छत्तिस गुण युत ध्याऊँ 2, भवदधि पार गये ॥ ॐ जय जय.....
णमो उवज्झायाणं स्वामी, ज्ञान के तुम दाता। स्वा०
पच्चिस गुण युत शोभित 2, मोह तिमिर घाता ॥ ॐ जय जय...
णमो लोए सव्व साहूणं, तुम जन्म जात धारी। स्वा०
पांचों पाप विनाशक 2, त्रिभुवन सुखकारी ॥ ॐ जय जय.....
मंगल शरण भूत लोकोत्तम, सब वांछित दाई। स्वामी
प्रवीन परम पद वंदो 2, संकट मिट जाई ॥ ॐ जय जय.....

श्रीतीस चौबीस जिन आरती

तर्ज–ओम जय वर्धमान प्रभो.....

ॐजय चौबीस जिनं, स्वामी जय चौबीस जिनं।
भव हारी सुखकारी 2, श्री चौबीस जिनम् ॥1॥ ॐ जय चौबीस...

पांच भरत पांच ऐरावत के, क्षेत्र दश माने। स्वा०
भूत भविष्यत संप्रति 2, सब बहत्तर जाने ॥2॥ ॐ जय चौबीस...
ढाई द्वीप के सब तीर्थंकर, सात सौ बीस कहे। स्वा०
कर्मकाल में होते 2, बाकी शेष रहे ॥3॥ ॐ जय चौबीस...
जम्बूद्वीप में छह चौबीसी, धातकी में बारह। स्वा०
पुष्करवर की बारह 2, भविजन को तारें ॥4॥ ॐ जय चौबीस...
सात सौ बीस जिनेश्वर, मोह तिमिर हर्ता। स्वा०
रत्नत्रय को देते 2, धर्म चक्र धरता ॥5॥ ॐ जय चौबीस...
शत इन्द्रों से वंदित जिनवर, शिवसुख के धारी। स्वा०
पापसमूह विनाशक 2, सब मंगलकारी ॥6॥ ॐ जय चौबीस...
तीस चौबीसी की आरति जो, मन वच तन गावें। स्वा०
स्वर्ग सम्पदा लेकर 2, शिवपुर को जावे ॥7॥ ॐ जय चौबीस...

श्री आदिनाथ भगवान की आरती

तर्ज–हम सब उतारें तेरी आरती.....

आदीश्वर के चरण कमल की करो आरती आज।
रत्नों के दीपक ले आये 2, जिनवर के दरबार हे ॥
स्वामी हम सब उतारें तेरी आरती हे स्वामी हम.....
आदीश्वर के.....

नाभिराय मरुदेवी के नंदन त्रिभुवन चन्द्र जिनेन्द्र।
जगत पिता हो जगत गुरु हो 2 सुर मुनि आनन्दकंद ॥

हे स्वामी आदि सुब्रह्मा तुम हो मोक्ष विधाता भी हो।
हम सब उतारें तेरी आरती हे स्वामी.....आदीश्वर के.....

अषाढ़ कृष्णा दोज अयोध्या मरुदेवी उर आय।
चैत्र वदी नौमी को जन्मे 2, त्रिभुवन मंगलदाय ॥
हे स्वामी मेरु पे इन्द्र वरें हैं मंगलमय न्हवन करे हैं।
हम सब उतारें तेरी आरती हे स्वामी.....आदीश्वर के.....

नीलांजना के देख निधन को मन वैराग्य समाया।
चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने 2, तप कल्याणक पाया।
हे स्वामी लौकांतिक देव जजें हैं आत्म का सार भजे हैं।
हम सब उतारें तेरी आरती हे स्वामी.....आदीश्वर के.....

एक वर्ष कुछ दिन उपवास कर, गजरपुर नाथ पधारे।
श्री श्रेयांश नृपति ने दीना 2, इच्छु रस का आहारे ॥
हे स्वामी आखा वह तीज का दिन था तीर्थ प्रवर्तन भी था।
हम सब उतारें तेरी आरती हे स्वामी.....आदीश्वर के.....

फाल्गुन कृष्ण ग्यारस की तिथि 'पुरमिताल महाना।
सभी घातिया कर्म नाश कर 2, हुआ सु केवलज्ञाना ॥
हे स्वामी माघ वदी चौदस आई मोक्ष कल्याण उपाई।
हम सब उतारें तेरी आरती हे स्वामी.....आदीश्वर के.....

कोटिलाख जीवों को तारा बन ''प्रवीन'' सहाई।
मानतुंग मुनिवर की प्रभु ने 2, बेड़ी तोड़ गिराई ॥
हे स्वामी भक्तों के तुम रखवाले संकट मिटाने वाले।
हम सब उतारें तेरी आरती हे स्वामी.....आदीश्वर के.....

आदिनाथ भरत बाहुबली भगवान की आरती

तर्ज–ॐ जय वर्धमान प्रभो.....

ॐ जय जय अवतारी स्वामी जय जय अवतारी।
आदिनाथ भरतेश नमूं मैं 2, बाहुबली दुख हारी ॥ ॐ जय जय...

प्रथम जिनेश्वर आदिनाथ जिन, भरत प्रथम चक्री। स्वामी.....
कामदेव हैं पहले 2, बाहुबलि जित चक्री ॥ ॐ जय जय...

आदि सु ब्रह्मा मोक्ष विधाता, सहस अष्ट नामा। स्वामी.....
तीनों शिव पथ स्वामी 2, अनंत गुण धामा ॥ ॐ जय जय...

तीनों ही त्रिपुरारी जानो, तीन भुवन स्वामी। स्वामी.....
पाप निकंदन मानो 2, हैं अन्तर्यामी ॥ ॐ जय जय...
सब दुःख हारी आनंदकारी, सहजानंद विभो। स्वामी.....
अनंत चतुष्टय धारी 2, परमानंद प्रभो ॥ ॐ जय जय...

दीनबन्धु दुख हरण जिनेश्वर, दीनन प्रतिपाला। स्वामी.....
पाप ताप छय कारी 2, त्रिभुवन में आला ॥ ॐ जय जय...

रिद्धि सिद्धि नव निद्ध समन्वित, आरति सुखकारी। स्वामी.....
जो करते भक्ती से 2, होते सुखधारी॥ ॐ जय जय...

श्री बाहुबली भगवान की आरती

तर्ज–

जय जय बाहुबली कर्म सब दलमली सौख्यकारी
आरती हम उतारें तुम्हारी ॥ जय जय.....

रत्न दीपक कनक थाल लेके
ज्ञान ज्योति हृदय में संजो के।
आरती हम करें भारती उर धरें सौख्यकारी
आरती हम उतारें तुम्हारी ॥ जय जय.....

पुत्र आदीश के भरत भइया।
नाव भव्यों की भव से खिवइया ॥
कामदेव प्रथम हरितमणी वर्ण तन मंगलकारी
आरती हम उतारें तुम्हारी ॥ जय जय.....

मोक्षगामी में सबसे बड़े हो,
पंचशत पच्चीस तन धनु खड़े हो।
योग इक वर्ष का, साध केवल लिया भव के हारी
आरती हम उतारें तुम्हारी ॥ जय जय.....

पोदनपुर के हो आप ही राजा, जीत चक्री को योग था धारा ॥
कर्म शत्रू हरा ज्ञानकेवल धरा दुक्खहारी
आरती हम उतारें तुम्हारी ॥ जय जय.....

तीनों लोकों में कीर्ती है फैली,
आपके पुण्य की है उजेली
कोटि सूरज प्रभा लाजती है विभा आप धारी
आरती हम उतारें तुम्हारी ॥ जय जय.....

श्री अजितनाथ भगवान की आरती

तर्ज–माइन माइन तेरी मुड़ेर पर बोल रहा है कागा

श्री अजित जिनेन्द्रा आनंद कंदा की आरति सुखकारी।
स्वर्ण थाल में ज्योति जलाकर करते आरति प्यारी ॥
करें हम जय जय जय, करें हम जय जय जय ॥
श्री अजित जिनेन्दा आनंद.....

द्वितिय जिनेश्वर के पद पंकज सुन्दर सा गज सोहे।
साड़े चार शत हेम तप्त सम सुन्दर काया सोहे।
आयु बहत्तर लख पूरव की नाथ आपने धारी।
स्वर्ण थाल में ज्योति जलाकर करते आरति प्यारी ॥
करें हम जय जय जय, करें हम जय जय जय ॥
श्री अजित जिनेन्दा आनंद.....

जित शत्रू अरु विजया माता नगर अयोध्या भाता।
जेठ कृष्ण अमावस पूर्व तें कुवेर रत्न वर्षाता ॥
बैजयंत तज गर्भ में आये, त्रिभुवन में सुखकारी।
स्वर्ण थाल में दीप जलाकर करते आरति प्यारी ॥
करें हम जय जय जय, करें हम जय जय जय ॥
श्री अजित जिनेन्दा आनंद.....

माघ सुदी दशमी दिन जाये इंद्र अभिषेक करंता।
माघ सुदी नवमी तप धारा, ज्ञान चतुर्थ लहंता ॥

पौष सुदी एकादशि केवल, ज्ञान भानु सुखकारी।
स्वर्ण थाल में दीप जलाकर, करते आरति प्यारी ॥
करें हम जय जय जय, करें हम जय जय जय ॥
श्री अजित जिनेन्दा आनंद.....

पंचम चैत्र सुदी निरवाना गिरि सम्मेद से लीना।
लोक शिखर पर शास्वत राजें पावन परम प्रवीना ॥
नाथं आप की आरति करके भवि जन होय सुखारी।
स्वर्ण थाल में दीप जलाकर, करते आरति प्यारी ॥
करें हम जय जय जय, करें हम जय जय जय ॥
श्री अजित जिनेन्दा आनंद.....

पद्म प्रभु भगवान की आरती

श्री पद्मप्रभू के पद पंकज की आरति जनमन हार, -2
रत्नों के दीपक ले आये 2, बाबा तेरे द्वार हो।
स्वामी त्रिभुवन के तुम हो स्वामी जगपति हो,
अर्न्तयामी सब जन उतारें तेरी आरती हो बाबा.....
श्री पद्मप्रभू.....

माघ कृष्ण षष्ठी में प्रभु को मात सुसीमा धार,
धन कुबेर रत्नों की वर्षा 2, करता अपरम्पार।
हो स्वामी देवियां सेवा करतीं माता की महिमा कहतीं,
हम सब उतारें तेरीआरती हो बाबा.....
श्री पद्मप्रभू.....

कार्तिक सुदि तेरस कौसाम्बी, जनमे श्री भगवान,
श्रीधर राजा के घर आये 2, त्रिभुवन के कल्यान।
हे जिनवर इसी दिन तप को धारा, मोहनी कर्म पछाड़ा,
हम सब उतारें तेरी आरती हो बाबा.....

श्री पद्मप्रभू.....

चैत्र शुक्ल पन्द्रस को पाया प्रभु ने केवलज्ञान,
भव्य अनंतो को उपदेशा 2, जय जय दया निधान।
हो स्वामी बाड़ा के तुम हो स्वामी, तुम ही हो अतिशय,
नामी भवि जन उतारें तेरी आरती हो बाबा.....

श्री पद्मप्रभू.....

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी पाया प्रभु ने मोक्ष कल्यान,
श्री सम्मेद शिखर तें पाया 2, लोक अग्र स्थान।
हो जिनवर सुर नर मुनि गणधर ध्यावें भविजन,
सब कर्म नशावें भविजन उतारें तेरी आरती हो बाबा.....

श्री पद्मप्रभू.....

कल्पवृक्ष हो चिन्तामणि हो पद्मप्रभू भगवान,
प्रवीन सकल जन तुमको ध्यावें 2, पावें इच्छित दान।
हो जिनवर, द्वारे जो तेरे आयें आकर के पुण्य कमायें,
भविजन उतारें तेरी आरती हो स्वामी हम सब.....

श्री पद्मप्रभू.....

श्री चंदा प्रभु भगवान की आरती-1

चन्दाप्रभु के चरन चन्द्र की आरति अतिश्यकार,
चन्द्रकांति मणि दीपक लेकर-2 आए जिनवर द्वार हो देवा
चन्दा प्रभू त्रिभुवन चंदा, महासेन के नंदा
सुर नर जन करते जिनवर आरती ॥
हे स्वामी हम सब उतारें थारी आरती, हो जिनवर.....
चन्दाप्रभू के चरन.....

चैत्र बदी थी तिथि पंचवी लक्ष्मणा उर में आए,
पौष कृष्ण ग्यारह को जनमें, सुरपति मंगल गाए।
हो जिनवर चन्द्रपुरी में जन्में, न्हवन था पांडुक वन में
हम सब उतारें थारी उतारी, हो जिनवर.....
चन्दाप्रभू के चरन.....

पौष बदी एकादश को वैराग्य भावना भाई,
मनोहरा पालकी में चढ़कर-2 नग्न हुए जिनराई
हो जिनवर, लौकान्तिक देवों ने पूजा तुम सम और न दूजा
सुर नर जन करते जिनवर आरती हो देवा.....
चन्दाप्रभू के चरन.....

फाल्गुन कृष्णा सप्तमू तिथि को सबारथ बन जाना।
मध्यान्ह समय तरु नाग के नीचे हुआ सुकेवल ज्ञाना ॥ हो जिनवर.
ज्ञानामृत पान कराया समवशरण देवों ने रचाया,
सुर नर जन करते जिनवर आरति हो जिनवर हम.....
चन्दाप्रभू के चरन.....

फाल्गुन शुक्ला सप्तम् के दिन श्री सम्मेद गिरी से,
अष्ट करम हर मोक्ष पधारे-2, मिले मुक्ति श्री प्रिय से।
हो जिनवर लोक शिखर पर जाकें भव भव के वास नसाके॥
सुर नर जन करते जिनवर आरती हो जिनवर.....

चन्दाप्रभू के चरन.....

समन्त भद्र मुनिवर को जिन ने निज महिमा दर्शायी
नगर बनारस शिव पिंडी में जिन मूर्ति प्रगटाई ॥
हो जिनवर तिजारा वाले जिनवर सोनागिर वाले जिनवर
सुर नर जन करते जिनवर आरती ॥ हो जिनवर.....

चन्दाप्रभू के चरन.....

श्री चंद्राप्रभु भगवान की आरती-2

तर्ज–चाँद मेरे आ जा रे.....

जिनवर श्री चंदा की, सुरनर पद वंदा की।
मिलकर करलो आज जिनवर की आरतिया ॥

जिनवर श्री चंदा.....

महासेन के नंदन हैं लक्ष्मणा मां के चंदन हैं,
चन्द्रपुरी में जन्म लिया, तीन लोक को धन्य किया।
इनके चरणों का मन, हर पल करले वंदन,
मिलकर करलो आज जिनवर की आरतिया ॥

जिनवर श्री चंदा.....

गर्भ में चैत्रवदी पंचम, पौष कृष्ण ग्यारस को जनम,
इसी दिन पाया वैराग्य, राज त्याग पाया निज राज।
फाल्गुन वदी सप्तम, केवल रवि प्रकटा धन,
मिलकर करलो आज जिनवर की आरतिया ॥
जिनवर श्री चंदा.....

फाल्गुन शुक्ला सप्तम दिन, श्री सम्मेद शिखर से हन,
अष्ट करम को नाश किया, सिद्धालय में वास किया।
अष्टम ईश्वर हैं, अष्ट महीश्वर हैं,
मिलकर करलो आज जिनवर की आरतिया ॥
जिनवर श्री चंदा.....

चंद वरण पद है चंदा, डेढ़ शतक धनु तन तुंगा,
कोटि भव्य भव पार किये जो भी प्रभु की शरण गये।
प्रतिमा प्रकटाई थी, शिवपिंडी में आई थी,
मिलकर करलो आज जिनवर की आरतिया ॥
जिनवर श्री चंदा.....

सोमा सीता मैना थीं, द्रोपदी और मनोरमा भी,
अंजन को भव पार किया, श्रीपाल को तिरा दिया।
हम सब मिल आयेंगे, आरति को गायेंगे,
मिलकर करलो आज जिनवर की आरतिया ॥
जिनवर श्री चंदा.....

इनकी आरति जो करते रिद्धि सिद्धि नव निधि भरते,
रत्नत्रय निधि पाते हैं, शिवपुर में बस जाते हैं।
कर्म कटाने को, बिगड़ी बनाने को,
मिलकर करलो आज जिनवर की आरतिया ॥
जिनवर श्री चंदा.....

श्री पुष्पदंत जिन आरती-1

तर्ज—ॐ जयवर्धमान प्रभो.....

जय पुष्पदंत देवा, स्वामी सुविधनाथ देवा।
वीतराग सुखकारी-2, त्रिभुवन पतिदेवा ॥1॥
ॐ जय पुष्पदंत देवा.....

कांकदीपुर जन्मे जिनवर, चंद वरणकाया। स्वामी.....
इक शत धनुष ऊंचाई-2, मगर चिन्ह पाया ॥2॥
ॐ जय पुष्पदंत देवा.....

पितु सुग्रीव रमा माता उर, त्रिभुवन पति आऐ। स्वामी.....
फाल्गुन वदि नौमी को-2, गरभनाथ पाये ॥3॥
ॐ जय पुष्पदंत देवा.....

मगसिर वदि एकम् सुरगिर पर, जिन अभिषेक हुआ। स्वामी.....
भव तन भोग विरक्त इसी दिन-2 मुनि पद धार लिया ॥4॥
ॐ जय पुष्पदंत देवा.....

कार्तिक सुदि दुतिया को केवल, ज्ञान प्रकाश किया। स्वामी.....
अश्विन शुक्ला आठें-2, शिव तिय वरण किया ॥5॥
ॐ जय पुष्पदंत देवा.....

श्री सम्मेद शिखर गिरि राजो, मधुबन के माहीं। स्वामी.....
भवभव के अघनाशक-2 आरती हैं। याहीं ॥6॥
ॐ जय पुष्पदंत देवा.....

पुष्पदंत जिनरवर की आरती, भव आरत हारी। स्वामी.....
प्रवीण करें श्रद्धा से-2 हों शिव सुखधारी ॥7॥
ॐ जय पुष्पदंत देवा.....

श्री पुष्पदंत भगवान की आरती-2

तर्ज–नागिन–मेरा मन डोले.....

जय पुष्पदंत भगवंत संत जय नवम् तीर्थ अवतार की।
करें भक्ति भाव से आरतिया। टेक
रत्न थाल में गोघृत दीपक जगमग ज्योति करंता।
पुष्पदंत भगवान की आरति सम्यग्ज्योति धरंता ॥
प्रभू जी सम्यग्ज्योति धरंता ये चन्द्र वरन मन हरन करन
सुखकार की, करें भक्ति भाव से आरतिया ॥
जय पुष्पदंत भगवंत.....

एक शतक धनु तुंग काय पद मगर सु चिन्ह विराजे।
फाल्गुन वदि नौमी को गरभ में मात रमा उर राजे ॥
प्रभू जी मात रमा उर राजे, दिव आरण तज नित मंगल
कर भगवान की, करें भक्ति भाव से आरतिया ॥
जय पुष्पदंत भगवंत.....

मगसिर सित पड़वा को जन्मे काकंदी सुर आये,
पितु सुग्रीव जी रत्न लुटाते त्रिभुवन मोद करायें।
प्रभू जी त्रिभुवन मोद करायें इसही तिथि में, दीक्षा वन में
ले तप को गये भगवान जी, करें भक्ति भाव से आरतिया ॥
जय पुष्पदंत भगवंत.....

कार्तिक सुदि द्वितीया को प्रभु ने केवलज्ञान उपाया।
भादों सुदि आठें को प्रभू ने मुक्ति रमा को पाया ॥
प्रभू ने मुक्ति रमा को पाया शत इंद्र जजें हम नाथ भजें।
सब होय मंगल काज रे, करें भक्ति भाव से आरतिया ॥
जय पुष्पदंत भगवंत.....

पुष्पदंत भगवान आपकी जो नित आरति करते।
त्रिभुवन के सब सौख्य प्राप्त कर नित नित मंगल लभते ॥
प्रभू जी नित नित मंगल लभते।
प्रवीनचंद हर सर्व द्वंद शिव भामिन के भरतार की ॥
करें भक्ति भाव से आरतिया ॥
जय पुष्पदंत भगवंत.....

शांतिनाथ भगवान की आरती-1

तर्ज–(ॐ जय वर्धमान प्रभो.....)

ॐ जय श्री शांति प्रभो, स्वामी जय श्री शांति प्रभो।
हस्तिनापुर अवतारी 2, ऐरानन्द विभो ॥1॥ ॐ जय श्री.....

भादों कृष्णा सप्तम के दिन, गर्भ में प्रभु आये। स्वा०
विश्वसेन नृप हर्षे 2, त्रिभुवन हर्षाये ॥2॥ ॐ जय श्री.....

जेठ वेदी चौदस में, प्रभु ने जन्म लिया। स्वा०
मघवा ने मेरू पर 2, जिन अभिषेक किया ॥3॥ ॐ जय श्री.....

तुम चक्रेश्वर तुम योगेश्वर, कामदेव तुम ही। स्वा०
तुम ही परम पिता हो 2, सुखदाता तुम ही ॥4॥ ॐ जय श्री....

जेठ वदी चौदस में तप कीन्हा वन में। स्वा०
लौकांतिक सुर पूजें 2, मोह हरें छिन में ॥5॥ ॐ जय श्री.....

पौष सुदी दशमी को केवल ज्ञान लिया। स्वा०
घात करम को घाता 2, सुख उपदेश दिया ॥6॥ ॐ जय श्री.....

जेठ वदी चौदस को मोक्ष धाम पाये। स्वा०
अष्ट करम को नाशा 2, श्रीपति कहलाये ॥7॥ ॐ जय श्री.....

शांति जिनेश्वर की आरती जो, मन वच तन गावे। स्वा०
प्रवीन चंद सो भविजन 2, मन वांछित पावे ॥8॥ ॐ जय श्री....

श्री शांतिनाथ भगवान की आरती-2

तर्ज–हम सब उतारें थारी आरती.....

शांतिनाथ सोलहवें जिन की आरति कर लो आज,-2
जन्म जनम के पातक मिटकर 2, मिलता सुख साम्राज्य।
हो जिनवर विश्वसेन पितु प्यारे ऐरा माता के दुलारे,
सुननर उतारें थारी आरती, हो जिनवर हम भी उतारें थारी आरती।
शांतिनाथ सोलहवें.....

पंचम चक्री द्वादश रतिपति सोलहवें अवतार, -2
भादव कृष्णा सप्तम के दिन 2, मां ऐरा उर धार।
हो जिनवर देवियां सेवा करतीं, माता से प्रश्न उचरतीं,
सुरनर उतारें थारी आरती, हो गुणधर हम भी उतारें थारी आरती।
शांतिनाथ सोलहवें.....

जेठ वदी चौदस में जनमें त्रिभुवन शांति अपार, -2
मेरु सुदर्शन पांडुक वन में 2, सुरपति न्हवन सुखार।
हो जिनवर जिनवर का रूप था ऐसा त्रिभुवन में कहीं न वैसा,
सुननर उतारें थारी आरती हे चित धर! हम भी उतारें थारी आरती।
शांतिनाथ सोलहवें.....

तप्त कनक छवि धनुष काय तनु, उन्नत धनु चालीस,
सहस्त्र चक्षु कर हर्षित हरि ने 2, देखे तब जगदीश।
हे जिनवर हस्तिनापुर अवतारी चिन्ह हरिण का धारी,
सुननर उतारें थारी आरती, हे मनहर हम भी उतारें थारी आरती।
शांतिनाथ सोलहवें.....

जेठ वदी चौदस में जिनवर, तप कल्याणक धारा, -2
चक्रवर्ती साम्राज्य छोड़कर 2, कर्म शत्रु को मारा।
जिनवर कोटि अठारह घोड़े चौरासी लख गज छोड़े,
सुननर उतारें थारी आरती, हे जगदीश्वर हम भी उतारें थारी आरती।
शांतिनाथ सोलहवें.....

पौष वदी दशमी को गजपुर, केवल ज्ञान उपाया, -2
जेठ वदी चौदस को शिखर जी 2, शिव रमणी को पाया।
जिनवर चार कल्याण गजपुर, जजते हैं प्रभु को गणधर,

सुनरनर उतारें थारी आरती, हे ईश्वर हम भी उतारें थारी आरती।
शांतिनाथ सोलहवें.....

शांतिनाथ शांती के दाता, सब दुःख संकट नाशें, -2
सर्व उपद्रव दूर भगाकर, मोक्ष मार्ग परकाशे।
जिनवर मूरति है अतिश्यकारी, प्रवीन जन मन हारी,
सुरनर उतारें थारी आरती, हे जिनवर हम भी उतारें थारी आरती।
शांतिनाथ सोलहवें.....

श्री शांति कुंथु अरनाथ भगवान की आरती

तर्ज–ॐ जय वर्धमान प्रभो.....

ॐ जय अन्तर्यामी स्वामी जय अन्तर्यामी।
शांति कुंथु अर वंदू 2, त्रिभुवन के स्वामी ॥ ॐ जय.....
गजपुर नगर में प्रभु के चार कल्याण हुए। स्वामी.....
गर्भ जन्म तप केवल 2, सुख की खान हुए ॥ ॐ जय.....
पंचम चक्री द्वादश रतिपति सोलमू तीर्थेश्वर। स्वामी.....
पंच कल्याणक भरता 2, शांती जगदीश्वर ॥ ॐ जय.....
षष्टम चक्री मकरध्वज पति सतरम् कुंथु जिनम्। स्वामी.....
मन वच तन से वंदू 2, त्रय पद धार जिनम् ॥ ॐ जय.....
सप्तम छह खंड जेता अर जिन, मीन चिन्ह धारी। स्वामी.....
अष्टादशम जिनेश्वर 2, मोह मद हारी ॥ ॐ जय.....
त्रय पद धारी आनंदकारी, सब मंगल कर्ता। स्वामी.....
शांति कुंथु अर जिनवर 2, भव भव अघ हर्ता ॥ ॐ जय.....

आरत भव दुःख टारत, मंगल रूप सदा। स्वामी.....
मन वांछित फल दाई 2, दुक्ख न होत कदा ॥ ॐ जय.....

श्री नेमिनाथ भगवान की आरती

तर्ज–मेरा मन डोले तेरा मन डोले मन का गया करार रे.....

नेमी स्वामी अन्तर्यामी प्रभु करुणानिधि अवतार रे।
प्रभु आज उतारूं आरतिया ॥टेक॥
चरण कमल में नेमी जिन के हरि परिकर सह आया,
मणिमय दीप रतनमय वाती स्वर्ण थाल मन भाया। हे.....
भव भार हरो सुख सार भरो, करो मोह तिमिर का नाश रे ॥
प्रभु आज.....नेमी स्वामी.....
समुद्र विजय सुत शिवा के नन्दन वन्दन कर हर्षाया।
कार्तिक सुदि छटवीं के दिन प्रभु गर्भ मंगल गाया ॥प्रभु जी.....
श्रावण शुक्ला, छटवीं सुफला, लियो जन्म द्वारिका नाथ रे ॥
प्रभु.....नेमी स्वामी.....
पशुओं के क्रंदन को सुनकर प्रभु वैराग्य उपाये,
राजुल को तज करके प्रभु ने पशुअन बंध छुड़ाये। प्रभु ने
श्रावण शुकला छटवीं सुफला, प्रभु तप को गये गिरनार रे॥
प्रभु.....नेमी स्वामी.....
आश्विन शुकला एकम् सुन्दर, केवलज्ञान प्रकाशा,
अषाढ़ शुकला सप्तम के दिन, अष्ट कर्म को नाशा। प्रभु ने....
गिरनार गिरी लह मुक्त श्री भये त्रिभुवन कृपा निधान रे।
प्रभु.....नेमी स्वामी.....

इतनी आरती सुख संचारी, रोक शोक परिहारी,
भव्य प्रवीन सुर नर करते लहते वांछित सारी ॥ प्रभु जी.....
हम सब ध्यावें वांछित पावे शिव लहें महा सुखकार रे।
प्रभु.....नेमी स्वामी.....

चिन्तामणि श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती-1

तर्ज–हम सब उतारें तेरी आरती।

पारस प्रभु के चरण कमल की, आरति है सुखकार
मणिमय दीपक लेकर करते 2 आरती हम दुःख हार । हो ।
स्वामी जिनवर हो पारस प्यारे, वामा के राजदुलारे,
हम सब उतारें तेरी आरती, हो देवा हम सब उतारें तेरी आरती ॥
पारस प्रभु के.....

बैशाख कृष्ण द्वितीया काशी में, वामा ने उर धार,
विश्वसेन नृप के घर आये 2 त्रिभुवन मंगल कार।
हे स्वामी काशी के तुम हो स्वामी तुम ही हो अन्तर्यामी,
हम सब उतारें तेरी आरती हो देवा.....पारस प्रभु.....

पौष कृष्ण ग्यारस को जनमें, हर्षे इन्द्र अपार,
मेरु शिखर पर हरि ले जाकर 2 कीन्हा न्हवन संभार।
हो स्वामी इसी दिन तप को धारा, कमठ का मान विदारा,
हम सब उतारें तेरी आरती हो देवा.....पारस प्रभु.....

धरणेन्द्र और पद्मावती माँ ने नाग का छत्र लगाया,
चरण कमल की सेवा करके 2, पाप को दूर भगाया।

हो स्वामी संकट मिटाने, वाले वांछित दिलाने वाले,
हम सब उतारें तेरी आरती हो देवा.....पारस प्रभु.....
चैत्र कृष्ण चतुर्थी पाया प्रभु ने केवलज्ञान,
सावन सुदी सप्तमी पाया 2, श्री सम्मेद निर्वाण।
हे स्वामी चिन्तामणि कल्पतरु हो त्रिभुवन में आप गुरू हो,
हम सब उतारें तेरी आरती हो देवा.....पारस प्रभु.....
पाप ताप अरु रोक शोक भय हरते तुम्हीं "प्रवीन",
चरण शरण में हम सब आये 2, करो हमें स्वाधीन ॥
हो स्वामी सम्मेद वाले बाबा, तिखाल वाले बाबा,
हम सब उतारें तेरी आरती हो देवा.....पारस प्रभु.....

चिन्तामणि श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती-2

तर्ज–मेरा मन डोले तेरा तन डोले दिन का गया करार रे.....
चिंतामणि की, त्रिभुवन गुरु की, यह आरति शिवसुख काज रे,
आओ आज उतारें आरतिया। चिंतामणि की.....
रत्नथाल में मणिमय दीपक पाप तिमिर हर लाया।
आप रूप को लख के स्वामी सूरज भी शर्माया ॥प्रभु जी.....
आरति करके आरत हर के, भरें सुख के सब भंडार रे।
आओ आज उतारें आरतिया। चिंतामणि की.....
वैशाख कृष्ण द्वितीया काशी में, वामा ने उर धारा।
पौष कृष्ण ग्यारस काशी में, हो रही जय जयकारा ॥ प्रभु जी.....

सब इन्द्र चढ़े, मेरु पे करें, जिनन्हवन महा सुखकार रे।
आओ आज उतारें आरतिया ॥ चिंतामणि की.....
एक दिवस विश्वसेन के नंदन, वन में गज पे आये।
कमठ कुतपसी ने लक्कड़ में, नाग के युगल जलाये ॥प्रभु जी.....
नवकार दिया, कल्याण किया, हुए पद्मावति धरणेन्द्र जी।
आओ आज उतारें आरतिया ॥ चिंतामणि की.....
पौष कृष्ण ग्यारस को प्रभु ने, भेष दिगम्बर धारा।
चैत्र वदी की तिथि चतुर्थी लोकालोक निहारा ॥ प्रभू ने.....
ऊँकार ध्वनी, भव्यों ने सुनी, हुआ सब जग का कल्याण रे।
आओ आज उतारें आरतिया। चिंतामणि की.....
केवलज्ञान से पूर्व कमठ ने, घोर उपसर्ग किया था।
पद्मावती धरणेन्द्र ने आकर, नाग का छत्र दिया था प्रभू पर.....
सावन शुकला, सातें सुफला, हुआ श्री सम्मेद निर्वाण रे।
आओ आज उतारें आरतिया। चिंतामणि की.....
तिखाल वाले बाबा तुम हो, सहस्त्र फणा सुखकारी,
जम्बूद्वीप में आप विराजे, संकट मोचन कारी ॥ प्रभू जी.....
प्रवीन करें, आरति को धरें, वे वरें मुक्त श्री नारि रे ॥
आओ मिल के उतारें आरतिया। चिंतामणि की.....

महावीर भगवान की आरती-1

तर्ज–मेरा मन डोले तेरा मन डोले (नागिन)

त्रिसला सुत की त्रिभुवन पितु की यह आरती मंगलकार है
प्रभु आज उतारें आरतिया ॥

चरण कमल में वीर प्रभू के, नित शत इन्द्र हैं आते।
दिव्य रत्नमय दीपक लेके, जिनवर का यश गाते। प्रभु जी.....
महावीर वीर अतिवीर धीर प्रभु संमति वर्धमान जी ॥
प्रभु आज.....त्रिसला सुत की.....

काश्यप कुल के भूषण हो प्रभु सिद्धारथ नृप नंदन।
त्रिशला के उर आन पधारे आषाढ़ सुदी छठ वंदन-हो स्वामी
त्रिभुवन हर्षा रत्नन वर्षा सुर मिलकर करते आज रे ॥
प्रभु आज.....त्रिसला सुत की.....

धन्य हुई कुन्डलपुर नगरी धन्य हुये नरनारी,
धन्य चैत सित तेरस की तिथि, जन्में शिव सुखकारी-हो स्वामी
मेरू पे हुआ सुरपति ने किया जिन न्हवन महा सुखकार रे।
प्रभु आज.....त्रिसला सुत की.....

मगसिर वदी दशमी को प्रभु ने भेष दिगम्बर धारा।
वैशाख शुकलादशमी के दिन कैवल्य हुआ सुखकारा। हो स्वामी
तव दिव्य ध्वनी भव्यों ने सुनी हुआ जन-जन का कल्याण रे ॥
प्रभु आज.....त्रिसला सुत.....

कार्तिक कृष्ण अमावस्या में, पावापुर शिव पाये,
हुई दिवाली जग में सुन्दर, सबने दीप जलाये प्रभु जी.....
हम सब ध्यावें, आरति गावें, मन वांछित पावें आज रे,
प्रभु आज.....त्रिसला सुत.....

जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में कमल मंदिर के अन्दर,
माँ ज्ञानमती के कल्पतरु सम शोभित हैं नित जिनवर। हो स्वामी
प्रवीणचन्द्र आनन्द कन्द हो सबके कृपा निधान रे ॥
प्रभु आज.....त्रिसला सुत.....

भगवान महावीर स्वामी की आरती-2

तर्ज–जिया बेकरार है.....

महिमा अपार है सुख का जो आधार है,
महावीर भगवान का ये सच्चा दरबार है ॥
महिमा अपार है.....

कंचन मणिमय थाल सजाकर रतनन ज्योति जलायो जी 2,
मोह महातम हरने स्वामी आरति करने आयो जी 2।
प्रभु का जय जयकार है छाई ये बहार है,
महावीर भगवान का ये सच्चा दरबार है ॥
महिमा अपार है.....

घोर अंधिरिया जग में छाई ज्ञान बिना जग भटके हैं 2,
बिन दर्शन के तेरे स्वामी नयन हमारे तरसे हैं 2।
घोर अंधकार है प्रभु का ही आधार है,
महावीर भगवान का ये सच्चा दरबार है ॥
महिमा अपार है.....

भव समुद्र में नाव हमारी डगमग-डगमग करती है 2,
तूफां के साये में भगवन, याद तुम्हारी आती है 2।
टूटी पतवार है प्रभु का ही आधार है,
महावीर भगवान का ये सच्चा दरबार है ॥

महिमा अपार है.....

इस दुनिया से जी घबराया शरण तुम्हारी आये हैं 2,
तीन लोक की चतुर्गती में हमने बहुदुख पाये हैं 2।
नैय्या मंजधार है प्रभु का ही आधार है,
महावीर भगवान का ये सच्चा दरबार है ॥

महिमा अपार है.....

गणधर देवों की आरती

तर्ज–ॐ जय वर्धमान प्रभो....

ॐजय गणधर स्वामी, स्वामी जय गणधर स्वामी।
द्वादश गण से शोभित 2, चार ज्ञान धामी॥ॐ जय.....
तुम हो विघ्न विनाशक, गणपति गणधारी। स्वा०
हो गणेश गणनायक 2, ऋद्धि सिद्धि धारी ॥2॥ ॐ जय.....
जय गणराज गणेश्वर, दिव्य ध्वनी वेत्ता। स्वा०
समाधान के कर्ता 2, द्वादश गण नेता ॥3॥ ॐ जय.....
बिन गणधर के तीर्थंकर की, दिव्य ध्वनि न खिरे। स्वा०
जो सुन लेते वाणी 2, वे भव सिंधु तिरे ॥4॥ ॐ जय.....
समवशरण में दिव्य ध्वनी से, भवि जन तृप्त करो। स्वा०
चौसठ ऋद्धी धारी 2, विघ्न समस्त हरो ॥5॥ ॐ जय.....
एक तीर्थंकर के गणधर भी, एकाधिक माने। स्वा०
चौरासी प्रथमेश्वर 2, पांच वीर जाने ॥6॥ ॐ जय.....

सभी गणीश्वर चार ज्ञानधर, पुनि केवलज्ञानी। स्वा०
कर्मनष्ट कर शिवपुर, जाते गुणधामी ॥7॥ ॐ जय.....
श्री गणधर की मन वचतन से, आरति जो गावे। स्वा०
गणधर सम वे हो कर, शिवपुर को जावे ॥8॥ ॐ जय.....

जिनवाणी माता की आरती-1

तर्ज–ॐ जय महावीर प्रभो.....

ॐ जय जय जिनवाणी, माता जय जय जिनवाणी।
जिनवर मुख से प्रकटी 2, ॐकार वाणी ॥1॥
ॐ जय जय.....

बारह अंग चतुर्दश पूरब, चार अनुयोग कहे। माता.....
स्याद्वाद गुण भूषित 2, ज्ञानानंद बहे ॥2॥
ॐ जय जय.....

सात तत्त्व छह द्रव्य सहित जो, नव पदार्थ जाने। माता.....
सप्त भंग से शोभित 2, मिथ्यातम हाने ॥3॥
ॐ जय जय.....

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण की, तुम निर्मल धारा। माता.....
जन्म जरा मृत नाशक 2, तुम अमृत धारा ॥4॥
ॐ जय जय.....

भव भव रोग विनाशन कारण, सुरनर मुनि ध्याते। माता.....
प्रवीन करें जे आरति 2, वांछित शिव पाते ॥5॥
ॐ जय जय.....

श्री जिनवाणी माता की आरती-2

जिनवाणी माता की, ज्ञान प्रदाता की
प्रमुदित मन से आज उतारें हम आरतिया 2 ॥
जिनवाणी माता की.....

श्री जिनवर के मुख निकसी, गणधर के मुखकुंड ढरी,
आचार्यों ने विस्तारा, ग्रंथ रूप में भंडारा।
ॐकार रूपी की, सत्य स्वरूपी की,
प्रमुदित मन से आज उतारें हम आरतिया 2 ॥
जिनवाणी माता की.....

कोटि सूर्य शशि द्युति साजे, मुख मंडल दिव द्युति राजे,
वीणा पुस्तक कर धारें, मोह तिमिर अरि डर भाजे।
सुरनर मुनि ध्याते हैं, ध्यान लगाते हैं,
प्रमुदित मन से आज उतारें हम आरतिया 2 ॥
जिनवाणी माता की.....

सात तत्त्व छह द्रव्य खरे, नव पदार्थ का कथन करे,
मोक्ष मार्ग में धरती हैं, त्रिभुवन मंगल करती हैं।
त्रिभुवन की माता हैं, भाग्य विधाता हैं,
प्रमुदित मन से आज उतारें हम आरतिया 2 ॥
जिनवाणी माता की.....

दिव्य गर्जना सम वानी, निर अक्षर भवि कल्यानी,
सबकी समझ में आती हैं, समवशरण की रानी हैं।
यही तो मंगल हैं यही सर्वोत्तम हैं,
प्रमुदित मन से आज उतारें हम आरतिया 2 ॥
जिनवाणी माता की.....

मणिकंचन युत दीपक ले, सहस्त्र अष्ट युत नामों से,
आरति पूजन जो करते, चारों पुरुषारथ को वरते।
चार वेद अनुयोगों की, नय प्रमाण युत भंगों की,
प्रमुदित मन से आज उतारें हम आरतिया 2 ॥

जिनवाणी माता की.....

श्री चक्रेश्वरी माता की आरती

तर्ज–छम छम छम छम बाजे घुंघरू.....

झूम झूम झूम झूम आओ मिल के, चक्रेश्वरी माता जी की आरती करें।
आरती करें मिल मिल आरती करें, चक्रेश्वरी माता जी की आरती करें॥

झूम झूम.....

आदिनाथ जिन शासन देवी, सम्यक से युत जिनपद सेवी।
धर्म चक्र कर खड्ग विराजे, एक सहस अठ बाहु राजें ॥
आरती से अपने पाप सब हरें 2, चक्रेश्वरी माता जी की आरती करें ॥

झूम झूम.....

आदिनाथ जिन शीश विराजें, धर्म प्रभावन तत्पर राजें।
जिन भक्तों की रक्षा करतीं, उनके सब संकट मां हरतीं ॥
हम भी अपने संकट सब हरें 2, चक्रेश्वरी माता जी की आरती करें ॥

झूम झूम.....

श्री अकलंक मुनि ध्यान में बुलाया, बोद्धों का मान हरा मुनि को जिताया।
मानतुंग मुनि भक्तामर बनाया तालों बेड़ियों को तोड़ गिराया॥
हम भी ऐसी भावना करें 2, चक्रेश्वरी माता जी की आरती करें ॥

झूम झूम.....

अतिशय क्षेत्र रानीला नगरी, माता जहाँ पर आय विराजीं।
सब दुख हरणी मंगल करणी, रोग शोक भूतादिक हरणी ॥
मंगलमय हम आरती करें 2, चक्रेश्वरी माता जी की आरती करें ॥

झूम झूम.....

पद्मावती माताजी की आरती

तर्ज–ॐ जय महावीर प्रभो.....

ॐ जय पद्मावती मां, माता जय पद्मावती मां।
मंगल करणी सब दुख हरणी 2, जय जगदम्बे मां ॥1॥

ॐ जय पद्मावती मां.....

पार्श्वनाथ जिनशासन देवी, सब संकट हर्ता। माता.....
सम्यग्दर्शन सेवी 2, सब सुख की कर्ता ॥2॥

ॐ जय पद्मावती मां.....

पारस प्रभु के मुख से तुमने, मंत्र नवकार सुना। माता.....
पद्मावती धरणेन्द्र बने तब, विघ्न का नाश किया ॥3॥

ॐ जय पद्मावती मां.....

रोग शोक दुख दारिद्र नाशों, भूत प्रेत बाधा। माता.....
धन संपति सुत दाता 2, सब वांछित साधा ॥4॥

ॐ जय पद्मावती मां.....

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भवानी, अतुल शक्तिधारी। माता.....
वत्सल धर्म प्रभावन 2, भक्त के दुख हारी ॥5॥

ॐ जय पद्मावती मां.....

एक शतक और अष्ट नाम युत जो आरति गावे। माता.....
सब विधि मंगल दायक 2, चिंतित फल पावे ॥6॥

ॐ जय पद्मावती मां.....

क्षेत्रपाल बाबा की आरती

तर्ज–ॐ जय महावीर प्रभो.....

ॐ जय क्षेत्रपाल देवा, स्वामी जय मानभद्र देवा।
विजय मणी वीर भैरव 2, अपराजित देवा ॥1॥
ॐ जय क्षेत्रपाल देवा.....

स्वर्ण रतन मय मुकुट शीश पे, कर में शस्त्र धरें। देवा
सम्यक दर्शन सेवी 2, संकट शीघ्र हरें ॥2॥
ॐ जय क्षेत्रपाल देवा.....

मुक्ति बल्लभा पति जिनवर के, चरण कमल सेवी। देवा.....
धर्म प्रभावन तत्पर 2, वत्सल गुण ये भी ॥3॥
ॐ जय क्षेत्रपाल देवा.....

देव शास्त्र गुरु आयतनों के, रक्षक हैं देवा। देवा.....
रोग शोक भय नाशक, मंगल कर देवा ॥4॥
ॐ जय क्षेत्रपाल देवा.....

भूत प्रेत दुख दारिद्र नाशो, सब वांछित पूरो। देवा.....
धन सुत संपति देकर 2, सकल सौख्य पूरो ॥5॥
ॐ जय क्षेत्रपाल देवा.....

जे प्रवीन जन क्षेत्रपाल की, आरति को गावे। देवा.....
परम कृपाला दीनदयाला 2, चिंतित फल पावे ॥6॥
ॐ जय क्षेत्रपाल देवा.....

श्री पंचमेरु नंदीश्वर जिनालय पूजा

स्थापना-शंभुछंद-हे वीर तुम्हारे द्वारे पे.....

हैं ढाई द्वीप में पांच मेरु, उनमें अस्सी जिनआलय हैं,
नंदीश्वर द्वीप आठवें में, बावन जिनवर के आलय हैं।
इक सौ बत्तिस जिन मंदिर की बिम्बों की पूजा करते हैं,
आवाहनादि करके रुचि से, जिनवर की इज्जा करते है।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु नंदीश्वर द्वीपस्थ एकशतद्वात्रिंशत् जिनमंदिर-जिनबिम्ब समूह अत्र अवतर अवतर सम्वौषट्।

ॐ ह्रीं पंचमेरु नंदीश्वर द्वीपस्थ एकशत्द्वात्रिंशत् जिनमंदिर जिनबिम्ब समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ:

ॐ ह्रीं पंचमेरु नंदीश्वर द्वीपस्थ एकशत्द्वात्रिंशत् जिनमंदिर जिबिम्ब समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं स्थापनम्।

द्रव्यभावाष्टक-शम्भुछंद

नंदीश्वर द्वीपवापियों का, क्षीरोदधिजल ले हेमकलश,
त्रयधारा जिनवर चरणों में, हर लेती जनम जनम कालुश।
श्री पंचमेरु नंदीश्वर में, जिन मंदिर जिनवर प्रतिमायें,
जो अनादि निधन शास्वत सच में, पूजक को बांछित दिलवायें।।1।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु नंदीश्वर द्वीपस्थ एकशत्द्वात्रिंशत् जिनमंदिर जिनबिम्बेभ्यो नम: जन्म जरा मृत्यु निवारणाय जलंनिर्वपामीतिस्वाहा।

मिथ्यात्व मोह रागादि द्वेष, कोधादिक ताप जलाते हैं,
इनसे निपटारा पाने को, मलयागिर चंदन लाते हैं।
श्री पंचमेरु नंदीश्वर में, जिनमंदिर जिनवर प्रतिमायें,
जो अनादि निधन शास्वत सच में पूजक को बांछित दिलवायें।।2।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु नंदीश्वर द्वीपस्थ एकशत्द्वात्रिंशत् जिनमंदिर जिनबिम्बेभ्यो नम: संसार ताप निवारणाय चंदनं निर्वपामीतिस्वाहा।

इस जग में अक्षयनाथ आप, सब जग में नाशवान सारे,
प्रभु गुण निजमंडित करने को, अक्षत से पूजूं पद थारे।।3।।
श्री पंचमेरु नंदीश्वर.....

ॐ ह्रीं पंचमेरु नंदीश्वर द्वीपस्थ एकशत्द्वात्रिंशत् जिनमंदिर जिनबिम्बेभ्यो नमः अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीतिस्वाहा।

चतुः संज्ञा लगी अनादी से, जो जन्म मरण करवाती है,
पुष्पांजलि जिनवर पूजा से प्रभुभक्त पास न आती है।।4।।
श्री पंचमेरु नंदीश्वर.....

ॐ ह्रीं पंचमेरु नंदीश्वर द्वीपस्थ एकशत्द्वात्रिंशत् जिनमंदिर जिनबिम्बेभ्यो नमः कामवाण विध्न शांतकराय पुष्पं निर्वपामीतिस्वाहा।

है क्षुधावेदनी रोगलगा इनसे पीड़ित तिंहुँ जग प्रानी,
षड्रस व्यंजन जिन पूजा से, हो जाते तृप्त सदा प्रानी।।5।।
श्री पंचमेरु नंदीश्वर.....

ॐ ह्रीं पंचमेरु नंदीश्वर द्वीपस्थ एकशत्द्वात्रिंशत् जिनमंदिर जिनबिम्बेभ्यो नमः क्षुधा रोग विनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

जिनगृह में जिनवर प्रतिमायें, कोटी भास्कर शशि तेज हरें।
रत्नों के दीप से जिन आरति, सब मोह तिमिर का नाश करें।।6।।
श्री पंचमेरु नंदीश्वर.....

ॐ ह्रीं पंचमेरु नंदीश्वर द्वीपस्थ एकशत्द्वात्रिंशत् जिनमंदिर जिनबिम्बेभ्यो नमः मिथ्या तिमिर विनाशाय दीपं निर्वपामीतिस्वाहा।

ज्यो धूप घड़ो से धूम उड़े, दश दिशि सुगंधि महकाती है।
त्यों जिनवर सन्निध धूपजला, आतम निज गंधो पाती है।।7।।
श्री पंचमेरु नंदीश्वर.....

ॐ ह्रीं पंचमेरु नंदीश्वर द्वीपस्थ एकशत्द्वात्रिंशत् जिनमंदिर जिनबिम्बेभ्यो नमः कर्माष्ट विनाशाय धूपं निर्वपामीतिस्वाहा।

षड्ऋतु के जिनवृषकल्पतरू, फल भक्तिभाव से ले आया।
बसुवी बसुधा फल पाने को, मै चरण कमल में हूँ आया।।
श्री पंचमेरु नंदीश्वर.....

ॐ ह्रीं पंचमेरु नंदीश्वर द्वीपस्थ एकशतद्वात्रिंशत् जिनमंदिर जिनबिम्बेभ्यो नमः मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीतिस्वाहा।

तोय गंध तंदुल सुम चरुवर द्वीप धूप फल अर्घ किया।
निज पद अनर्घ पाने हेतू जिन चरण कमल में चढ़ा दिया।।
श्री पंचमेरु नंदीश्वर.....

ॐ ह्रीं पंचमेरु नंदीश्वर द्वीपस्थ एकशतद्वात्रिंशत् जिनमंदिर जिनबिम्बेभ्यो नमः अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

जिनगुणमाला

दोहा-ढाई द्वीप में मेरु पन, अस्सी जिनवर धाम।
नंदीश्वर बाबन कहे, शास्वत जिनगृह धाम।।1।।

-शंभुछंद-

मधिलोक में जम्बूद्वीप प्रथम, वहाँ मेरु सुदर्शन राजे है,
इसकी भू पर है भद्रसाल, वन चार जिनालय राजे हैं।
हैं पांच शतक योजन ऊपर नंदनवन चार जिनालय युत,
साड़े बासठ हजार उपरि सौमनस वन चतु जिनगृह संयुत।।2।।
छत्तीस सहस योजन ऊपर पांडुकवन जिनगृह है चहुं दिश,
सुरन्हवन करें तीर्थंकर का, हैं पांडुशिलायें चार विदिश।
दुजे घातकी द्वीप के पूरब में, विजय मेरु अति सुन्दर है,
पश्चिम में अचल मेरु तीजा, पुष्कर पूरब चतु मंदर है।।3।।
पश्चिम विद्युन्न माली पंचम, ये पांचों मेरु बखाने हैं,
इक लख योजन ऊंचा पहला, अन चौरासी सहस बखाने है।
चारों मेरु भू भद्रशाल, हैं 'पांच शतक पर नंदन वन,
सौमनस साड़े पचपन सहस, अट्ठाइस सहस पे पांडुकवन।।4।।
पांचों मेरु के चतुवन में, चतु दिश में जिनवर गृह माने,
इन अस्सी जिनगृह प्रतिगृह में जिनबिम्ब एक सौ अठमाने।

प्रत्येक मेरु पांडुक वन की, विदिशाओं में हैं पांडुशिला,
सुरन्हवन करें तीर्थंकर का, अतएव तीर्थ युत मेरु भला।।5।।
है द्वीप आठवां नंदीश्वर, बाबन शास्वत जिनगृह ठाने,
मुनि मनुज विद्याधर जा न सकें, अतऐव यहीं पूजन इनें।
ये इक सौ त्रिसठकोटि चुरासी, लाख महायोजन विस्तरित,
ये एक दिशी विस्तार कहा, चहुंदिश में चार गुना विस्तरित।।6।।
इस द्वीप में चहुंदिश अंजनगिरि, चौरासी सहस है इकदिश में,
इस लख योजन जल से युक्ता, चतु बाबड़ियां इन चहुं दिश में।
हैं कानन चारों दिशा चार, जो एक लाख योजन वाले,
बाबड़ियों में दधिमुख पर्वत, सोलह हजार योजन वाले।।7।।
बाबड़ियों के दो कौन माहिं, दो रतिकर पर्वत भाते हैं,
बत्तीस सहस योजन विस्तरित, जिनगृह से शोभा पाते हैं।
इक दिश अंजन गिरि दधिमुख चउ, नग रतिकर आठ बखाने है,
इन तेरह नगों पर जिन मंदिर, तेरह ही शास्वत माने है।।8।।
नग ढोल समान हैं गोल कहे ऊपर तल सुन्दर भास रहे,
इक दिश में तेरह जिनमंदिर, चहुं दिश में बाबन भास रहे।
प्रतिमंदिर एक सौ आठ बिम्ब, पद्मासन पांच शतक ऊँचें,
कोटी रविशशि के तेज वहाँ, पड़ जाते हैं बिल्कुल फीके।।9।।
जिन प्रतिमा सुरमन मोह रहीं, हंस रहीं मानों वे बोल रहीं,
दर्शक आराधक पूजक के, बैराग्य भाव वे जगा रहीं।
आषाड़ फाल्गुन कार्तिक के शुक्ला के अंतिम आठ दिना,
पूजा करते नंदीश्वर में, सुर रात्रि औ दिन के भेद बिना।।10।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु नंदीश्वर द्वीपस्थ एक शतद्वात्रिंशत् जिनमंदिर जिनबिम्बेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामितिस्वाहा।

दोहा-जिन प्रतिमा जिन सारखी, जिन पूजा बलबान।
जिन पूजा सब सुख मिले, कर देती भगवान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि। क्षेपेत्।

बड़े विधानों में पालने योग्य आवश्यक नियम

नोट–विधान के प्रारम्भ से लेकर हवन पर्यंत कुछ नियमों का पालन किया जाता है। विधान सकलीकरण से प्रारम्भ माना जाता है। इसमें निम्न नियमों का पालन करना चाहिए–

1. विधान पर्यंत–अखंड ब्रह्मचर्य व्रत का पालन।
2. मद्य मांस मधु एवं पंच उदम्बर फलों का त्याग। (जीवन पर्यंत)
3. जमीकंद का त्याग।
4. बीड़ी, सिगरेट, पान, तम्बाकू, गुटका एवं समस्त नशीली वस्तुओं का त्याग।
5. चमड़ा तथा चमड़े से बनी वस्तुओं एवं चर्बी से बनी वस्तुओं का त्याग।
6. महिलाओं के लिये लिपिस्टिक एवं निल पालिश का त्याग।
7. विकथाओं, वाद-विवादों तथा क्रोध, मान, माया, लोभ चार कषायों का यथा शक्ति त्याग।
8. एक बार शुद्ध भोजन, एक बार फलाहार, दो या तीन बार दिन में औषधि दवाई वास्ते, अत्याधिक आवश्यकता पड़ने पर पानी की छूट तथा रात्रि में चतुराहार (खाद्य, स्वाद्य, लेह पेय) का त्याग। समय को देखते हुए चाय की छूट दी जा सकती है लेकिन यह चाय अलग से न लेकर भोजन करते समय पहले या बाद में भोजन के स्थान पर बैठ कर ही लेनी चाहिए।
9. पचास या सौ किलोमीटर तक आने जाने की मर्यादा ले सकते हैं यदि बहुत ही आपात काल हो तभी इसका उपयोग करना चाहिये।
10. नाई से दाढ़ी या हजामत का त्याग।
11. भोजन मौन पूर्वक करना चाहिए।
12. बान से बनी हुई खाट का त्याग। जमीन, तखत एवं फोल्डिंग पलंग का उपयोग कर सकते हैं।
13. ऊनी वस्त्रों का त्याग।

बड़े विधानों में ध्यान योग्य बातें

1. इन्द्र और इन्द्राणियों के वस्त्र पीले (केशरिया) एक समान होने चाहिये।
2. विधानों में पूजा के समय सभी इन्द्र इन्द्राणियों को मुकुट अवश्य लगाना चाहिए एवं माला पहनना चाहिए।
3. इन्द्र इन्द्राणियों को पूजन के वस्त्र पहने हुए किसी अन्य वस्तु जैसे–दरी शमियाना या जो श्रावक पूजन में कंकन बांध कर नहीं बैठे हैं उनका स्पर्श नहीं करना चाहिए।
4. जो इन्द्र इन्द्राणियां पूजन के वस्त्र घर से पहन कर आते हैं उन्हें जूते, चप्पल चाहे वो प्लास्टिक या रबड़ के ही क्यों न हो पहन कर नहीं आना चाहिए।
5. पूजन की वस्तुयें, पूजन की थाली जिनवाणी पुस्तकें आदि जमीन पर न रख कर पाटे चौकी आदि पर रखना चाहिए।
6. पूजन वाले इन्द्र, इन्द्राणियों के साथ बिना पूजन वाले दर्शक आदि परिक्रमा नहीं करें।
7. हवन के समय पुरुष पूजन का धोती दुपट्टा तथा महिलायें, बालिकायें केशरिया साड़ी पहनकर हवन में शामिल हो, पेंट, शर्ट, पायजामा, सूट आदि में नहीं।
8. हवन के समय काले, नीले वस्त्र पहन कर नहीं आवें।
9. हवन की आहुति हवन कुंड में प्रज्वलित अग्नि में धूप और घी से आगमोक्त विधि से पूर्ण श्रद्धान के साथ करें। पीले चावल से थाली में हवन की क्रिया न करें।
10. प्रतिदिन विसर्जन से पहले विधान की आरती करें।
11. स्थापना के चावल अथवा लोंग अग्नि में न जला कर चढ़ी हुई थाली में मिला दें।
12. विधान के समय मंदिर जी में किसी भी प्रकार का विवाद करने से बचें।

13. पूजन की दो लाइनें संगीतकार तथा दो लाइनें सभी को मिलाकर बोलना चाहिए। मंत्र विधानाचार्य को ही बोलने देना चाहिए।
14. पूजन के द्रव्य चढ़ाते समय सभी को स्वाहा जोर से तेज आवाज में बोलना चाहिए।
15. पूजन करते समय सोना नहीं चाहिए।
16. पूजन के बीच-बीच में नृत्य भक्ति करते रहना चाहिए।
17. जो महानुभाव कंकण बांधकर विधान में बैठे हैं वे प्रथम दिन से विधान पर्यंत पूजन एवं जाप्यानुष्ठान में एक ही स्थान पर बैठें प्रतिदिन स्थान बदले नहीं।
18. नृत्य करते समय भगवान के सामने पीठ न करें तथा पूजन सामग्री न गिरे इसका ध्यान रखें।
19. पूजन में घी के दीपक अवश्य जलावें तथा उनके ऊपर चिमनी रखें तथा धूपदान में धूप खेंय। जलती हुई तीली धूपदान में डाल दें अपने वस्त्रों की सुरक्षा का ध्यान रखें।
20. शास्त्र प्रवचन के समय बीच में उठकर न जावें इससे जिनवाणी का अविनय होता है।
21. पूजा में बैठने वाले इन्द्र इन्द्राणियों का आरती में सम्मिलित होना अनिवार्य है।
22. मंदिर में कभी भी काले वस्त्र पहनकर दर्शनपूजन ना करें ये शोक का प्रतीक माने जाते हैं।

...ड़ पांच हजार वर्ष का श्री सिद्धचक्र कले...

...र्ष शतक सूची

	१००	२००	३००
४००	५००	६००	७००
८००	९००	१०००	११००
१२००	१३००	१४००	१५००
१६००	१७००	१८००	१९००
२०००	२१००	२२००	२३००
२४००	२५००	२६००	२७००
२८००	२९००	३०००	३१००
३२००	३३००	३४००	३५००
३६००	३७००	३८००	३९००
४०००	४१००	४२००	४३००
४४००	४५००	४६००	४७००
४८००	४९००	५०००	५१००
५२००	५३००	५४००	५५००

...क ...सूची

५६	८४	ॐ	अर्हं	उसा	म
५७	८५	म:	ह्रीं	असिआउ	न
५८	८६	ह्रीं	म	अर्हं	उसा
५९	८७	उसा	म:	असिआउ	असिआउ
६०	८८	ॐ	उसा	म:	ह्रीं
६१	८९	ह्रीं	असिआउ	न	ॐ
६२	९०	उसा	अर्हं	उसा	म:
६३	९१	म:	ह्रीं	असिआउ	न
६४	९२	उसा	म:	ह्रीं	असिआउ
६५	९३	असिआउ	न	ॐ	अर्हं
६६	९४	अर्हं	उसा	म:	ह्रीं
६७	९५	ह्रीं	असिआउ	न	ॐ
६८	९६	म:	ह्रीं	असिआउ	न
६९	९७	न	ॐ	अर्हं	उसा
७०	९८	उसा	म:	ह्रीं	असिआउ
७१	९९	असिआउ	न	ॐ	अर्हं
७२	卐	ह्रीं	असिआउ	न	म
७३	卐	ॐ	अर्हं	उसा	म:
७४	卐	म:	ह्रीं	असिआउ	न
७५	卐	न	ॐ	अर्हं	उसा
७६	卐	असिआउ	न	ॐ	अर्हं
७७	卐	अर्हं	उसा	म:	ह्रीं
७८	卐	ॐ	असिआउ	न	ॐ
७९	卐	न	अर्हं	उसा	म:
८०	卐	उसा	ॐ	अर्हं	उसा
८१	卐	असिआउ	म:	ह्रीं	असिआउ
८२	卐	अर्हं	न	ॐ	अर्हं
८३	卐	न	अर्हं	म:	ह्रीं

माह अक्षरांक सूची

	१	२	३	४	५	६
जनवरी अक्टूबर	ॐ	ह्रीं	अर्हं	असिआउ	उसा	न
फरवरी मार्च नवम्बर	असिआउ	उसा	न	म:	ॐ	ह्रीं
अप्रैल जनवरी जुलाई	म	ॐ	ह्रीं	अर्हं	असिआउ	उसा
मई	ह्रीं	अर्हं	असिआउ	उसा	न	म:
जून	उसा	न	म	ॐ	ह्रीं	अर्हं
अगस्त फरवरी	अर्हं	असिआउ	उसा	न	म:	ॐ
सितम्बर दिसम्बर	न	म:	ॐ	ह्रीं	अर्हं	असिआ...

दिनांक दैनिक वार सूची—

					१	२	३	४	५
१	८	१५	२२	२९	रवि	शनि	शुक्र	गुरु	बुध
२	९	१६	२३	३०	सोम	रवि	शनि	शुक्र	गुरु
३	१०	१७	२४	३१	मंगल	सोम	रवि	शनि	शुक्र
४	११	१८	२५	卐	बुध	मंगल	सोम	रवि	शनि
५	१२	१९	२६	卐	गुरु	बुध	मंगल	सोम	रवि
६	१३	२०	२७	卐	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम
७	१४	२१	२८	卐	शनि	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल

कलेन्डर देखने की विधि

१. जिस वर्ष के जिस महीने की तारीख का दिन देख... वर्षशतक सूची मे सन् देखें सन् के शेष अंकों को वर्षांक अ... सूची में देखकर पता लगायें सन् और अंक वाले कालम ... अक्षर हैं इन अक्षरों को इष्ट महीने वाले कालम में मिलाये ... मिले इसके नीचे दिनांक दैनिक वार सूची में इष्ट तारीख के ... मिलाये गये अक्षरांक के नीचे देखकर दिन ज्ञात कर लें।

२. लीपइयर वर्षों में जनवरी फरवरी रेखांकित ... देखें। उदाहरण—जैसे—२६ जनवरी १९५० का दिन ज्ञात ... है तो सर्व प्रथम वर्षशतक सूची में १९०० सन देखा अंतिम ... की पांचवी लाइन में है वर्षांक अक्षरांक सूची में सन ५० ... कालम के २२ वीं लाइन में है इसके अंतिम कालम में ॐ ... ...रांक सूची में जनवरी पहली लाइन में आया है इसमें ॐ अक्षर पहले कालम की पहली लाइन ... दैनिक वार की सूची में २६ तारीख ५ वीं लाइन के चौथे कालम में है इसके सामने पहले काल... है अत: १९५० की २६ जनवरी को गुरुवार था।